TC/RAJ/RAJ/00095

अपरंच

राजस्थानी भासा अर साहित्य री तिमाही

जुलाई-सितम्बर 2014

सलाहकार मंडल

मोहन आलोक, गंगानगर

नंद भारद्वाज, जयपुर

डॉ. आईदान सिंह भाटी, जैसलमेर

ओम पुरोहित 'कागद', हनुमानगढ़

डॉ. नीरज दइया, बीकानेर

प्रधान संपादक

पारस अरोड़ा

संपादक

गौतम अरोड़ा

संपादन सैयोग

शंकरसिंह राजपुरोहित, बीकानेर

डॉ. मदन गोपाल लढ़ा, महाजन

प्रह्लाद राय पारीक, हनुमानगढ़

गौरीशंकर, जोधपुर

ओम नागर, कोटा

मुखौळ : **कु. दुर्गा राठौड़** जयपुर

रेखाचित्र : **किरण राजपुरोहित 'नितिला'** जोधपुर

अंतरजाळ अंक संचालक : **डॉ. नीरज दइया** बीकानेर

टाइप सैटिंग

भंडारी ऑफसेट जोधपुर

साज सज्जा : **रमेश व्यास** जोधपुर

सगळा पद अवैतनिक

सदस्यता

अेक अंक रौ मोल : 30 रिपिया

अेक बरस रौ मोल : 100 रिपिया

तीन बरस रौ मोल : 250 रिपिया

आजीवन : 1100 रिपिया

प्रकासक

अपरंच प्रकासण

A-360, **सरस्वती नगर, बासनी, जोधपुर 342 005 (राज.)**

दूरभास : 0291-2720796, 7877982810, 9413961800

e-mail : apranchrajasthani@gmail.com

web : www.apranch.wordpress.com

विगत

❑संपादक री बात

साहित्यिक आतंकवाद सूं सावचेती	*गौतम अरोड़ा*	3

❑पंचामरत

कीं गजलां, मनचायी मौत	*सत्येन जोशी*	5
तीन गीत, गजल	*मोहम्मद सदीक*	9
रांमतिया मत तोड़, फूल फूल रौ मोल, कुण कुण नै बिलमासी, मूळ कठै अर डाळ कठै	*कल्याणसिंह राजावत*	13
झूंठौ बणज, उतरी चांदणी, बसंत कै दिन म्हारौ भोळौ जीवड़ौ	*प्रेमजी प्रेम*	17
कोसां दूरी नींद, उड जाऊंगी री मां!, पाणी में चांद घुळै छै, बड़ रे बड़, गोरी गोरी गजबण	*दुर्गादान सिंह गौड़*	21

❑कहाणी

उस्ताद	*अरविंद सिंह आशिया*	25
तूटती लीकां	*हरदान हर्ष*	30
अंधारौ	*रीना मेनारिया*	37

❑अेकल काव्य-पाठ

पाछौ कुण आसी...., बीरबल री खीचड़ी है कविता, ना मांगजै इण पेटै कोई हिसाब, म्हैं उडीकूं कविता	*नीरज दइया*	40

❑व्यंग

सतजुगी नेता रौ कळजुगी रूप	*डॉ. मनोहरलाल गोयल*	45

❑काव्य-गोस्ठी

धंधूणी लगा भाया!, अणथंभियौ आकास	*शिवराज छंगाणी*	47
अबखापणौ	*डॉ. विनोद सोमानी 'हंस'*	48
म्हारौ गांव	*हरमन चौहान*	49
छाजळौ	*मुकुट मणिराज*	50

❑गजल

अेक गजल	*डॉ. पुरुषोत्तम छंगाणी*	51
अेक गजल	*पवन पहाड़िया*	51
दो गजलां	*सुमन बिस्सा*	52

❑कीं हाइकु

पांच हाइकु	*डॉ. गोवर्धन शर्मा*	53

❑लघुकथावां

अवतार	*राजेश अरोड़ा*	54
मौत रौ डर	*डॉ. सत्यानारायण शांडिल्य 'सत्य'*	55

❑पोथी-परख

आत्मकथात्मक खुणा-खचुणा नै परसती कहाणियां	*नीरज दइया*	56
मूंघी वैश्विक कहाणियां	*डॉ. आईदानसिंह भाटी*	61
कीं बातां कीं यादां	*सत्यनारायण इंदौरिया 'सत्य'*	63
रसूल हमजातोज अर विदेसी कवितावां	*रामसिंह राठौड़*	66
❑रपट/समाचार	*गौरीशंकर कुलचन्द्र*	70
❑आपरा कागदा सूं		72

संपादक री बात

साहित्यिक आतंकवाद सूं सावचेती

साहित्य 'सत' रौ नांव है। 'सत', उणरा तत्त्व, उणरा रूप, उणरौ महत्त्व अर प्रभाव बगत साथै बदळतौ रैवै। अेक बात इण सगळै कथ मांय जुगोजुग सूं थिर है अर वा आ है कै औ सत पढणियां रै सोचण, समझण अर विरोळ री खिमता मांय बधापो करै अर उणनैं निरणै लेवण री अेक लांबी प्रक्रिया कांनी बधावै। आ बात अलग है कै पढणियौ कांई पढै अर साहित्य रौ किसौ रूप उण तांई किणरै मारफत पूगै।

साहित्य भासा सूं मुगत है। भासा साहित्य रै रचाव रौ माध्यम-भर है। इण सारू अेक समाज अर सभ्यता रौ साहित्य चायै वौ किणी भासा मांय है, अेक दूजै सूं जुड़ियोड़ौ व्है अर मेळ खावै। इणी दिस जद आगै बध'र उत्तर आधुनिक जुग री बात करां तौ उत्तर आधुनिकता दुनिया-भर रै साहित्य माथै आपरौ प्रभाव छोड्यौ है, पण अलग-अलग समाज अर संस्कृति मांय आ विगसाव रै अलग-अलग दौर मांय है। अठै अैड़ौ लखावै कै उत्तर आधुनिकता रै प्रभाव समचै आज रौ साहित्य धारावां, प्रवृत्तियां, जुड़ाव अर आंदोलनात्मक दीठ सूं मुगत व्है रैयौ है, पण अैड़ौ है नीं। नुंवौ साहित्य चायै वौ गद्य व्हौ कै पद्य, आज रै समाज री झीणी सूं झीणी संवेदना नै परोट'र जन रै घणौ नैड़ौ है, उणरी पैठ अर पकड़, निरणै लेवण री जिण प्रक्रिया री म्हैं ऊपर बात करी, बठै बची है।

जद आपां देस अर दुनिया रै बदळाव, सामाजिक अर राजनीतिक हालात अर चेतना नै विरोळां अर कथित बदळाव नै कुचरां तौ ऊपर कैयोड़ी बात रा प्रमांण सांमी आय जावै। बदळाव रौ औ दौर बाजारवादी है, मतळब कै जिकौ दिखै- वौ बिकै। कांई दिखै, औ कुण तै करै? बाजार?, राजनीति?, समाज? कै साहित्यकार? कांई मीडिया साहित्य नै 'रिप्लेस' कर रैयौ है कै मीडिया ई साहित्य रौ रूप है? सोशल मीडिया माथै साहित्य किण रूप अर कठै है? कांई 'ई-पत्रिकावां' आवण वाळै जुग मांय साहित्य अर जन रै बिचाळै संवाद रौ सबळौ अर महताऊ माध्यम बण'र निरणै लेवण री इण प्रक्रिया रौ हिस्सौ बण सकैला?

अै सगळा सवाल घणा महताऊ है अर सिरजणकर्ता अर लिखारां, खास करनै पत्र-पत्रिकावां रै संपादकां नै आं सवालां नै समझ'र वांरा पडूत्तर मुजब निरणै री इण प्रक्रिया मांय खुद नै अेकर पाछौ थापित करणौ है, पण क्यूं?

लारलै दिनां आई.बी. री अेक रपट रै मारफत अेक नुंवौ सबद सांमी आयौ (सांच-झूठ कुण जाणै?)। अठै आ समझण री दरकार है कै 'अेन.जी.ओ.' समाज रै सै सूं निचलै तबकै अर सै सूं झीणी संवेदना तांई आपरी पकड़ राखै अर वा संवेदना है 'भूख अर वजूद'- खुद रै व्हैवण अर राखण रौ संघर्स।

नुंवी पीढी रौ आदमी आपरै बालपणै मांय साहित्य सूं पैली (केई बार छैली) बार खुद री स्कूली पोथियां रै मारफत मिळै। कोई क्रांति कै संचार क्रांति आवौ, साहित्य रौ औ रूप आज ई थिर अर महताऊ है अर भारत जैड़ा देस मांय भी अेक बडै हिस्सै तांई पूगै। साहित्यकार नै इणनै विरोळण री दरकार है। सामाजिक चेतना री सही दिसा सारू अठै 'सत' जरूरी है। अठै जबरी उथळ-पुथळ अर छेड़खानी है।

'मीडिया' रौ साहित्य नै औ 'रिप्लेसमेंट' अर साहित्य रै सै सूं 'प्राइमरी' रूप सागै आ छेड़छाड़ साहित्यिक आतंकवाद कांनी इसारौ करै। ऊपर मंड्योड़ा सवालां रौ पडूत्तर जद इण दीठ सूं जोवां तौ साहित्यिक आतंकवाद अर उणरा खतरा मत्तैई चवड़ा व्है। अजै औ सै कीं घणौ बधैला। नुंवै लिखारां माथै इणसूं सावचेत रैय'र आवणवाळी पीढी नै इणसूं बचावण री महताऊ जिम्मैवारी है।

अबै बात अपरंच री, पत्रिका अेक नुंवै रूप आपरै सांमी है। बगत अर जरूरत मुजब केई बदळाव आपनै अठै भी दिखैला अर आस करूं कै आपनै दाय आवैला। सरकारी नियमां मुजब औ अपरंच रौ पैलौ अंक है, पण पुराणी जोड़ लगोलग सागै है। आगला दोय अंक अक्टूबर-दिसंबर '14 'बीकानेर अंक' अर जनवरी-मार्च '15 'महिला विसेसांक' होवैला, जिणरा मिजमान संपादक श्री नीरज दइया (बीकानेर) अर श्रीमती सुमन बिस्सा (जोधपुर) है। आपरी टाळवीं रचनावां आं अंकां री जरूरत मुजब वां तांई पुगावौ। लारलौ अंक कीं पाठकां तांई डाक री गलती रै कारण नीं पूग्यौ, इण सारू माफी चावूं। आभार सागै,

-गौतम अरोड़ा

अपरंच रा आगला दो विसेसांक

बीकानेर विसेसांक	***महिला विसेसांक***
(अक्टूबर-दिसंबर 2014)	(जनवरी-मार्च 2015)
मिजमान संपादक : डॉ. नीरज दइया	मिजमान संपादक : डॉ. सुमन बिस्सा
सी-107, वल्लभ गार्डन, पवनपुरी	314-सी, तीसरी डी रोड, सरदारपुरा
बीकानेर-334003 (राजस्थान)	जोधपुर (राजस्थान) 342001
मोबाईल नं. 9461375668	मोबाईल नं. 9414215128

राजस्थानी रचनाकारां सूं अरज है कै आं विसेसांक सारू ऊपर लिख्या पता माथै मिजमान संपादकां नै **आपरी टाळवीं रचनावा** *सीधी भिजवावौ।*

● *पंचामरत : अेक*

सत्येन जोशी

गद्य अर पद्य रा सफळ रचनाकार सत्येन जोशी रौ जलम 2 अक्टूबर 1934 नै जोधपुर में हुयौ। अेम.अे. तांई भणियोड़ा। वांरी कलम आज रै जीवण री विसमतावां, जरूरतां अर खामियां रै साथै ई अंतस में केई सवालां रा उत्तर मांगै। जीवण रै प्रति आस्था अर बिस्वास जगावै। वांरी पद्य री पोथियां में 'हंस करै निगराणी' अर 'फेर ऊगैला सूरज' रै अलावा काव्य नाटक 'मुगती बंधण' अर गजल-संग्रै 'बंतळ' ई चावी हुई। आं रै अलावा गद्य में 'रोवणिया दा'सा (रेखाचित्र), 'कंवळ पूजा' (अैतिहासिक उपन्यास) गिणावण जोग है। राज. प्रचारिणी सभा, कलकत्ता अर मारवाड़ी सम्मेलन, मुंबई सूं आपनै 'कंवळ पूजा' माथै पुरस्कार मिल्या। 'मुगती बंधण' नै राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर सूं पुरस्कार मिल्यौ। 'फेर ऊगैला सूरज' नै राजस्थानी भाषा, साहित्य अर संस्कृति अकादमी, बीकानेर आपरो सर्वोच्च पुरस्कार दियौ। अकादमी री पत्रिका 'जागती जोत' रौ संपादन ई कियौ। सत्येन जी नै 'उस्ताद' रै नैड़ै रैवण रौ ई बगत अर मौकौ मिळियौ। आपरी कीं पोथ्यां अणछपी रैयगी। आज सत्येन जी आपां रै बिच्चै कोनी, 23 दिसंबर 2000 में वै आपांरौ साथ छोडगा, पण वांरी रचनावां बगत-बगत माथै दरसावै कै वै आपांरै साथै है।

-पारस अरोड़ा

कीं गजलां

(1)

आंखियां रौ बवार देखूंला
धुंध रै आर-पार देखूंला

देखली आपरी अणूताई
आज खुद रौ तुमार देखूंला

जाणै पासौ कदै पलट जावै
दांव म्हैं भी लगा'र देखूंला

नख-निवाई भी आस कोनी है
कांकरा वार वार देखूंला

रात री खाक में है टाबरियौ
आंगणै में उतार देखूंला

मौत, मनवार सूं नहीं मूंगी
जिंदगाणी गुजार देखूंला

वौ बकारै, घड़ी-घड़ी भर में
देखलूंला, अबार देखूंला

❖❖

(2)

छाजै नीचै, टोडै ऊपर
करै गुटरगूं अेक कबूतर

घर-भर नै भूल्योड़ा गाफल
खेल रह्या है कद सूं भर-चर

खूमरिया खायोड़ा कद सूं
सोध रह्या है वै थांरौ घर

तिणखौ ले तिरिया है कितरा
खोद सकैला नख सूं भाखर

कद सूं भोळावण देतौ हौ
तूं थोड़ौ तौ खुद सूं ई डर

उडतौ घणौ इतरियोड़ौ वौ
काट लिया कोई उणरा पर

ढोल ढमाका घणा घुरीजै
कुण सांभैला थारी टर-टर

❖❖

(3)

फूल हां तोड़ौ, मसळदौ, फेंकदौ
जिंदगी रौ अेक तौ हासल लिखौ

भाग री पांती करी, कुण कद करी
सीर सरधा व्है उतौ ई खोसलौ

लाज अर मरजाद में रुळती रही
पीढियां री कसर पाछी काढलौ

हाथ सूं पैलां किसी भासा हती
बंद मुट्ठी आज पाछी खोलदौ

देवजूणां रै अणूतै लोभ में
गाळणौ जोबन निकामौ चोंचलौ

जीवणौ चावां मिनख री जात ज्यूं
देवता कैवौ भलै राकस भखौ

❖❖

मनचायी मौत

लै बोल!
म्हैं बेचूं ईमान, खरीदैला
देवैला मूंडै मांग्या दाम

जाणूं, थूं मोलाय राखी है पीढी
मेट दियौ फरक कतल अर आतमहित्या रौ
जीवतौ ई जीत लियौ सरग
बगत नै गोडा-लकड़ी दे—

पण भायला
आजकाल तौ बेमौत मरणौ भी कोनी मुफत-हकनाक
(मरियोड़ौ हाथी व्है लाख टकां रौ अर मानखौ)
उण रा भी मिलै दाम
हादसै, मौकै, आसामी या औदै री औकात पाण
अर म्हारै कनै तौ ले-दे है फकत अेक ईमान
या म्हारी जान

बोल, कांई खरीदैला
देवैला मूंडै मांग्या दाम
के पछै म्हैं खुद ई करलूं जुगाड़
अेक हसीन हादसै रौ

मरणौ तौ है ई अेक दिन
कांई फरक पड़ै
जे कोई बखत सूं पैला मरै

यूं भी किसा बाटलै कोई चाम रा दाम
लै बोल म्हैं बेचूं ईमान ऊधड़ौ
कांई खरीदैला
जाणूं, नीं सजै थारै हींग री गरज
म्हनै तौ भायला मरणौ ई पड़सी
बिकण जैड़ा कोनी म्हारा भाग
म्हैं कोनी जिनस
ईमान रा कद कोई टका बटिया

जान
नीं चावूं तौ भी थारा फरजंद
चावै जद कर देसी किचरघाण
अर कचेड़ियां रै गोतां सूं अखताय
झखमार करसी राजीपौ
बाप नै अणमोल समझणी औलाद
आधी-ऊधी कीमत आंक

ईं सूं तौ आछौ है
मोलायलै म्हारौ ईमान
थारै मरजी आयै मोल
के म्हैं म्हारी मनचायी मौत तौ मर सकूं
बोल! खरीदैला म्हारौ ईमान
म्हैं बेचूं पूरै होस-हवास में
पण जाणै के भूत मरियां पलीत जागै
अर थन्नै लांपौ देवण वाळौ
जलम तौ गयौ व्हैला।

❖❖

● *पंचामरत : दो*

मोहम्मद सदीक

राजस्थानी रा चावा-ठावा गीतकार मोहम्मद सदीक रौ जलम 11 सितंबर 1937 नै हुयौ। आपरौ दादाणौ चूरू अर नानाणौ गांव गोठ जिला नागौर हौ। आप अंगरेजी साहित्य में अेम.अे. कर बी.अेड. करी। आपरौ पैलौ काव्य संग्रै 'जूझती जूण' सन् 1979 में छप'र चावौ हुयौ। आकाशवाणी रा केई केंद्रां सूं केई बरसां तांई काव्य-पाठ कियौ। राजस्थानी भाषा, साहित्य अर संस्कृति अकादमी, बीकानेर आपनै उस्ताद गणेशीलाल व्यास पुरस्कार देय'र सम्मानित किया। इणी अकादमी री सामान्य सभा रा आप सदस्य रैया। सदीक साब री कविता में जन-मन री ओकळ अर जूंझ रै साथै ई हियै हबोळा लेवता बोल सीधा सुणणियै रै काळजै घर करै। आप बरसां शिक्षा विभाग री सेवा में रैया। आपरौ दूजौ कविता-संग्रै सन् 1989 में 'अंतस तास' छप्यौ। वांरी कविता आजादी पाछला बरसां री रामत नै खुल्ला-खरा सबदां में सांमी राखै। राजस्थानी रौ औ लाडेसर 30 जुलाई, 1996 नै आपांरौ साथ छोडगौ। वांरी कवितावां में आपां वांनै याद करांला।

-पारस अरोड़ा

गीत

थे— मजा करौ म्हाराज! आज थांरी पांचूं घी में है
म्हैं— पुरस्यौ सगळौ देस, बता— अब कांई जी में है?
गळी गळगळी होय, गांव री बिलखै साख भरै
भोळा ढाळा जीव, जीण री झूठी आस करै
लुच्चा लूटै माल, मसकरा मीठौ नास करै
कुत्ता खावै खीर, मिनख तौ बोदी घास चरै
गांव में लागण लागी आग, घरां में दीखै भागम भाग
टाबरां गायौ रोटी राग, कमावणियां रै आग्या झाग।
पण थे— मजा करौ म्हाराज! आज थांरी पांचूं घी में है
म्हैं— पुरस्यौ सगळौ देस, बता— अब कांई जी में है?

पीड़ पाळतू कर लेवै, पण मेखां रोज जड़ै
मिनख-मांस रा बिणजारा, बातां रा महल घड़ै

अबळा मांग मिटै दिन धोळै चूड़ी रोज झड़ै
फळसौ खुल्लौ छोड़ दियौ जद डांगर आय बड़ै
गांव रै कूवै पड़गी भांग, बांदरा लड़सी सांगोपांग
सराफत झूठौ भरसी सांग, लाज री खुल्ली दीखै जांघ।
पण थे— मजा करौ म्हाराज! आज थांरी पांचूं घी में है
म्हैं— पुरस्यौ सगळौ देस, बता— अब कांई जी में है?

सदा सरीसा दिन बीतै, बिरथा ही जूण गमावै
तिल-तिल जीणौ भारी पड़ग्यौ, सांस काळजौ खावै
लाजां लाज मरै सड़कां पर, जणौ-जणौ बतळावै
बादळ बूंद बणै जद बरसै, ओळा क्यूं बरसावै
सूरड़ा दे मिनखां नै मार, चोरटा देवै खुल्ली धार
समय री माया अपरमपार, आपणी बस्ती ठंडी ठार
पण थे— मजा करौ म्हाराज! आज थांरी पांचूं घी में है
म्हैं— पुरस्यौ सगळौ देस, बता— अब कांई जी में है?

सतजुग री बातां रा सपना, अणदेख्या रै जावै
सुख-सपनौ लै घर स्यूं चालै, दुख-दाळद लै आवै
माथै चढग्या भाव बेगड़ा, जिनस जीव नै खावै
कवि करै कुचमाद, मिनख नै मांदा गीत सुणावै
घणा-सा बेरुजगारा लोग, पसरग्या घर-घर में बण रोग
घरां नै घेरच्यां राखै सोग, जीवता दीखै मरणै जोग
पण थे— मजा करौ म्हाराज! आज थांरी पांचूं घी में है
म्हैं— पुरस्यौ सगळौ देस, बता— अब कांई जी में है?

अणभणिया आखर बूझैला, कुण बांरी बात करै
ऊंचै आसण बैठणियां, नित नूवौ घात करै
बिना साख रा सौदागर, बिन खेल्यां मात करै
बैलां बाळ उजाळौ करलै, दिन में रात करै
आंख रौ देखण सारू काम, जीभ तौ अेक टकै री चाम
टसकता दीखै जाया जाम, काढसी बापूजी रौ नाम
पण थे— मजा करौ म्हाराज! आज थांरी पांचूं घी में है
म्हैं— पुरस्यौ सगळौ देस, बता— अब कांई जी में है?

❖❖

गीत

ओ— बाबा थारी बकरयां, बिदाम खावै रे
अै— चरगी म्हारा खेत, सरे-आम खावै रे
बाबा— थारी बकरयां बिदाम खावै रे।

कीड़ी नगरै नगर बसायौ, ढोल दिया ढमकाय
राजा हुकम दियौ हाकम नै, घर-घर लागी लाय
धरम करम रा कमधजिया, हराम खावै रे
बाबा— थारी बकरयां बिदाम खावै रे।

भूखी भेड़ भचीड़ा खासी, चोर भखारी भरसी रे
गोधा चरसी खड़ै खेत नै, गाय अखोरा करसी रे
मिनख मारणी काळ-चिड़यां, गोदाम खावै रे
बाबा— थारी बकरयां बिदाम खावै रे।

मन माटी रा तन सोनै रा, मिनखां-बरणी सार
चोपड़ रमणी जूण मिनख री, गई मिनख नै हार
गांव-रुखाळा बासी मूंडै, राम खावै रे
बाबा— थारी बकरयां बिदाम खावै रे।

सुण, धण, बात कातली पूणी, डोरै नै मत ताण
न्याय रौ माथौ मत कर नीचौ, देख ताकड़ी काण
सांची बात बतावणिया तौ, डाम खावै रे
बाबा— थारी बकरयां बिदाम खावै रे।

❖❖

गीत

अंतस-तास तळै म्हारा मनवा
मन मिरगा मन हार मती रे—
मन हारयां थारी जूण अलूणी—
जुग-जुग जी मन मार मती रे।

परबस पळ मत तूं मत हीणा
आखर-अरथ सदा सूं झीणा
माटी रौ मान मिनख नै करणौ
जग में जूण नै जूझत जीणा
हरख-हरावळ पग धर पूगै
निरमिस आंख नै झार मती रे।

आक बटूक्या तूं पवन भखी रे
आखी उमर भख बण पुरसीज्यो
अन-जळ बांट लियौ बटमारां—
पत राखण मन सदियां छीज्यौ
लूंठा तौ लूटण री लत पाळी
धायोड़ै धींगां नै धार मती रे।

❖❖

गजल

हियै में हेत उपजायां, मिनख री जात परखीजै
अणूतै आखरां री भीड़ में, कद बात परखीजै

मुळकणौ मोकळौ आछौ, परख कोठै री होटां पर
निजर में नीम घुळतां ईं, पुड़त में घात परखीजै

बिहूणै हेत रै हित आंख री, पोथी नै बांचै तौ
बिलखती आस रा ओसार, ढळती रात परखीजै

निमाणा नैण पुरसी बानगी, दो-च्यार मोत्यां री
पलक रा पांवणा मुळकै, ढळै जद बात परखीजै

भरम रा भूत मिनखां री, मती नै रोज चंचेड़ै
अणूती टाकरां पण हाण हारत्यां मात परखीजै

कल्याणसिंह राजावत

नागौर जिलै रै धुरावू चितावा गांव में 8 दिसंबर 1939 नै जलम्या कल्याणसिंहजी राजावत राजस्थानी गीत अर कविता रा चावा अर ठावा कवियां में आपरी खास ओळख बणाई। सरूपोत में अंतर प्रांतीय कुमार साहित्य परिषद् रै संग्रै 'मिमझर' रा चार कवियां में आपरी ठौड़ बणावण वाळा कवि श्री राजावत रौ पैलौ कविता-संग्रै 'रांमतिया मत तोड़' सन् 1962 में छपियौ अर दूजौ संस्करण सन् 1967 में छपियौ। म्हारी जाण में राजस्थानी कवियां में पांच बरसां मांय कोई कविता-संग्रै रौ इत्तौ बैगौ पाछौ संस्करण छपणौ अपणै आप में महताऊ गिणीजै। हिंदी भासा में अेम.अे. करणिया श्री राजावत री दूजी पोथी 'परभाती' प्रकृति-काव्य कृति रै रूप में सन् 7 जुलाई, 1979 में सांमी आई, तौ तीजी पोथी 'कुण कुण नै बिलमासी' 1989 में छपी। वांरी दूजी रचनावां में 'आ जमीन आपणी' कविता-संग्रै अर 'जूंझार' खंडकाव्य ई है। म्हारै खातर आ गुमेज री बात है के कवि कल्याणसिंहजी री कविताई री भोम म्हारी जलमभोम गोगेळाव बणी। अेकर अेक इंटरव्यू में श्री राजावत बतायौ के स्कूली खेलकूद प्रतियोगितावां री बखत वांनै गोगेळाव स्कूल में अंताक्षरी प्रतियोगिता में तुकबंदियां करण रौ औसर मिळियौ अर उणमें मिली जीत आगै बध'र वांनै राजस्थानी भासा रा चावा अर ठावा कवि बणावण में महताऊ कामयाबी दिराई।

आं दिनां वै बीमार है। भाई पारसजी रै जोर देवण सूं वां सूं मिळियौ, पोथ्यां ली। वाचा री आगत री आस में वै जिण भांत साजगी में हा, उणी भांत अर भावां सूं म्हनै लाड अर सम्मान दियौ। वांरी वाणी बेगी पाछी आवै, इणी आस में अै ओळियां अठै ई पूरी करूं।

-नारायणसिंह पीथळ

रांमतिया मत तोड़

जलम रा रांमतिया मत तोड़, रांम चितरांम बिगड़ जासी
अधूरा सपना मती मरोड़, प्रीत री बेल उखड़ जासी।

मिनख जमारौ घणी भांत रौ, धण रंगां रौ घणौ सांतरौ,
रांमतिया सगळां नै चोखा, आठां-साठां नहीं आंतरौ—
आस री आगळ नै दे खोल, सांस रौ साथ सुधर जासी।

निरख-परखलै घूंघट नगरी, जी-भर पीलै पिणघट गगरी,
मत घबरा मत कळपा काया, याद करै ना मरघट डगरी
चूनड़ रौ गोटौ मती उधेड़, कफन रा तार उधड़ जासी।

दरपण देखण री रुत आई, तन री पोळ बसंती आई,
पवन करै है पाप, सांस ना करै कदै मन सूं अधकाई—
बावळी कूंपळियौ मत फोड़, नैण पर धूंधळ छा जासी।

मिंदर में दीखै ब्रिज होळी, ग्रंथां रै लिपटी है मोळी,
तांडव री निरतन थिरकण सूं, कैलासां पर भटकै भोळी—
धरम री छाया नै मत देख, तपण री राख उघड़ जासी।

सांझ रा सांवट मती बिछाय, रात नै बातां में बिलमाय,
पूनम रौ चांद नहीं बूढौ, प्रीत री पलकां बीच बसाय—
फूल री पांखड़ियां मत तोड़, कळी री कूंख उजड़ जासी।

पगां करै मत भेळौ दळदळ, गांठ करै मत हाथां बोझळ,
आज राज कर ताज धारलै, आगोतर आंखड़ल्यां ओझळ,
मौत रौ मारग मती बुहार, मानवी मांन बिखर जासी—
अधूरा सपना मती मरोड़, प्रीत री बेल उखड़ जासी।

❖❖

फूल फूल रौ मोल

मालण! फूल फूल रौ मोल करणौ चोखौ कोनी अे।
कंवळी कळी-कळी रौ तोल करणौ चोखौ कोनी अे।

कळियां नै क्यूं बाट चढावै, भंवरा री काया कळपावै,
थारै घर रौ थाट सजावण, रुत री क्यूं तूं हाट लगावै—
लोभण! बाग-बाग सूं खोळ भरणौ चोखौ कोनी अे।

गळी-गळी बैठ्या सौदागर, जितरा मिंदर उतरी झालर,
घाट-घाट पर मत जावै तूं, नाडी-नाडी पाणी पालर—
जोगण! देव-देव रौ ध्यान धरणौ चोखौ कोनी अे।

सगळा चादर में सोबाळा, सां रै आगळ लागै ताळा
मन रा पापी तन रा तापी हाथ उठावै भगवत माळा—
भोळी! जणा-जणा री पोळ चढणौ चोखौ कोनी अे।

धरती नाचै, फागण आवै, अंबर गाजै, सावण आवै,
मेळौ लागै, जुड़ै जातरी, झांझर बाजै, साथण आवै—
गोरी! पिणघट पिणघट नीर भरणौ चोखौ कोनी अे।

जां रौ रगत बणै है पाणी, बां रै खावण कोनी धाणी,
जां री मैणत माटी सोनौ, बांरी काया चढगी घाणी—
तेलण! तिलां-तिलां रौ तेल भरणौ चोखौ कोनी अे।

इक मूरत मिंदर में धरलै, इक सरवर सूं गागर भरलै,
इक बर तेज चढा जोबनियै, इक आंगण में नरतन करलै—
गजबण! गळी-गळी में रास रमणौ चोखौ कोनी अे।

❖❖

कुण कुण नै बिलमासी

कुण कुण रा मन मार अठै तूं कुण कुण नै बिलमासी।
लिछमी रूपांधार तनै तौ घणा जणा बतळासी।

थारी चाल-ढाल में चटका, थारी बात-बात में लटका,
जोबन री पणियार हेत री बादळियां बरसासी।

छम-छम बाजै पायल थारी, तीखा दीरघ नैण कटारी,
सज सोळा सिणगार घणेरी, निजरां नै उळझासी।

तूं आवै हिवड़ा हुळसावै, तूं जावै जिवड़ा कुमळावै,
जगत करै मनवार नवेली, जठै-जठै तूं जासी।

तूं बोलै इमरत रस घोळै, तूं झांकै रस राग झकोळै,
जासी जिण-जिण द्वार प्रीत री पगथळियां परसासी।

जितरी बणी-ठणी तूं आवै, उतरा भोळा हिया रिझावै,
रूप-कळी कचनार, ठगोरी मन भंवरा भरमासी।

लखपत पांव पुजारा थारा, धनपत मोल कुंतारा थारा,
घर-घर भोग लगार अटारयां में आंचळ उजळासी।
लिछमी रूपांधार तनै तौ घणा जणां बतळासी।

मूळ कठै अर डाळ कठै

जितरी जड़ां जमीं में होसी उतरी साख बधीजैला
जितरी रूई कतेरण राखै, उतरौ सूत कतीजैला

जिण पिणघट पर प्रीत न पावै, उण घट पाणी पीणौ के,
मन रो मोद मनां में मुरझै, इसौ जमारौ जीणौ के,
बतळायां सूं बोलै कोनी, काम पड़्यां क्यारी काटै—
जां रै मन री मंगजी फाटी, बीं नै पाछी सीणौ के।
जितरा पाट पड़ौसी रैसी उतरौ मंयौ पिसीजैला—
जितरी रूई कतेरण राखै उतरौ सूत कतीजैला।

आसमान पर खेत फळै नीं, अै तारा थारा कोनी,
समदर छोळां हेत बधानीं, अै धारा थारा कोनी,
ओस बूंद कद माळा पोवै, सपनां किण रा सांच हुया--
छाया रौ चितराम बावळा, उणियारा थारा कोनी—
जितरी नजर भंवीजै भरमै, उतरौ हियौ तपीजैला—
जितरी जड़ां जमीं में होसी, उतरी साख बधीजैला।

इण जग रौ है उलटौ धारौ, बोल कठै अर चाल कठै,
गंठजोड़ै री गांठां उळझै, कोल कठै अर ताल कठै,
काया तौ कागद री माया जो लिखणौ सो लिखदै रे—
मन रै बड़लै साख हजारूं मूळ कठै अर डाळ कठै—
जितरी तिरस बुझाणौ चासी, उतरी तिरस बधीजैला—
जितरी रूई कतेरण राखै, उतरौ सूत कतीजैला।

पाणी धारा नाव डुबोदै, पण नोका रौ जीवण पाणी,
उड उड जावै घणा पतंगा, प्रीत जोत में बळवा ताणी,
मरण सांच नै सो जग जाणै पण जीवण हित जुध लड़ै--
प्रीत पांगळी लूली-गूंगी, पण इण सूं है खींचाताणी—
जितरा सबद भाव में भीजै, उतरा गीत लिखीजैला—
जितरी जड़ां जमीं में होसी, उतरी साख बधीजैला।

❖❖

● *पंचामरत : चार*

प्रेमजी प्रेम

हाड़ौती अंचळ रा चावा कवि अर गीतकार प्रेमजी प्रेम को जनम 20 जनवरी 1943, कोटा जिला का घघटाना गांव में होयौ। आपणी पचास बरस की जिनगाणी में साहित सिरजण की नुयी गेल थरपबा हाळा प्रेमजी प्रेम नै कविता, कहाणी, जातरा, गीत, व्यंग की लैरां-लैरां दूजी विधावां में बी लगौलग सिरजण कर्‌यौ। प्रेमजी प्रेम की राजस्थानी पोथ्यां में 'सेळी छांव खज्यूर की' (उपन्यास), 'रामचन्द्रा की रामकथा' (कहाणी-संग्रै), मेरी कहानियां (हिंदी कहाणी-संग्रै), 'यात्रा', 'हाड़ौती के पर्यटन स्थल' (हिंदी निबंध/आलेख) अर प्रेमजी प्रेम की पद्य पोथ्यां में 'म्हारी कवितावां' (कविता-संग्रै), 'चमचो' (हास्य-व्यंग संग्रै), 'सांवळो सांच' (गजल-संग्रै), 'सूरज' (खंडकाव्य), 'सरवर, सूरज अर संझ्या' (गीत-संग्रै), 'म्हूं गाऊं मन नाचै' (गीत-गजल संग्रै) सामिळ छै।

प्रेमजी प्रेम नै राजस्थानी कविता-संग्रै 'म्हारी कवितावां' सारू 1991 में साहित्य अकादेमी को राजस्थानी पुरस्कार मिल्यौ। 2 मई 1993 नै देवलोकगमन करबा हाळा प्रेमजी प्रेम नै देस-प्रदेस का हिंदी अर राजस्थानी कवि-मंचां घणौ जस कमायौ। प्रेमजी प्रेम नै आपणी जिनगाणी में हाड़ौती अंचळ का लोकसाहित-लोकसंस्कृति कै तांई दुनियां कै सामै लाबा कै लेखै 'हाड़ौती उत्सव' की सरूआत करी अर ई अंचळ की लोकसंस्कृति ई नुयी पिछाण दी।

आखा-मलख में हाड़ौती अंचळ सूं राजस्थानी कविता में नराळी पिछाण रखाणबा हाळा प्रेमजी प्रेम नै साहित्य अकादेमी पुरस्कार कै लैरा ई राजस्थानी भाषा, साहित्य अर संस्कृति अकादमी आडी सूं 1981 में राजस्थानी गीत-संग्रै 'सरवर, सूरज अर संझ्या' सारू पद्य पुरस्कार मिल्यौ। प्रेमजी प्रेम नै वांकी साहित्य सेवा अर राजस्थानी साहित सिरजण में योगदान सारू घणी सारी सामाजिक, साहित अर दूजी ठावी संस्थावां की आडी सूं सम्मान वांकै जीवता सता बरोबर मिळता र्‌या।

-ओम नागर

झूंठौ बणज

मत कर झूंठौ बणज फकीर।
थारा करमां में कोई न्हं, बाण्यां बट्टा की लकीर।।

बळदां का करमां में जूड़ौ, बोझ्यां मरती जावै नाड़।
कुत्ता का करमां में बिसकुट, मोती मेम जणावै लाड़।
बादळ का करमां में बिजळी, कर्‌यां नाच लखायौ मोर।
बांदर बणग्यौ साहूकार, बिल्ली बणी करम सूं चोर।
बगलौ धर्‌यां बरफ को रूप, पाप कमावै सरवर तीर।
मत कर झूंठौ बणज फकीर।
थारा करमां में कोई न्हं, बाण्यां बट्टा की लकीर।।

राजा की रेखा में राज, चोरां की रेखां में जेळ।
करमां की रेखां सूं पावै, खूब मसाला नागरबेल।
तोता पावै रंग सुरंग, कागा पावै काळी खाल।
कासी का करमां में गंगा, समदर न्हावै छै बंगाल।
करमां सूं पावै कामळिया, कोई पावै पचरंग चीर।
मत कर झूंठौ बणज फकीर।
थारा करमां में कोई न्हं, बाण्यां बट्टा की लकीर।।

देणौ चावै तौ अन्नदाता, सब नै देवै छप्पर फाड़।
म्हांनै का पाया दुतकारा, थां नै पायौ गहरौ लाड़।
कागा चुग-चुग खावै चाम, चुग-चुग मोती खावै हंस।
थारौ बेटौ कान्ह-कन्हैयौ, म्हारौ बेटौ बणग्यौ कंस।
कोई करमां सूं बणज्यारा, कोई जनम जीवतां पीर।
मत कर झूंठौ बणज फकीर।
थारा करमां में कोई न्हं, बाण्यां बट्टा की लकीर।।

मछली का करमां पाताळ, चंदरमा पायौ आकास।
कठफोड़ा क्यूं फोड़ै लकड़ी, हरण्या उछळै खावै घास।
सावण का करमां में पाणी, फागण का करमां में रंग।
चोकीदार करै नगराणी, रजपूतां की पांती जंग।
बणज्यारा की पांती देबो, लेवण तू पायो तकदीर।
मत कर झूंठौ बणज फकीर।
थारा करमां में कोई न्हं, बाण्यां बट्टा की लकीर।।

❖❖

उतरी चांदणी

चांदणी रूपाळी, उतरी चांदणी।
चांदणी जद उतरी कांकड़-कांकड़ खेत-खेत।
बाथां भर-भर मळक्या काळा ढेकळ भूरी रेत।।
उतरी चांदणी।

चांदणी जद उतरी सरवरिया की तीर-तीर।
झळमळ का तारां सूं जड़ग्यौ नरमळ जळ कौ चीर।।
उतरी चांदणी।

चांदणी जद उतरी बादळिया की कोर-कोर।
रूपां बरणी मूंडा होग्या, काजळ बरणी मोर।।
उतरी चांदणी।

चांदणी जद उतरी बछटी गणगोरयां कै गांव।
कंवळ-पांख होठां पै डघड़्यौ सांवरिया कौ नांव।।
उतरी चांदणी।

चांदणी जद उतरी गीत रचण्यांन की पोळ।
रागण्यां का पग में बंधग्या गीतां का रमझोळ।।
उतरी चांदणी।

❖❖

बसंत कै दिन

तड़कै ई फूली पूरब में केसरिया क्यारी
सरस्यूं की कळियां केसरिया, गारा की डळियां केसरिया
सूरज उगतौ सो केसरिया, पंछी चुगतौ सो केसरिया
थांकी साड़ी भी केसरिया म्हारी।
बणज्यारा की लेरां केसरिया बणज्यारी।।

केसरिया सोना को रथ, केसरिया छै पगडंडी।
सांचौ हरदौ केसरिया, काळौ हिवड़ौ पाखंडी।
केसरिया थारी बाणी, केसरिया म्हारी बोली।
पूरब का बादळ नै भी, केसरिया आंख्यां खोली।
केसरिया तन मत द्यो, केसरिया पिचकारी।।

केसरिया फूल हजारा, केसरिया कळी कनेरी।
केसरिया जळ की लहरां, केसरिया बाळू ढेरी।
केसरिया म्हारी नथड़ी, केसरिया थांको मूंडौ
केसरिया अस्ताचळ में, सूरज भी धंसतौ ऊंडौ
केसरिया! मीठी लागै छै बातां थारी।।

❖❖

म्हारौ भोळौ जीवड़ौ

दुनियां रोवै पण कुण सोवै?
चोरयां का धन सूं मन धोवै?
कुण अपणा लोगां नै छळतौ जावै धीरां धीरां?
कुण मंगर का आंसू पूरै बैठ्यौ जळ की तीरां?
कै तौ म्हूं, कै म्हारौ भोळौ जीवड़ौ।
काळौ, पण बगलां सूं धोळौ जीवड़ौ।।

उगता सूरज नै कुण पूजै?
चुगलीखोरां सूं कुण धूजै?
खायां नै जाळां सूं बूजै?
कुण छानै चुरकै खांचै पाणी कै बीच लकीरां?
कुण टपका का गोळा की भी करबौ चावै चीरां?
कै तौ म्हूं, कै म्हारौ भोळौ जीवड़ौ
खोरौ, नारेळी को गोळौ जीवड़ौ।।

आतां का चरणां नै पकड़ै?
मीठी बातां सूं मन जकड़ै?
सेळौ बोलै कदी न अकड़ै?
जातां जातां पाण माजणा कर दे लीरां-लीरां?
रगड़्यां जावै कुण कोल्हू सूं ओरां की तकदीरां?
कै तो म्हूं, कै म्हारौ भोळौ जीवड़ौ।
झूठा, बैरागी को भोळौ जीवड़ौ।

❖❖

दुर्गादान सिंह गौड़

आजादी मिलबा कै थोड़ा दिनां बाद 10 अक्टूबर 1947 नै झालावाड़ जिला की खानपुर तहसील का गांव जोळपा में जलम्या कवि दुर्गादान सिंह गौड़ आधुनिक काल का राजस्थानी भासा का महताऊ कवि छै। वै अपणा गीतां की वजह सूं आम लोगां में सुण्या अर सराह्या जावै छै। अदब अर बुद्धिजीवियां की दुनिया में भी वां को लूंठौ आदर छै।

दुर्गादानसिंह गौड़ की कविता में लोकसंस्कृति अर रुमानियत की जुगलबंदी की लारां-लारां जीवन संघर्ष की छबियां भी भासमान होवै छै। गौड़ सा'ब अपणा कवितावां/गीतां में रूप की मिठास, जिंदगी को उजास अर दरद की कसक कै अबखायां को अंधेरौ अस्यां मेळै छै कै कानां में हौके कद मन मोहक मार कर, मरम छू ले छै तोल ही न पड़ै।

राजस्थानी साहित में परख-पड़ताल को पख इतनौ सक्रिय अर मजबूत नीं छै जितणौ होणौ चाहिजै। ईं लेखै घणकरा लेखकां का लेखन की सांची कूंत अर सांचौ मोल नीं हो सक्यौ। दुर्गादान सिंह गौड़ अस्याई गूदड़ी में छिप्या लाल सरीखा कवि छै ज्यांकी कूंत बाकी छै। ईं लूंठा कवि की कवितावां आबा हाळा बखत में राजस्थानी को मोल अर मान बढावैगी।

कवि दुर्गानसिंह गौड़ की कविता की जड़ां गांव में छै। वांका रचनाकर्म की बेलड़ी पारंपरिक संस्कारां सूं पोषित होती हुई अेक मरजादा पुरुष पिता की देखरेख में विकसी छै। वै जितना बढिया कवि छै उतना ही बढिया मिनख छै।

-अम्बिकादत्त

कोसां दूरी नींद

कोई सोवै आधी नींद, कोई सोवै पूरी नींद
अेक म्हासूं ही क्यूं होगी, कोसां दूरी नींद?

रात-भर बूढ़ा ससुरा, चिलमां पै चिलमां फूंकै
कुण बूझै क यांकै कांई सालै-कांई दूखै,
राम सूं मांगै वै पावां तांई पूरी नींद।

आंख्यां में खटकै, दिवला कौ दूबळौ उजास
नणदल कै भी कतबा लाग्यौ, पावां में कपास
डोल रही छै नानी बाई की चंवरी चंवरी नींद।

अठी म्हारा होठां पै, बिरह का बारहमासा
ऊठी दौराणी चौपड़ डांसै, अर देवर राळै पासा
स्वाग भोगती बू की माथा चोटी करी नींद।

नाचबा की आंट पड़ी, मोरयां कै थांकै जातां
अजी! गाबा का खण कोयल नै, लेल्या आंबा कै आतां
थे आऔ तौ म्हूं भी सोऊं चिकणी, चुपड़ी नींद।

❖❖

उड जाऊंगी री मां!

उड जाऊंगी री मां, पंख लगा
थोड़ा दिनां की पांवणी....

घड़ी पलक कौ मेळौ छै यौ, पल दो पल को साथ छै
आंसू म्हारा स्याही छै यै, आंखड़ल्यां दवात छै
करमां कौ छै कागज जीं की, कलम विधी कै हाथ छै
मत चीर घटा-मत पीर बढ़ा,
मत कर विलाप बडभागणी....

फंदी डांस तौ हरणी पकड़ी, जाळ सूं जळ माछळियां
या दुनियां छै कुटका कै ज्यूं, लोग बाग सब छळिया
या लै बाबुल थारी नगरी, ये लै गांव अर गळियां
मत हेत लगा, मत प्रीत जगा,
म्हसूं लौ मत लगा लाड लडावणी....

बगिया सूं बिछड़्या फूल-पात, अर दिवला सूं उजाळौ
म्हासूं छूट्यौ देस आपणौ, ज्यूं पखेरू सूं घुसाळौ
मत पहरौ राख अटारी कौ, तूं मत दै घर पै ताळौ
मत पिंजड़ौ घड़ा, मत सांकळ चढा
आबादै बाळ मन भावणी....

आम पक्या महुवा गदराया, दाड़्यूं फळ भी फळग्यो
यौ ऊमर कौ मानसरोवर, कोई राजहंस को होग्यौ
मणग्यारा नै फेरी दी, मन काजळ कंघी में रमग्यौ
म्हारै मेंहदी रचा, म्हारी मांग सजा
पग पहरा पायल बाजणी....।

❖❖

पाणी में चांद घुळै छै

तू कतनी खूब खुलै छै, पाणी में चांद घुळै छै
थारी चाल असी अे मजेजण! थाळी में मूंग ढुळै छै

अश्या लागै छणगाला डील का यै तोड़
जाणै मेळा में मस्ताती दोय भायेल्यां की जोड़
कुण नपै थं सूं अर कुण पाळै होड़,
ठग्यौ रहग्यौ देख चितेरौ / अर चारण चुगलै छै।

ऊजळा ललाट पै पसीना का पड़ाव
जाणै मूरती पै ठहर गयौ होवै सपड़ाव
काच मांही तरै छै कुंवार हाव-भाव,
पहली तौ दै नेह कौ नूंतौ / अर फेरूं उदलै छै।

नींद का नशा में डूबी डूबी थारी आंख
नमळी पलक जाणै पंखेरू की पांख
हेताळू-सी होर अेक बार अठी झांक,
अमग रही जाणै गंगाजी / जद दो होठ खुलै छै।

❖❖

बड़ रे बड़

बड़ रे बड़! नीचै पड़
नई पौध नै पग लेबा दै गांव में।
या माथा की जटाजूट, यौ जोग्यां हाळौ भेस
आंकड़ा अर नीमड़ा कै, बीचै तूं दरवेस
काळी आंधी नोच फेंकसी, यै दाढ़ी का केस
कै दन संभाळ्या रह्वैगी, थन्नै या जड़।
बड़ रे बड़!....

जतनै जतनै थारी छाया, उतनै उतनै माया थारी
अतनी ठाम घेरबौ ही, पड़ज्यागो अेक दन भारी
बूढारा में बंस बधातां, लाज कोई नं आ री
चील धरैगी थं पै घुसाळौ, गिद्ध करैगा घर।
बड़ रे बड़!....

❖❖

गोरी गोरी गजबण

गोरी गोरी गजबण बणी-ठणी
मुजरौ-मुजरौ खम्मा घणी
जीं पै थारौ जादू होज्या
बस ऊंकौ ही राम धणी।

आंख असी कै जाणै काम की कमाण
मूंडै बोलै हथेळ्यां में मेहंदी का मंडाण
संतां की समाधि टूटै, मेनका कौ मान,
भागवान भगवान हौ गयौ
तूं सरीखी कोई और नं बणी....।

भांग कौ सो झोलौ अर सांप की महड़
डील में उतार गई मीठौ-मीठौ जहर
अठी उठै ऊठी उठै दरद अठ-पहर,
हंस'र जवानी नै तानौ मार्‌यौ—
कांई में निगळग्यौ हीरा की कणी....।

आधौ आधौ चंदण, आधौ आधौ पाणी
गीत की गिणगौर म्हारा छंद की जवानी
थं सूं ही जुड़ी छै सारी प्यास की कहाणी,
मिनखां की तौ बात छोड दै
देवतां पै छा'गी पाप की पणी....।

नरम नजर की झेल लै जुहार
जस मानेगा थारौ मझ मोट्यार
फेर कद करस्यां— म्हें मनवार,
इक बार हँस दै मोती गिण दै
जनम जनम तक रैवैगा रिणी....।

❖❖

'अपरंच' अंतरजाळ माथै

अबै आप 'अपरंच' नै अंतरजाळ (इंटरनेट) रै मारफत भी देख सकौ। राजस्थानी रा चावा-ठावा लेखक अर आलोचक डॉ. नीरज दइया (बीकानेर) 'अपरंच' रै अंतरजाळ अंकां रौ संपादन अर संचालन करै। अठै आप 'अपरंच' रा सगळा अंक पी.डी.एफ. लेय सकौ। अठै क्लिक करौ सा : www.apranch.wordpress.com

● *कहाणी*

उस्ताद

अरविंद सिंह आशिया

म्हारौ पैली वेळा इज अैड़ौ काम पड़ियौ। मेळा-खेळा में जावण रौ म्हारौ कदैई मन नीं हुवै। पछै जे मेळौ कोई धारमिक हुवै तौ भजलौ सीताराम। मिनख फंफेड़ीज जावै। म्हारै मिंत डाक्टर देवेन्द्रजी कैवै के भाई, सोमवार नै शिवजी, मंगळ नै हड़मान, बुध रा गणपत अर शनि रा शनिदेव नै टाळौ। किणी दूजै दिन आं रा दरसण करौ, क्यूंकै आं रै खुद रा दिनां में तौ दरसण री इतरी भीड़ हुवै के आं रै कनै ई पण आपरै सारू टैम नीं हुवै। ईं फोगट धक्का खाय'र 'हो बावजी' करणौ हुवै तौ बात न्यारी। दूजां दिनां जावौ तौ आंरा मिंदरिया खाली इज पड़िया रैवै। आप ई व्यामौ खाबौ, ढबौ, आंसू बंतळ करौ अर अै ई पण आपरी बात नूछै सूं सुण'र कारज सिध करसी। पण बीं दिन तौ पकड़ीजग्यौ।

हुयौ यूं के मोतीसिंघजी माटसा रै गाम जैतपुरै मेळौ भरीजै आखा माता रौ। लक्खी मेळौ। माटसा'ब हेजळा मिनख जद मिळै तद ई तेड़ै, पण म्हनै ई इतरी टैम नीं मिळै अर यूं बुलावणियौ तौ घणौ ई मोटौ, पण जे आप जायनै डेरा जमाय दौ तौ इण अस्सी रिपियां किलौ दाळ रै जमाना में कीकर पूरवै? सो आंवां-आंवां करता केई बरस टाळ्या। अबकाळै माटसा'ब रै नैनकियै बेटै रौ झड्डूलौ। आखा माता रै चढै, सो केई सौगनां घलाई के बेटी रा बापां, यूं कांई नीवड़ौ, इतरा लालरकियां कराय'र थांरौ ढूंगौ ई को गिनारै नीं। इतरी वेळा तौ जे मिंदर में देवतावां रै सांमी हाथ मांड्या हुवता तौ देवता परकट हुय जावता। छेवट री मारी हामळ भरणी पड़ी।

बरसात रा दिन। रैय-रैय'र पाणी पड़ै। यूं अै दिन फिलमां में चोखा लागै, बाकी आम मिनख तौ तड़तड़ीजतौ ई रैवै। बरसात सरू हुवतां ई अखबार रंगीजण लागै : 'हजारों टन गेहूँ बारिश में भीगा', बिचारौ करसौ। दोरौ दूबळौ हुय'र करसाण करै, देस री हालत आ के छब्बीस परसेंट जनता भूखी सुवै, पण कुण किणनै कैवै अर कांई कैवै। लाल बत्तियां उडती फिरै अर अनाज सड़तौ रैवै। 'बरसात से मकान ढहा, छह मरे' जिसा समाचार अखबारां में कुदड़का मारै। 'बाढ़ से हालात बेकाबू, हजारों बेघर' जिसी हैडलाइनां टीवी माथै दीसै। अबै आप इज कैवौ के आम मानखौ किसौक रांझै में पड़ै। उणरै सारू तौ : मकां मिट्टी का, दरिया का किनारा कटेगी किस तरहा बरसात, ये सोचें' वाळी हालत इज बणी रैवै।

उण दिन सुबै-सुबै ई सूरज जी जळ में इज ऊगा, सो जोड़ायत बोली के अेक पेंट-बुसट थैली में सागै लेय'र जाइजौ। म्हनै कीं घणौ कोड नीं हौ। असल में हथायां थूक बिलोवण रौ दूजौ नांव है, जिणमें सिवाय फिटोळायां, अेक-दूजै री टांग खींचणी अर निंदा रै सिवाय कीं नीं हुवै अर इण खातर इज म्हारै कदैई कोई 'फ्रेंडसर्कल' रैयौ इज नीं। नौकरी सूं घरै अर घर सूं नौकरी में इज घणकरी ऊमर कटी। जोड़ायत नै ई पण ठाह हौ के औ आखौ दिन अठै बैठौ इज खंदाखोळियां करै, सो मोतीसिंघजी माटसा रै उठै जावण रै नांव माथै उण अेकर म्हारै सांमी खरी मीट जोयौ, पण बोली कीं नीं।

उणनै ठाह ही के मोतीसिंघजी माटसा सालस आदमी है, क्यूंकै म्हारै अठै तौ वै केई वेळा आयोड़ा हा, पण म्हैं जाणतौ हौ के 'मोटी आंख फूटण नै अर घणा हेत टूटण नै', सो लिछमण रेखा में इज रह्यौ। टाबरिया अजै सूता इज हा। म्हैं दो कप चायड़ी कंठां ढाळ, सिनान-संपाड़ा कर्‌या। नौ बजियां री बस ही, सो थोड़ी खाथावळ करतां टैम माथै बस-स्टैंड पूगग्यौ। थोड़ी'क ताळ सूं पूंपाड़ करती बस ई आयगी।

'मांडल, नार्‌यानाडा, काळी छांट, आसींद!' खलासी बस ढबतां ई जोर सूं हाक पाड़ी। पैली सूं ई लदयोड़ी बस में चढणौ अेक जुद्ध रै मोरचै जावण जिसौ एक्सपीरियेंस हुवै। ज्यूं-त्यूं धक्का-मुक्की कर'र छेवट बस में चढण रौ तोजौ जमग्यौ। बस में लागोड़ा स्पीकरां में फाटै बांसड़ै रै सुर देसी गाणा बाजण लाग्या। लाग्यौ, जाणै बरणाट उडै। यूं ई म्हनै फेर चढै अर पछै इण बस रा डौळ जीव दोरौ करण सारू घणा ई हा। म्हैं अचकचाय'र पाछौ उतरग्यौ। बस हॉर्न बजाय'र आ जाय- वा जाय। केई बस में चढ्योड़ा म्हनै उतरतौ देख'र मुळक्या ई सही के आज इज बाबूजी रै चामड़ी रै चरड़कौ लाग्यौ, पण म्हैं कीं कान नीं देय'र उण रांझै सूं बारै आयग्यौ। मोतीसिंघजी माटसा कैवता हा के चौरायै सूं जीपां ई पण मोकळी मिळै, सो म्हैं इणी'ज ताक में टैक्सी उडीकण लाग्यौ।

सांमी 'पप्पू चायवाळा' री थड़ी माथै लाग्योड़ी बेंच माथै बैठौ इज हौ के अेक लुगाई खाख में टाबर घाल्यां पईसा मांगण नै आयगी। म्हारै माथै में जाणै बटीड़ उड्यौ। म्हनै अै सगळा मांगणिया हरामखोर इज दीसै। यूं अणजाण मिनखां माथै म्हनै अभरोसौ इज रैवै अर म्हनै लागै, अै आपनै बकरौ बणाय'र मूंड लेवै, सो मंगती नै देखतां ई म्हारै माथै में सळ पड़ग्या। वा ज्यूं-ज्यूं मूंडौ बिलखौ कर'र टाबर रै दूध सारू पईसा मांगती री त्यूं-त्यूं ई म्हैं उणनै धिक्कारतौ रैयौ।

मामोसा कैवता हा के पईसौ कुंबार री चाक जिसौ मोटौ दीखणौ चाहीजै अर म्हनै दीसतौ ई सरी। मांगणिया मिनख लफंगा इज हुवै, आ बात साव साची। इणीज कारण सावचेत रैवणौ बघतौ चोखौ नींतर अै आपांनै कणै ई टोपी पैराय देवै, आपनै बिमरौ ई नीं पड़ै।

म्हैं छेवट दो गाळ काढ'र उण मंगती नै हटाई, ''थूं कांई जाणै? अै छळछिद्दर म्हारै सूं छाना है? टाबरां रै नांव माथै गळै पड़'र पईसौ सूंतण में थे लोग कितरा उस्ताद हौ, म्हनै ठा है। पण म्हैं ई उस्तादां रौ उस्ताद हूं। थां जिसा हरामखोरां नै आछी तरियां ओळखूं, काम-धंधौ कीं करौ नीं अर मिनखां नै चूनौ लगावण रौ हुनर थां लोगां में ऊंडै तांई भर्‌योड़ौ।''

वा लुगाई म्हारौ औ रूप देख'र फीकी पड़गी अर म्हारै सांमी देखती-देखती दूजी कांनी वुईगी।

असवाड़ै-पसवाड़ै रा मिनखां नै ई स्यात् पैली वेळा ठीक लखायौ। वै म्हारै सांमी गर्व सूं देख रैया हा, जाणै म्हैं इज औ सुधार कर सकूं। माहौल खुद रै पख रौ देख'र म्हैं दरसाव रौ उपसंहार कीधौ, ''जे आप थोड़ा'क सावचेत रैवौ तौ आं भिखारियां री समस्या इण देस सूं मिट इज जावै, बदनाम कर राख्यौ है देस नै स्याळा!'' जितरेक अेक जीपड़ी आय ऊभी री।

''नाहरया नाडा, जैतपुरा, आसींद....'' ड्राइवर हाक पाड़ी म्हैं ई पण लपक्यौ। म्हारै सावचेतपणै अर बुद्धिमता रौ इंपेक्ट अजै हौ, स्यात इणीज कारण दो-तीन जणां म्हनै पैली बैठण रौ निवतौ दियौ। म्हनै ई आज लाग्यौ के पढ्या-लिख्या मिनखां नै समाज में बदळाव सारू आगै आवणौ चाहीजै। सगळा ई पाछपगलियां सिरकै, धूड़ है इस्या पढ्या-लिख्यां में। जीप घरघराटौ कर'र सिंगल रोड माथै व्हीर हुई। रस्ता में 'चोखी सरकार' में कांई गुण होवणा चाहीजै अर जिम्मेदार नागरिक कांई हुवै, इण माथै ई चरचावां चालती रैयी।

लगैटगै डेढ बजियां जेतपुरौ आयौ। रिमझिम हुय रैयी ही, फुहार पड़ै। मेळौ भरीज्योड़ौ, सो तळाव रै किनारै च्यारूंमेर मिनखां रौ दरियौ। सड़क रै किनारै टैम्पू, मिनिबसां, ट्रैक्टर अर बळद-गाड्यां छूट्योड़ी। जगै-जगै मिनखां रा हुजूम। ठेलां माथै कुल्फियां, गुडिया रा बाल, पाणी पतासा, भेल। जात-जात रा अर भांत-भांत रा बंधेज, लहरया चुनड़ियां अर केई तरै रा गाबा पैरयां लुगायां रा झूलरा। टाबरया आप-आपरै हिसाब सूं ग्रुप में बंटीज्योड़ा। बड़ला नीचे माताजी रै मिंदर आगै मिनखां रौ रेलौ अर मिंदर रै अड़ोअड़ कंकू, चूंदड़ी, नाळेर, माळावां री दुकानां।

मोतीसिंघजी माटसा रौ घर गांव रै छेलै कानी। झिरमिर थोड़ीक कम पड़ै तौ पछै चालूं, औ सोच'र म्हैं अेक कांनी झाळकी नीचै ठायौ लियौ।

''सा'ब, राम-राम!'' म्हारै पाछै सूं सुणीज्यौ। म्हैं लारै फिरयौ के अेक सितरेक बरस रौ डोकरौ पूरौ भीनोड़ौ, माथै पुराणौ मटिया साफौ, पूरी बायां वाळौ सफेद कुड़तौ, रेजा री पीलूंटी पड़्योड़ी सफेद धोती, धोळी दाढ़ी बीचै सूं दो फाड करयोड़ी, आंख्यां माथै निजर रौ चस्मौ। म्हनै लाग्यौ, के तौ बा'सा कठैई मिल्योड़ा है अर के म्हनै ओळखै। यूं तैसील में गांव वाळां रा काम पड़ता ई रैवै, सो कदैई राज रा दांतां हेठै चिगळिजिया दीसै तद इज म्हैं याद हूं। म्हैं राम-राम रौ जबाब दीधौ।

''आप तौ भीलवाड़ै सूं पधारिया दीसौ।'' बाजी बोल्या।

''हां, फरमावौ।'' म्हैं अणमणै मन पडूत्तर दियौ। म्हनै लागौ डोकरियौ यूं इज गळै पड़ग्यौ।

''कीं नीं सा। आप जिसा मोटा मिनख पधारै तद म्हांरौ मान हुवै नींतर इण गामड़ा में जूण पूरी करां।'' डोकरौ हाथ जोड़तौ बोल्यौ। साफ लाग्यौ के कोई घणौ सालस मिनख है, पण पुगतापणौ अर बिखौ मिनख नै बघतौ भूंडौ कर देवै। म्हनै थोड़ी दया आयगी। डोकरौ पाणी सूं भीज्योड़ौ हौ, सो सीत सूं कांपै।

''बा'सा, ठंड लाग जासी क्यूं भीनौ हौ!'' म्हैं अपणास सूं कह्यौ।

डोकरा रै आंख्यां में पाणी भरीजग्यौ। वौ गळगळौ हुयग्यौ,''सा, आप मोटा मिनख हौ, थोड़ौ'क स्यारौ दिरास्यौ तौ राज री मेहर होसी, नींतर ज्यूं रावळी मरजी।'' डोकरौ धूजतां हाथ जोड़'र कह्यौ।

राज रै इण पोस्ट माथै रैवतां हाथां सूं केई खोटा-खरा काम हुया, पण मन कदैई इतरौ मोळौ नीं हुयौ। म्हैं तेवड़ली के जे इण डोकरा रै कोई जमीं रेवेन्यूं रौ टंटौ हुयौ तौ फैसलौ इणरै हक में इज देस्यूं। इण उमर में अजै ई पण काण-कायदौ अर इसौ वौवारगत मिनखीचारौ आजकालै कठै दीसै।

''बोलौ बा'सा, कांई काम है?'' म्हैं थावस बंधातां पूछ्यौ।

जमीं-जागीरी कोनी सा'ब। अेक छोरौ हौ, सो कांई ठा किण दिस गयौ, आज बीस बरस हुया, पाछौ नीं बावड़ियौ, घणा ई थाणा-कचेड़ी कीधी। अबै म्हैं अर म्हारी लुगाई रैवां हुकम, स्कूल रै लारलै कांनी। वा घणकर मांदी रैवै। दवायां तौ घणी राज मुफत कर दीन्ही, पण तौलड़ी तेंरै आना मांगै होकम। पेट भरण सारू कारीगरी रा काम करूं हूं अर राज जिसा मूंगा मिनख पधारै जणै निजर करूं सो गुजराण चालै।'' वौ हाथ जोड़्यां बोल्यौ।

''कांई कारीगरी करौ बा'सा?'' म्हारौ ई उणरै दु:ख सूं मन भरीजग्यौ।

उण धूजता हाथ सूं कुड़ता री जेब सूं अेक काळै रंग री चिलम काढी। वेंत खाण लंबी, काळौ चमकतौ रंग अर माथै धोळै अर काळै तार सूं गंठियोड़ी। सांचाणी सरूपा चीज। आप जे चिलम नीं ई पीवौ तौ ई घर में सजावै जिसौ आयटम। चिलम माथै सोनेंरै रंग रा बेल-बूंटा। म्हैं ई अचूंभै रैयग्यौ डोकरै री कारीगरी देख'र। अद्‌भुत। अै प्रतिभावां आपां रै गांवां में पड़ी सड़गी अर म्हे टेबलेट अर लेपटॉप लेय'र खुद नै महान समझण लागग्या। धिन अै कारीगर अर अै हुनरमंद।

''अैड़ा तीन-चार नग अेक महीना में त्यार करूं, सो कोई आप जिसा मोटा मिनख आवै जणै निजर करूं'।'' वौ चिलम म्हारै कानी करतौ बोल्यौ।

''म्हैं चिलम हाथ में लेय'र आछी तरयां देखी, पछै लाग्यौ के बापड़ौ डोकरौ घणा दोरा तीन-च्यार नग त्यार करै। इण उमर में दो टैम रोटी कमावण रौ इतरौ दोरौ जतन। म्हैं जेब सूं काढ'र सौ रिपिया डोकरा नै दीधा।

''चिलम दूजा नै बेचजौ बा'सा, थे अै रिपिया राखौ अर इसौ इज धीजौ राखजौ।'' म्हैं कह्यौ।

डोकरौ हाथ जोड़'र बोल्यौ, ''सा'ब, हराब री तौ आज तांई नीं खाधी। आप चिलम मोल लिरावौ। यूं तौ म्हारा हाथ नै खौड़ लागै।''

म्हनै खुद माथै झूंझळ आई के औ कोई मंगतौ है? जिणनै के भीख में पईसा देय'र राजी व्हेऊं? अै पुरसारथ करणिया टैम नै खुद रा पग रै बांध'र ठिरड़ै जिसा है। म्हनै खुद माथै थोड़ी सरम ई आई।

''वा, थांरौ मन राजी राखौ बा'सा, कितरा री है आ चिलम?'' म्हैं पूछ्यौ।

''सा, पच्चीस रिपिया, म्हैं जितरा लागै वितरा इज लेवूं, हमनाक रौ पईसौ हराम है म्हारै।'' डोकरौ बोल्यौ।

म्हैं जेब सूं पच्चीस रिपिया काढ'र डोकरा नै दीधा अर चिलम लेय लीधी। म्हैं कन्फर्म हौ के जे अैड़ो पीस आप शो-रूम सूं लेवौ तो डोढ सौ-दोय सौ सूं कम नीं मिळै।

डोकरौ हाथ जोड़ राम-राम कर पाछौ मेळै कांनी मुड़ग्यौ। इतरै में तौ मोतीसिंघजी माटसा आवता दीस्या। ''अरे भला मिनखां, अठै कांई ऊभा? घर कितरोक आगौ? किणनै ई पूछ लेवता!'' वै बोल्या।

''झिरमिर वेय री ही, सो म्हैं देख्यौ, छांटा ढबै तौ निकळूं।''

''वा आयगा, निहाल हुया, नींतर थे मूंगा घणा।''

बातां-चीतां करता व्हीर हुया।

''किसौक लाग्यौ म्हारौ गांव?'' मोतीसिंघजी मुळक्या।

''घणौ चोखौ। मिनख पुरसारथी है इण गांव रा'' कैय'र म्हैं जेब सूं चिलम काढतौ बोल्यौ, ''म्हैं तौ सैनाणी ई पण मोलाय लीधी।''

मोतीसिंघजी चिलम देख'र ढबग्या। पैली चिलम हाथ में लीधी, पछै म्हारै सांमी जोयौ अर कह्यौ, ''आपनै इण पुरसारथी सूं पाछौ मिलाऊं, चालौ!'' दो-तीन मिनट चाल'र अेक गळी में बड़्या। गळी रै छेलै खुणै देसी दारू रौ ठेकौ हौ। म्हैं अर मोतीसिंघजी थोड़ा आगा ढबग्या। वौ इज डोकरौ ऊभौ। उण अेक थैली देसी दारू लीधी, जेब सूं पईसा काढ'र ठेकावाळा नै दीधा अर थैली मूंडै सूं लगाय'र गट-गट पीयग्यौ। म्हैं अचूंभै में जड़ ऊभौ। डोकरौ फट थैली फेंक मूंडौ साफ कर गळी रै उण कांनी सूं निसरग्यौ। माटसा म्हारौ हाथ खांचतां लारै-लारै लेयग्या। गळी सूं निकळतां ई डोकरौ साफ आगै जावतौ दीसै। डोकरौ मेळै कांनी जाय रह्यौ हौ। म्हैं बगनौ हुयोड़ौ मोतीसिंघजी माटसा रै सागै-सागै जाणै बां सूं बंध्योड़ौ घिसटतौ चाल रह्यौ हौ।

डोकरौ मेळै में लाग्योड़ी दुकानां रै पाछली कांनी गयौ। म्हैं दोई लारै रा लारै। डोकरौ अठी-उठी जोय'र अेक दुकान, जिणमें मोलेला रा मृणशिल्पियां रौ सामान मेळा में बिकण सारू भरयोड़ौ हौ, री अेक पटखड़ी ऊंची कर'र दो-तीन चिलमां काढ'र जेब में मेली अर पटखड़ी बिसी'ज पाछी सावळ लगाय'र मेळै में दूजी कांनी अलोप हुयग्यौ।

''औ नाराणियौ उस्ताद है, अेक नंबर रौ अल्लाम। घर में रांड रोवण नै नीं अर डोबौ दूवण में नीं। छड़ौ है। अणजाणियां नै टोपी पैराय'र दारू रा पईसा पटकावणा, औ इज उणरौ धंधौ है।'' माटसा मुळकता थका बोलता रह्या अर म्हैं हेंप सूं मूंडौ खोल्यां उण कांनी देखतौ रह्यौ, जठीनै नाराणियौ उस्ताद अलोप हुयौ हौ।

❖❖

डी-5, टाइप-3
महाराणा भूपाल हॉस्पिटल कैम्पस
उदयपुर (राजस्थान)-313001

● *कहाणी*

तूटती लीकां

हरदान हर्ष

गांव रै बीचाळै जूनी मुमंजली चौमेरी हवेली अर चारूंमेर काचा-पाका ढूंढा, गांव-बस्ती रा। सरपंच प्रभातीलाल आपरी हवेली री छत सूं गांव रौ दरसाव करै हौ।

सरपंच चौफेरूं चोर निजरां घुमाई अर देख्यौ कै किणी री निजर तौ उण पर नीं है। कोई मिनख निजर नीं आयौ तौ वौ अेक ठौड़ खड़ौ होय'र देखण लाग्यौ।

उण री निजर नायकां रै घरां माथै जमी। गांव में नायकां रा कुल तीन घर। अेक घर अजमेर में नौकरी-धंधौ करै। तीज-त्यूंवार, ब्याव-सावै ई उण में अठै कोई आवै। अर वोटां री टेम सरपंच जीपड़ी भेज'र सगळा परिवार रा सै वोटरां नै बुलाय लिया करै। बाकी दो घर अठै गांव में बस-स्टैंड पर आपरौ पुस्तैनी धंधौ करै।

सरपंच री निजर अेक घर माथै जमगी ही। बिलगणी पर लत्ता सूख रैया हा। नुंवौ गुलाबी दुपट्टौ। कबूतरी रंग रौ पंजाबी सूट। सरपंच रै मन में वासना रौ सरप कुळबुळायौ। अठै गांव में कुण नुंवी नवेली नार आयगी? कीं ठा नीं। वौ हेलौ पाड़्यौ, ''रामला.... ओ रामला!''

नीचै सूं आवाज आई, ''जी मालिक।'' रामलाल रोट्यां साटै अेक टहल-चाकरी करणियौ बंधुवा मजूर। उणरै नीं कोई आगै, नीं पाछै।

सरपंच कैयो, ''अेक बार ऊपर आइजै।''

रामलाल झट छत पर पूगगौ। कैयौ, ''बोलौ, मालिक!''

सरपंच बिलगणी कांनी आंगळी कर पूछ्यौ, ''देख, बठै नुंवा कपड़ा, नुंवी चलण रा। गांव में कुण ओपरौ मिनख आयग्यौ?''

''बठै, अजमेर वाळा सा'ब री बहू अर बेटौ आयोड़ा है। सुणी है कै बेटौ अेम.अे. पास अर बहू बी.अे. है।''

''हूं.... अ....'' कैवता थकां सरपंच कैयौ, ''ठीक! तूं नीचै जा।''

सूरज दो रास भर चढ आयौ हौ। हवा बंद ही। सूरज में तेजी। धाम तेज। सरपंच दाढी सैलावतौ नीचै उतर्‌यौ। वौ सीसा में आपरौ चैरौ देख्यौ।

अधेड़ दाढ़ी खीचड़ी ही। आधी धोळी। धोळा बाळ कीं बत्ता ई बढ रैया हा। वौ दाढ़ी पर हाथ फेर्‌यौ। दाढ़ी रा खूंटा हाथां में चुभ्या। वौ माथै सूं पागड़ी उतारी। माथै रा बाळ झूंतरा लाग्या। माथै रै अगाड़ी रा बाळ आधा ई रैयग्या। बिचाळै कीं छीदा।

सरपंच अणमणै भाव सूं पागड़ी पैरनै हवेली सूं निकळ्यौ। सीधौ बस-स्टैंड पूग्यौ। कैलास नायक री दुकान पर भीड़ ही। वौ भन्नायौ, ''कांई कैलास्यां? जद देखौ भीड़। लागै, गांवआळां नै और कीं धंधौ नीं। सगळा अठै बस-अड्डै ई भेळा मिळै।''

कैलास खुसामद करतौ बोल्यौ, ''नमस्कार सरपंच सा'ब! धंधौ तौ यूं ई चालसी। थे पैली आवौ।''

तौलियै सूं कुड़सी झाड़तौ अगवाई करतौ वौ आगै कही, ''बैठौ! सतवीर रौ कांई? वौ थोड़ी देर इंतजार कर लेवैगौ।''

झट सतवीर बोल्यौ, ''चाचा, यो कांई नेम? थूं धंधौ करै। थारै वास्तै तौ सगळा कस्टमर बराबर।''

कैलास दबी आवाज में कैयौ, ''सतवीर, थूं जाणै नीं। अै आपणै गांव रा सरपंच सा'ब है।''

सरपंच ताव में कैयौ, ''अठै गांव में औ नुंवौ कस्टमर कुण आयग्यौ?''

जी हजूरी करतौ कैलास बोल्यौ, ''कीं नीं सरपंच सा'ब, थे बैठौ। औ सतवीर है। सुगना चाचा रौ छोटोड़ौ बेटौ। अठै गांवां री दसा माथै सोध करण वास्तै अजमेर सूं आयौ है।''

सरपंच पिघळ'र मोम। सतवीर नै बगल में लेय'र कैयौ, ''अरे, वा! भाई सुगना रौ डावड़ौ अबै इत्तौ बडौ होयग्यौ। सैर में रैय'र तेज भी।''

बैंच माथै बैठता थकां सरपंच कही, ''कीं नीं कैलास्या। म्हैं बैठूं हूं। थूं पैली आपणै सतवीर रा बाळ बणा।''

सतवीर कुड़सी पर बैठगौ हौ। कैलास मनोमन राजी होवतौ उणरा बाळ बणावण लागौ। सरपंच पाछै बैंच पर बैठ्यौ ऊंडा सोच में हौ। छोरा-छपाटा मुदरा-मुदरा मुळकता दुकान सूं बारै निकळग्या।

आ गांव री अेक नेन्ही-सीक घटना ही। पण, केई मायनां में पैली-पैली। पैली बार गांव में किणी नेम-कायदां री बात करी। पैली बार धंधै में कस्टमर री बात करी। धंधौ करणवाळै मिनख वास्तै सगळा ग्राहक बरोबर व्है। नीं कोई छोटौ अर नीं कोई मोटौ। पैली बार किणी कही, ''धंधा में सगळा कस्टमर बराबर।''

बातां फगत कैवीजी ईज कोनी, अमल में ई आई। कैलास री दुकान में पैली बार सरपंच बैंच माथै बैठौ इंतजार कर रैयौ हौ। गांव में पैली बार अेक नायक रौ डावड़ौ आपरी बारी रै हिसाब सूं बाळ बणवा रैयौ हौ। अेक लीक तूटी। कैलास कीं नीं समझ्यौ। उणरै वास्तै तौ गांव में औ अेक चमत्कार हौ।

सतवीर सैर री प्रगतिवादी सोच में रच्यौ-बस्यौ मिनख। समाजशास्त्र रौ सोधारथी। उणरै वास्तै नुंवौ कीं नीं। सरपंच झूठी मुळक ओढ्यां घायल सेर ज्यूं आहत हौ। वासना रा काळा नाग सांम्ही पुस्तैनी सिंघ घायल। आपणै ई जाळ में फंस्यौ सरपंच सतवीर रै नैड़ौ आवण री जुगत में हौ। वौ बात रौ सिरौ निकाळ्यौ, ''सतवीर, भाई सुगना रा समाचार सुणा। वौ म्हारलौ खास आदमी है।''

सतवीर सहज में कैयौ, ''ठीक है।''

''आजकाल कांई करै?''

''रिटायर व्हेय'र पेंसन पर आयग्या। अबै समाज-सेवा करै।''

सरपंच कीं डरग्यौ। बेटौ अठै गांवां री दसा माथै सोध करै। बाप समाज-सेवा। बहू अर बेटौ, दोन्यूं पाछा गांव में।

सरपंच बीड़ी निकाळी। चास'र दोय सुट्टा मारग्या। धुंऔ दुकान में फैलग्यौ हौ। सतवीर री आंख्यां में धुंऔ चुभ्यौ। वौ बोल्यौ, ''सरपंच सा'ब, बुरौ मत मानजौ। दुकान पब्लिक प्लेस है। बीड़ी बारै पी'र आ जावौ।''

बात सरपंच रै तीर-सी चुभी। काळजै में दरद धुंऐ ज्यूं फैलगौ। उणरै वास्तै ऊठणौ भारी हौ। सरपंच सै पीगौ। वौ बीड़ी नै जमीं पर मसळतां कैयौ, ''लागै, सतवीर थूं बीड़ी-सिगरेट नीं पीवै। लै बीड़ी'ज बुझाय दूं।''

सतवीर कैयौ, ''धन्यवाद, सरपंच सा'ब!''

कैलास नायक मन ई मन हंस्यौ। वौ विचारग्यौ— काकौ सुगनौ ठीक ईज कैवै— पढ्या-लिख्या मिनख। बाकी सै अड़ावा। सतवीर पढ़-लिखग्यौ। पढ्यां अकल आवै। खरी-खोटी अर चोखी-भूंडी बातां री समझ आवै। कुपढ़ गांव भीगी-बिल्ली बण्यौ फगत जी-हजूरी करतौ बरबस लागै।

सतवीर रा बाळ बणगा हा। वौ जेब सूं बीस रिपियां रौ नोट निकाळ्यौ तौ कैलास टोकतौ बोल्यौ, ''औ कांई करै सतवीर? म्हैं थारै सूं पईसा नीं लेवूं। थूं तौ म्हारलौ घरू आदमी है।''

सरपंच टेर में टेर मिलाई, ''सतवीर, थूं गांव री रीत नीं जाणै। अठै घरआळां सूं पईसा नीं लिया करै।''

सतवीर नीं मान्यौ, बोल्यौ, ''नीं, आ तौ गलत रीत है। धंधा में कोई सगौ नीं व्है। घोड़ौ घास सूं यारी करैला तौ खावैला कांई?''

कैलास नरम पड़गौ हौ अर सरपंच चुप्प। सतवीर उण बीस रै नोट नै कैलास री सांमली जेब में ठूंस दियौ हौ।

कैलास मुळक दियौ। उण मुळक में मिठास ही। आणंद।

ज्यूं सूरज उगाळी साथै अंधारौ सिंवटण लागै, त्यूं सतवीर अर उणरी घरआळी किरण रै गांव में आवण सूं चेतना रै ऊजास री झलक रैयी ही। पढ्या-लिख्या लोगां, नवजवानां, औरतां अर टाबरां में वांरी पैठ जमण लागगी।

औ सांच कै जठै चांदणौ व्है वठै अंधारौ नीं टिकै। जठै नुंवी सोच, नुंवी चेतना व्है, वठै जूनी लीकां नीं रैवै। वै बाळू रेत री भींत ज्यूं आपैई ढेय जावै। बस रस्तौ बतावण सारू अेक मसालची चाहिजै।

सतवीर अर किरण गांव में मसाल बण'र आया। अेक दीठ सागै। सतवीर नै युनिवर्सिटी सूं 'गांव री दसा अर दिसा' माथै सोध सारू मंजूरी मिलगी ही। फील्ड वर्क सारू वौ आपरी जड़ां नै टंटोळै हौ। किरण प्रौढ़-शिक्षा, नारी शिक्षा अर स्वास्थ्य री जागरूकता सागै वैग्यानिक सोच नै बढावौ देवण सारू गांव में लागी ही।

दस दिन व्हैगा हा। फोन माथै बात हुई। युनिवर्सिटी सूं जरूरी डाक आणी ही। चार दिन में तौ डाक आणी चाहिजै। बात करतां दोन्यूं अचरज कियौ कै गांवां में डाक आवण मांय इत्तौ टाइम लागै।

सतवीर अर किरण आपरै घर रै सांम्ही मुढ्ढा माथै बैठा हा। सांझ री बगत, चाय री चुस्की लेवता थकां। सतवीर री निजर पड़ी, सांम्ही गळी सूं सरपंच आवतौ दीख्यौ। हाथ में अेक लिफाफौ हौ। सतवीर बोल्यौ, ''किरण जाणौ हौ इण आदमी नै?''

''हां, जाणूं अर पिछाणूं हूं। गांव रौ सरपंच है, लारला बीस बरसां सूं। सामंतवाद रा खंडहरां पर अेक नुंवौ महल।''

किरण री उपमा पर सतवीर हंस्यौ। वौ बोल्यौ, ''थूं ठीक समझी। सामंतवाद रा खंडहरां पर अेक नुंवौ महल। पंचायती राज में गांव रौ पैलौ सरपंच प्रभातीलाल रौ बाप हजारीलाल हौ। जीवियौ जित्तै सरपंच। मरियौ तौ सरपंची बेटै रै माथै। पिताजी बताया करै कै आजादी सूं पैली हजारीलाल रौ बाप गांव रौ मुकादम हौ। नवाब रौ खास आदमी। अठै पीढी-दर-पीढी अेक ईज परिवार रौ राज चल रैयौ है।''

अेक लंबी सांस लेवतौ सतवीर आगै कैयौ, ''खैर, जाहिर हौ कै प्रभातीलाल गांव में नाता सूं चाचौ लागै। अदब गांव री पिछाण।''

किरण समझी। वा सलवार-सूट में ही। घर में जाय'र वा माथै चुन्नी ओढ बारै खड़ी होयगी। सरपंच चौक में पूग्यौ। सतवीर ऊठ'र सत्कार कर्‌यौ। किरण बोली, ''नमस्ते चाचाजी!''

''नमस्ते!'' कैवतौ थकौ सरपंच हाथ रौ लिफाफौ सतवीर नै थमाय दियौ।

सरपंच किरण नै सावळ देखण सारू ईज डाक रै बहानै आयौ हौ। पण किरण रै चाचाजी संबोधन सूं रिस्तै री काण में वौ लजायगौ।

धन्यवाद रै सागै सतवीर बोल्यौ, ''बैठौ सा!''

''नीं, काम सारू आगै जा रैयौ हूं।'' कैवतौ थकौ सरपंच पाछौ मुड़्यौ।

जावती बगत सरपंच कैयौ, ''सतवीर, थारै घर-गुवाड़ में सफाई तौ गजब री है। देख'र चोखौ लाग्यौ।''

हाथ जोड़'र सतवीर मुळक दियौ। सरपंच आगै बधग्यौ। किरण अर सतवीर चाय पीवण लाग्या।

सतवीर लिफाफौ देख्यौ। युनिवर्सिटी सूं ई आयौ हौ। तहसील रै डाकखाना री मोहर तीन दिनां पैली री ही। वौ बोल्यौ, ''देख किरण, तहसील सूं अठै गांव तांई डाक आवण में तीन दिन लागग्या।''

''अर, डाक गांव रौ डाकियौ नीं, गांव रौ सरपंच पुगाय रैयौ है।'' कैय'र किरण हंसण लागगी।

सतवीर कैयौ, ''इण व्यवस्था नै ई सोधणी पड़सी।''

चाय खतम हुई ईज ही कै कैलास वांरै घरै आयगौ। किरण खाली कप उठाय'र रसोई में गई परी ही। मुढ्ढा माथै बैठता थकां कैलास बोल्यौ, ''और, भाई सतवीर! बोल, घर गिरस्थी ठीक तरै जमगी?''

''हां, चाचा।''

''किणी बात री जरूत?''

''नीं।''

''होवै, तौ सरमाइजै मत।''

''ठीक।''

किरण पाणी लेयनै आई। सतवीर चाय री कही। पण, कैलास नटग्यौ, ''नीं भाई! औ टाइम चाय रौ नीं। ब्याळू रौ बगत होय रैयौ है। घरां जाय'र ब्याळू करस्यूं।''

सतवीर बोल्यौ, ''अेक बात बता, चाचा।''

''बोल।''

''औ लिफाफौ तहसील में तीन दिन पैली पूगग्यौ हौ अर अठै गांव रौ सरपंच देय'र गयौ है।''

''सतवीर, डाकियौ गांव में दो-तीन दिन छोड'र ईज आवै। हफ्ता में दो-तीन बार। डाकियौ आवै तौ सरपंच रै बेटै उदय परचून री दुकान पर सगळी डाक छोड जावै। आखौ गांव जरूत री चीजां उदय री दुकान सूं ईज खरीदै। जद कोई दुकान पर सौदा सारू आवै, तौ उणरै हाथ डाक पूगै। बाकी उदय अर सरपंच री मरजी।''

''चाचा, औ सै गलत है। डाकिया नै डाक बगतसर सही ठौड़-ठिकाणै पुगाणी चाइजै।''

''भाई सतवीर, इण बात माथै कदैई कीं गौर ई नीं कियौ।''

''इण बाबत म्हैं तहसील में पोस्ट-मास्टर सूं मिलूंला।''

कैलास राजी हुयौ। ऊठतौ थकौ बोल्यौ, ''सतवीर, थूं पढ्यौ-लिख्यौ माणस। अबै गांव में डाक ठिकाणै बगतसर पूग जावैला।''

लालटेन री रोसणी में किरण 'जच्चा अर बच्चा रौ स्वास्थ्य' पोथी पढ रैयी ही। सतवीर लिफाफौ खोल्यौ। सोध सारू यू.जी.सी. सूं वजीफौ मंजूर होयग्यौ हौ। आ खबर पढ'र दोन्यूं राजी हुया।

ब्याळू करनै सतवीर अर किरण सोवण सारू छत पर पूग्या। दोन्यूं देख्यौ, आधौ गांव अंधारा में डूब्यौ हौ। औ अंधारौ बहुजन-समाज सारू हौ। बहुजन समाज में वै लोग जिका नित खटै अर आपरौ पेट भरै। बाकी गांव में चानणौ हौ। उजास! बिजळी रौ अर लिछमी रौ।

सतवीर री पीड़ उभरी, ''इण गळी में बीस घर है, पण लोगां में बिजळी रा दो खंभा रौ खरचौ उठावण री हिम्मत ई कोनी। गांव में बिजळी होता थकां ई सै बिजळी सूं महरूम।''

किरण कैयौ, ''बिजळी होवती तौ आपां नै पढण-लिखण री सुविधा होवती। डिस टीवी लगाय लेवता। दीन-दुनिया री खबर रौ पतौ रैवतौ। गरमी में पंखा री सुविधा ई होय जावती।

''अचरज! पंचायत ई इण बाबत आं गरीबां री मदद नीं करी।''

''थे बात करौ, सरपंच सूं।'' कैवती थकी किरण री आंख्यां नीला आकास में जमगी। कुदरत री छब में अंधारै रौ अेक फायदौ लाग्यौ। गैरा नीला आकास में तारा मोतियां ज्यूं चमकै हा। जगमग करता सै रौ अैड़ौ दरसाव कठै।

सतवीर तारां में गमग्यौ। ठंडी पवन। गैरौ सरणाटौ। नीलौ आकास। लुकमीचणी करता नैना-नैना तारा। अर, पसवाड़ै आकास में खोई किरण।

गांव में सोतौ पड़ग्यौ हौ। सतवीर अर किरण, दोन्यूं धणी-लुगाई सोवण री त्यारी में हा कै पाड़ौस रै अेक घर में कूका-रोळौ हुयौ। मारा-मारी। रोवणौ-चिरळावणौ। अेक लुगाई सागै कीं टाबरां री जोर सूं रोवण री आवाजां आय रैयी ही। वै देखण-सुणण लाग्या। अेक आदमी री बिखरी-बिखरी आवाज में गंदी-गंदी गाळियां। रोवणौ-चिरळावणौ। रैय-रैयनै धमीड़ां री आवाज।

सतवीर अर किरण कीं नीं समझ्या। आखती-पाखती छतां पर सोवता लोग खड़ा होय'र औ चाळौ देख रैया हा। सतवीर हेलौ पाड़्यौ, ''सुगना काका!''

पाछी आवाज आई, ''हां, सतवीर।''

''औ कांई हो रैयौ है?''

''कीं नीं सतवीर। थे सोय जावौ। औ घीस्या रै घर रौ आयै दिन रौ चाळौ।''

''आयै दिन क्यूं?''

''घीस्यौ आग में मूतै। वौ अनीति पर चालग्यौ। कदै-कदाच छोटौ-मोटौ काम करै अर जिका पईसा आवै उणरी दारू पी जावै। कीं तौ खांडा भोटा अर कीं धव चीकणा। अेक तौ दारू री लत बुरी, ऊपर सूं गांव-गांव, गळी-गळी दारू री दुकानां खुलगी। वौ आयै दिन दारू पीय'र घर में घमसाण करै। लुगाई-टाबरां माथै अन्याव करै, वांनै मारै-कूटै, जुलम करै। लुगाई बापड़ी गरीबणी है। कीं हिल्लौ करनै टाबरां नै पाळै।''

''तौ पाड़ोसी घीस्या नै कीं नीं कैवै?''

''भाई, अबै गांव में बोलणिया नीं रैया। कीं नीं कैवण रौ जमानौ है। बळती आग में कुण पग धरै। औ दस-पंदरै मिनट रौ तमासौ है। देख-सुण'र सगळा सोय जावैला।''

सुबै री बगत, सतवीर बस-स्टैंड माथै ऊभौ हौ। तहसील जावणवाळी बस रै वास्तै। आधा घंटा सूं बस नीं आई।

सतवीर नै चाय री तलब हुई। घड़ी देखी। सात बज्या हा। चाय री दुकान हाल नीं खुली ही। घणकरी दुकानां बंद ही। बस-अड्डै रै डावै किनारै अेक दुकान खुली ही। छः सात जणा वठै निजर आया। वौ उण कानी बधियौ। ओह.... आ है दारू री दुकान। दिनूंगै-दिनूंगै ई आ खुल जावै। बदळता गांव री दसा देख'र सतवीर नै घणौ दुख हुयौ।

गांव में अठै अबै दूध-चाय नीं, दारू मिळै। लोग अबै दारू रौ कलेवौ करण लागग्या, मुड़दगी ओढ्या चैरा पढतौ-पढतौ सतवीर पाछौ बस-स्टैंड पर आय'र ऊभग्यौ।

आठ बज्यां बस आई। सतवीर तहसील पूगौ। बजार रौ काम निपटाय'र पोस्ट-मास्टर, प्रधान, बी.डी.ओ. अर विधायक सै सूं मिल्यौ। सांझ पड़्यां सतवीर पाछौ आयौ।

सिंझ्या रा बस-अड्डै पर आछी रंगत ही। लोग दो जगां तास पीटता हा। कीं चाय री दुकान पर बैठा टाइम-पास करता हा। दारू री दुकान माथै भीड़ ही। माचां पर बैठा लोग दारू पी रैया हा। अबै गांव में बूढा-बडेरां री कीं लिहाज-सरम नीं ही। नीं कोई आंकस।

सतवीर बस-अड्डै रौ चक्कर लगाय'र अेक ठौड़ खड़ौ होयग्यौ हौ। अधेड़ उमर रा लोग उठै चौपड़ रमता हा। पौ-बारा अर पच्चीस। काची-पाकी पिटती स्यारियां। सतवीर चोपड़ रै खेल में गांव री दसा रौ दरसाव कर रैयौ हौ कै अठै किणरी पौ-बारा है।

कीं समै पछै सरपंच री जीप आई। लोग खेल छोड'र ऊभा होयग्या। सतवीर सरपंच नै नमस्ते करी।

मोरां पर हाथ धरनै सरपंच पूछ्यौ, ''गांव रा नुंवा कस्टमर रा कांई हाल है?''

सतवीर मौका रौ फायदौ उठायौ। बोल्यौ, ''चाचाजी, अबै नुंवा कांई! अठै रच-बसग्या। थांरी मेहर, पण म्हारला घर-गळी में हाल तांई बिजळी नीं। कीं व्यवस्था करज्यां सरसी।''

सरपंच सजग हुयौ। कैयौ, ''भाई सतवीर। लारला दोय बरसां सूं थारी गळी रा लोगां नै कैय रैयौ हूं कै सगळा मिलर दो पोलां रा पईसा भेळा करल्यौ। पण अजै तांई कीं नीं हुयौ। बोल, म्हैं कांई करूं?''

सतवीर बोल्यौ, ''थे पंचायत रा बजट सूं सहायता कर सकै हा। म्हैं आज पंचायत समिति में बजट री तपास करी ही।''

सरपंच सतवीर रौ इसारौ समझग्यौ हौ। वौ नंगौ होवण सूं डरग्यौ। गिरगिट री तरै रंग बदळतौ वौ बोल्यौ, ''ठीक भाई सतवीर, थारै खातर कीं व्यवस्था करणी पड़सी।''

सतवीर फगत मुळक दियौ हौ।

महिना-भर में पूरा गांव नै बिजळी मिलगी ही। सतवीर अर किरण गांव रा युवा नायक बणगा हा।

आगला पंचायत रा चुणावां में गांव रै सरपंच रौ पद महिला वास्तै सुरक्षित व्हैग्यौ हौ। किरण निर-विरोध गांव री सरपंच चुणीजगी। पैली महिला सरपंच। तूटती लीकां साथै अेक नुंवौ रस्तौ बण रैयौ हौ। प्रगति अर समता रौ।

❖❖

अे-306, महेश नगर, जयपुर-302015
मो. 9785807115

● *कहाणी*

अंधारौ

रीना मेनारिया

उण रात घणी गरमी ही। रात आधी बीतण आई। लारला सगळा घरां में लोग सूता हा, पण अठै नींद रा पगल्या नीं पड़्या हा। डोकरौ अर डोकरी दोनूं आप-आपरा गूदड़ां में दब्योड़ा बातां करै। डोकरौ, डोकरी सूं पूछै, ''सूती है कै जागै नान्या री मां?''

''जागू हूं, अबै किंकर नींद आवै नान्या रा बापू!''

''अरे बावळी! थूं क्यूं टेंसन करै है। कांई 'ज नीं होसी म्हारै। डागदर भगवान सूं मोटा नीं हुया करै। डागदर कैय दियौ अर थे मान लियौ। अरे! कांई 'ज नीं होसी म्हारै.... ।'' डोकरौ सैं जाणतौ-बिणतौ ई डोकरी नै समझाय रैयौ हौ।

डोकरा नै आछी तरै सूं ठा ही कै अबै वौ घणा दिनां रौ पांवणौ कोनी, पण कांई करै, डोकरी नै ज्यूं-त्यूं थावस देवै। डोकरी आंसूड़ा सूं सिरहाणा नै आलौ कर दियौ। आखौ जमारौ लड़-झगड़ नै काट दियौ, उमर ढळ्यां पछै कठै डोकरा नै मती आवती, पण ऊपर आळा री लीला तौ देखौ, वा ई उणसूं देखी नीं जावै ही।

डोकरा रै सरीर में अैड़ी बैमारी घर घाल्यौ कै अबै मर्‌यां ईज छूटकौ होसी। आ बात मोटा डागदर साव-साव कैय दी ही। बैमारी ई अैड़ी कै उणरौ नांव सुणतां ई सरीर में धूजणी छूट जा।

डागदरां ई जबाब दे दियौ अर साव-साव कैय दियौ कै अबै मरीज नै बचायौ नीं जा सकै। औ सुण 'र बेटा रै मुंडा रौ रंग धोळौ पड़्ग्यौ। वौ मां सूं आ बात छानी राखण री घणी कोसिस करी, पण.... पण.... डोकरी नै ठा पड़्गी।

आखौ दिन घर में मिनखां रौ तांतौ लाग्यौ रैवतौ। अेक जावै नै दूजौ आवै। डोकरा रा हालचाल पूछै, बेटा-बहू अर डोकरी नै विसासै। कोई-कोई तौ नित-नुंवी भळावण देय जावै, नुंवी दवाई बताय जावै। आवा आळा रै सांम्ही जो कोई चोपड़ी राखौ तौ रोज सल्ला-सूत रा केई कागज भराई जावै।

दिन में जीव री बात करण रौ मौकौ ईज नीं मिलै। ज्यूं दिन निकळै, त्यूं डोकरी नै मौत नेड़ै आवती दीसै। डोकरी-डोकरा सूं बोली, ''नान्या रा बापू! सोय जावौ, रात आधी बीतण आयी।''

''हां! मालकण, सूवणौ तौ है ईज, लांबी नींद सूवणौ है.... पण, उणसूं पैली म्हैं थारै सूं हाथ जोड़'र माफी मांगू.... थारी उडी नींद साव-साव बतावै है कै थारै सूं कीं छानौ कोनी दीसै। थूं जाणगी है कै म्हैं घणा दिनां रौ पांवणौ नीं हूं।''

''....।''

भगवान म्हनै माफ करदै, माफी जोगौ म्हैं नीं हूं.... थनै घणौ दुख दियौ। ऊपर आळौ म्हनै म्हारा पापां री ईज सजा देय रेयौ है.... धणी तौ प्यारी रौ मरयौ अर रंडापौ थें काट्यौ.... उण लुगाई रै खातर म्हैं थनै कांई-कांई दुख नीं दियौ.... थारै कदैई टीकी-काजळ नीं ल्याव्यौ अर उण लुगाई नैं सोना सूं जड़ी राखी....।''

''अबै जूनी बातां भूलौ आगी, याद करबा सूं कांई फायदौ....।''

''किंकर भूलूं? ईस्वर तौ म्हनै कदैई माफ नीं करसी अर उणरै दरबार में म्हारै जैड़ा पापियां री सुणवाई तांई नीं होवै है, पण नान्या री मां! म्हनै माफ करदै।''

डोकरी उठ'र डोकरा रै नैड़ै आय'र बैठी। उणनै विसासवा लागी अर अणजाण बणती कैवा लागी, ''क्यूं बेकार में कळपौ हौ थें! कांई'ज पाप नीं करयौ आप। पाप तौ आगलै भौ म्हैं करयौ दीसै.... जदैई म्हारै सूं ऊपर आळौ बुढापा में साथ छिणै है।''

डोकरी नै उण वेळा अेक-अेक बात याद आवती जावै कै अपणै जीवण री नानपणै ईज उणरौ बाप संसार री मोह-माया सूं मुगती लेय'र रामसरण व्हैगौ। पछै घर में वा अर उणरी मां दोनूं रैयग्या। खावा रा ई फोड़ा पड़े पण धीरै-धीरै उणरी मां संभळै। सगळा दुखां नै भूल वा बेटी रै खातर अेक मरद री नाई खेत जोतवा लागी, बैरां सूं रैं'ट खेंचती अर ज्यूं-त्यूं कर आपरा दिन काढती।

डोकरी री आंख्यां रै आगै पाणी री धार ज्यूं बीत्या दिन बैवण लागा कै धीरै-धीरै वा टाबरी ब्याह जोगी व्हैगी अर उणरौ ब्याह भी कराय दियौ। धणी नीं रैयौ तौ कांई होयौ, वा खानदानी अर इज्जत आळै घर री बहू ही। इण वास्तै बेटी रै ब्याह में कीं अड़चन आयी कोनी।

उणनै आछी तरै सूं याद हौ, जद वा इण डोकरा रै सागै ब्याव नै आई तद उणरी उमर पंदरै बरस री ही अर डोकरा री सतरै बरस री ही। पीयर में बाप रै नीं होवण सूं बाळपणौ तौ दुख में ईज निकळ्यौ। पण, वा सासरा रा केई सुपना देखती कै सासरै तौ सुख सागाणी मिलसी। क्यूंकर उणरी साथणां कैवती कै जिणरै पीयर में सुख होवै उणनै सासरा में दुख भोगणौ पड़ै है, पण पीयर में जो दुख रा दिन काटै, उणरै सासरै सुख मिल्या करै।

सासरै आयनै उणी जाण्यौ कै साथणां री कैयोड़ी बातां तौ बातां ईज रैयगी। सासरा में पईसा-कौड़ी री कीं कमी कोनी ही। जमीदारौ ई चोखौ हौ। उणरौ धणी घर रौ अेक ईज बेटौ हौ, पछै किणरी कमी? पण, कमी ही उणरा जीवण में। वा फगत अेक ईज कमी ही कै धणी जीव रौ नीं। धणी तौ अेक पाड़ोसण सूं लाग्योड़ौ हौ।

उणनै याद आयौ कै पाड़ोसण प्यारी उणरा खेतां में काम सारू आवती। दीखण में रूपाळी इतरी कै देखण आळौ अेकर तौ आपणौ सै काम छोड'र देखतौ ईज रैय जावै। डोकरी

नै आछी तरै सूं याद हौ कै उणरौ ब्याव हुयां पछै ई उणरौ धणी प्यारी सूं छेटी नीं होय सक्यौ। वौ उणनै निरखतौ-निरखतौ इतरौ बावळौ व्है जावतौ कै उण रा हळ जुत्या रा जुत्या रैय जावता अर तावड़ै ऊभा-ऊभा बापड़ा बळदां रै मुंडै झाग आय जावता।

औ सगळौ देख डोकरी रै काळजा पै सांप लोटण लागता, पण वा कांई 'ज नीं बोलती। प्यारी सूं उणरौ धणी ई परेसान हौ।

अेकर प्यारी आपरै धणी सूं पिंड छुडा लियौ। लुगाई जात अैड़ौ किंकर कर सकै, सोच-सोच नै ई उणरै तौ रोम-रोम ऊभौ व्हैगौ। प्यारी आपरै धणी नै बेरा में धक्कौ दे दियौ। बापड़ौ थोड़ी-घणी वेळा गुळाछां खावतौ रैयौ अर आखिर उणरौ जीव निकळ ईज गयौ। अर रूपा रै गेला रौ कांटौ हटग्यौ। डोकरी आगै सूं आगै सोचती जायरी ही अर डोकरा रै माथा पै हाथ फेरती जावै ही।

धणी नै मार अर प्यारी तौ जाणै बिन नाथ-मौरा रौ बळद व्हैगी। उणी लोकलाज नै ई खूंटी टांक्योड़ी परी। प्यारी जैड़ी रूपाळी नीं ही घरआळी, इण वास्तै डोकरा नै वा रास आवती कोनी।

डोकरी सोचती जाय री ही : अेक महीना में सात-आठ ग्यारसां व्है जावती बापड़ी रै, उण प्यारी रै कारणै अर आया दिन धणी ढांडा री ठौड़ मारतौ जे फेर न्यारौ। उणरा जीवण मांय अंधारौ ईज अंधारौ हौ। भूखी-तिरसी रैयी, मार ई झेली पण उण घर नीं छोड्यौ।

डोकरा नै उणरै करमां रौ फळ मिल्यौ, तौ अैड़ौ कै दोनूं किडनियां खराब। प्यारी तौ डोकरा रै माथै धोळा आव्या देख 'र छेटी व्हैगी। अबै डोकरौ पूरी तरै सूं डोकरी रौ व्हैगौ हौ। पण, बापड़ी आखी जिंदगी तौ दुख सूं काटी, अबै उणरौ व्हैगौ तौ कैड़ौ सरग मिलग्यौ।

थोड़ाक दिन मांय ईज डोकरा नै तौ मांदगी घेरली। बेटौ-बहू अर डोकरी तीनूं घबरायग्या। सफाखानै लेजाय 'र दिखायौ तौ डागदरां साव-साव कैय दियौ कै मरीज री दोनूं किडनियां जबाब दे दियौ। बचायौ नीं जा सकै। डोकरी घबरायगी, उणरी तौ रातां री नींद उडगी। कद डोकरा री आंख्यां बंद व्है जा कांई ठा। डोकरी सोचै ईज ही। सोचतां-सोचतां दिन ऊगगौ हौ। अंधारौ जावतौ रैयौ।

डोकरी, डोकरा कांनी देख्यौ, औ कांई ! डोकरा री धोळी-धोळी आंख्यां सांम्ही दीसै अर बाकौ फाटौ रौ फाटौ रैयग्यौ। सरीर ठाड़ौ ठीम....। दुनिया में उजाळौ व्हैगौ हौ, पण डोकरी नै च्यारूं कांनी अंधारौ ईज अंधारौ दीखण लाग्यौ।

दो छिण पैलां देख्यौ, उजाळौ कठैई जावतौ रैयौ। डोकरी बापड़ी हाय-विलाप करण लागी। आज उणरा जीवण में पाछौ अंधारौ छायग्यौ।

❖❖

पथवारी रै कनै, पानेरियां री मादड़ी
उदयपुर (राजस्थान)

✍ नीरज दइया

राजस्थानी रचनाकार नीरज दइया रौ जलम 22 सितंबर, 1968 नै हुयौ। भणाई में बी.अेससी., अेम.अे., बी.अेड. अर पीअेच.डी. रा पगोथिया चढता नीरजजी साहित्य में ई केई गिणावण जोग पांवडा भरिया। 'भोर सूं आथण तांई' (लघुकथा-संग्रै), 'साख' (कविता-संग्रै), 'देसूंटौ' (लंबी कविता), 'आलोचना रै आंगणै' (आलोचना), 'जादू रौ पेन' (बाल-कथावां) रै अलावा चार अनुवाद री पोथ्यां अर कीं संचयन पोथ्यां ई छप चुकी है। राजस्थानी भाषा, साहित्य अर संस्कृति अकादमी, बीकानेर सूं 'बापजी चतुरसिंहजी अनुवाद पुरस्कार'। आं दिनां केंद्रीय विद्यालय संगठन में पी.जी.टी. (हिंदी)। राजस्थानी भा. सा. सं. अकादमी, बीकानेर रा सदस्य। अंतरजाळ पर बेव पत्रिकावां रौ संपादन।

पाछौ कुण आसी....

थारै छोड्यां-छिटकायां सूं
च्यार दिन पछै मरता
मर जासां च्यार दिन पैली....

बोलणियां नै कुण बरजै
बात-बात में मीन-मेख चोखी बात कोनी
अगूण री हवा आथूण आवै-जावै तौ दोस किणरौ
आज तांई गाया-गाया गीत, जियां गवाया थे
गावतां रैया म्हे!

करण नै तौ घणौ कीं करियौ जाय सकै
अेक चकारियौ छोड'र जाय सकां दूजै मांय
जरूरी कोनी कै रैवां आपां चकारियां मांय
मरण सूं पैली बोल्यौ जाय सकै है साच
अर कोई मरण नै ई क्यूं उडीकै....
समझलै आ बात कै साच बोल'र जीवण मांय सार।

वौ जिकौ दाय हौ म्हैं आपनै
अबै हुयग्यौ हेत छांय-मांय
स्सौ कीं है जिकौ अळसीज्योड़ौ अर बेकार
कांई बिसराय दी ओळूं भलै दिनां री
जे बोलणौ है तो गुळलपटी बातां छोड'र साफ-साफ कैवौ नीं।
साच है जे मांय काळजै चेप्योड़ौ, बोल हुवां नचीत....

काल पतियारौ हुसी इण साच रौ
हेत है इण रूपाळी दुनिया सूं
अठै खांडी कोनी हुवै कोई कोर
च्यार दिन पैली मरण सूं....

पाछौ कुण आसी
जे आ ई बात है तौ करलां हिसाब
अबै जिका रैया है दोय दिन बाकी
दिन दो खुल्ला छोडदौ, जीवण खातर
आंगळी कद तांई पकड़'र चालसां
अर कित्ता दिन रैसी आ आंगळी
खारा-खारा म्हांनै ना देखौ....
निजर फोरली हौ जद
देखौ कीं और जिकौ दाय है
मन सूं उतार्‌या हींडौ किण खातर
थे नीं तौ कांई कोई तौ है साथै
राम-राम बोलणौ आवै....
मारग मांय मिल जासी सागौ

अबै जीवण दौ, मुळकण दौ
बात-बात में ना अटकावौ टांग,
जातरा खातर राखौ संभाळ
थोड़ा'क काढां दांत, तद आंख्यां क्यूं काढौ....
कैयोड़ी साच हुयगी तौ भरीजैला आंख्यां
अंत-पंत थे भाठा कोनी, मिनख हो माइतां!

अर भलै मिनखां!
थांरी नफरत अर गफलत सूं पाळता सैंध
भेळै पाळी है अणमाप अपणायत

कीं हेत लुकौ राख्यौ है अदीठ ऊंडै अंतस मांय
थे थांरै चकारियै में रैया.... भलौ!
घणा भला हो थे
ठाह नीं किसी माटी सूं घड़ीज्या हौ
ना जीवण री बात में बोलौ
ना मरण री बात में चुस्कौ!

वा.... च्यार दिन पछै मरता,
मर जासां च्यार दिन पैली
करता जावां आ अरदास—
थे अमर रैया, कदैई ना मरिया....
संभाळ लिया हेत म्हारौ,
....अर नीं तौ काढ दिया हेत रै च्यारूंमेर अेक चकारियौ
लोक देखापै री थांरी अपणायत नै लेय'र जासां म्हैं
म्हारै भेळै.... म्हारै पांती
औ सुख कांई कम है....
कोई ओळमौ कोनी थांनै
मिल्यौ जित्तै में रंज जासां
अबै कोनी मांगा
सबूरी राखणी खासियत म्हांरी
कारण पाछौ कुण आसी....
अठै जाणलौ किणनै कुण छोडसी
खोस लेसी आ दुनिया स्सौ कीं!
खोस लेसी आ दुनिया स्सौ कीं!!
स्सौ कीं.... ?
इण खोसा-खासी मांय ओळूं कठै जासी.... !
❖❖

बीरबल री खीचड़ी है कविता

लूण-मिरच री पूड़ी कोनी कविता।
अटपटी लागी आपनै आ ओळी
पण कविता री घड़त पेटै म्हैं बात करूंला
जरूरी है लूण-मिरच रौ हिसाब
कवि करै आपरै हिसाब सूं हिसाब
बेहिसाब कोनी हुवै कोई कविता....

माफ करजौ किणी फरमाइस माथै म्हैं
नीं बणा सकूंला कोई कविता
बीरबल री खीचड़ी है कविता
थे घणी-घणी अळगी लगावौ आग
न्हाखौ कोई पूळौ अर लगावौ लांपौ
अठीनै कविता सीझ'र हुवै त्यार....।

❖❖

ना मांगजै इण पेटै कोई हिसाब

कैवण नै तौ कैय दियौ—
हिसाब देवणौ पड़सी हरेक सबद रौ
पण सबद खुद है म्हारै पाखती बेहिसाब
कियां करीज सकै है हिसाब
थूं जद सूंप्या हा म्हनै सबद
जद निपज्या हा म्हारै मांय सबद
लाध्या हा मारग बैवतां सबद
पोथ्यां बांचता अर बंतळ करता सबद
तद आ बात आगूंच तय कठै ही
हिसाब देवणौ पड़सी हरेक सबद रौ!

कोई तंगी ई कोनी अबार सबदां री
सबद खुद है म्हारै पाखती बेहिसाब
तद करूं क्यूं म्हैं हिसाब....
अट्टा-सट्टा करीज सकै सबदां रा
कठैई किणी बाड़ कोनी बांधी सबदां रै
लिया जाय सकै सबद उधार, बिना पूछियां किणरा....
इण निरवाळी दुनिया मझ-सागर में सबदां रै पूग्या
देखूं बै अणमाप लडावै म्हनै अर म्हैं बांनै....
कविता होवै—
सबदां री अनोखी मुलाकात,
है आ आपसरी री बात
जिणनै अठै मांड दी, चेतै राखजै!

आगै सूं ना मांगजै इण पेटै कोई हिसाब
जे होवै तंगी थारै तौ बकारजै म्हांनै।
❖❖

म्हैं उडीकूं कविता

जोयां हाथ नीं आवै कविता
अणचींतै सूझै....
जद करणी चावूं बतळावण
तौ कोनी सूझै कोई सावळ सवाल
सवाल औ पण है कै कोई कवि कविता सूं कांई करै सवाल
कांई कविता सूं ओळख पछै ई जरूरी होवै कोई सवाल
सवाल है कै कित्ती बजी है
सवाल है कै बारै जावौ पाछा कणा आसौ
सवाल है कै अबार जीमसौ का पछै
सवाल है कै चाय बणा दूं पीसौ कांई
सवाल है कै नींद आवै बत्ती कद बंद करसौ
सवाल है कै आं पोथ्यां में सारै दिन कांई सोधौ
सवाल है कै कोई पईसा-टक्कां रौ काम क्यूं नीं करौ....
सवाल.... सवाल.... सवाल। सवाल केई भळै ई है सवाल।
पण कोरा सवालां सूं कांई संधै
कांई सगळा सवाल रळा'र कोई कविता सांध दूं
पण कांई करूं,
अबार-अबार ई जलमियौ है जिकौ सवाल थारै मगज में
इणी खातर तौ सगळा सूं पैली कैयौ नीं—
जोयां हाथ नीं आवै कविता
अणचींतै सूझै....
कविता आ है कै म्हैं उडीकूं कविता
जे थांनै सूझै कविता
तौ उणनै खबर जरूर करजौ कै म्हैं उडीकूं।
❖❖

सी-107, वल्लभ गार्डन, पवनपुरी
बीकानेर (राजस्थान) 334003
मो. 9461375668

● *व्यंग*

सतजुगी नेता रौ कळजुगी रूप

डॉ. मनोहरलाल गोयल

नेताजी नै राजनीति में आयां जमानौ होयगौ हौ। वांरै नाम री तूती बोलण लागी ही। किसम-किसम री अर घणी ई राजनीति करी अर चोखा-चोखा नै अंटाचित करनै अेक कानी ठेल'र आगै बधग्या। अेक दिन नेताजी नै आकासवाणी केंद्र सूं बुलावौ आयौ। आम जनता री समस्यावां पर वांरौ खास भासण सीधौ प्रसारित कियौ जाणौ हौ।

तैसुदा दिन त्यार होय'र नेताजी घर सूं निकळ्या। सांम्ही सूं आवती अेक टैक्सी नै रोकी अर चालक नै कैयौ, ''म्हनै रेडियो स्टेसण जाणौ है, बेगौ पुगाय दै!''

टैक्सीवाळौ सफा नटग्यौ, ''माफ करजौ सा, अबार थोड़ी देर पछै नेताजी रौ भासण रेडियौ माथै आवणवाळौ है। म्हैं तौ वांरौ भासण सुणस्यां। आप कोई दूजी टैक्सी सोधल्यौ!''

नेताजी टैक्सीवाळै रै मूंडै सूं आपरौ नांव ईज नीं, प्रसंसा रा दो सबद ई सुण्या तौ वै गद-गद होयग्या। सौ रुपिया रौ नोट पाकिट सूं काढ'र टैक्सीवाळै रै हाथ में थमाय दियौ—इनाम रै रूप में।

सौ रुपियां रौ नोट हाथ में आवतां ई टैक्सी चालक ई गद-गद होयग्यौ। बोल्यौ, ''भाड़ में जावै नेताजी रौ भासण! आप तौ भोत बढिया आदमी हौ, चालौ पैली आपनै ई छोड आवूं।''

टैक्सी चालक रौ औ बदळतौ रूप देख'र नेताजी खुद ई हक्का-बक्का रैयग्या। पण अेक बात वांरी समझ में आयगी कै उणां रा नांव नै चावै जित्ती ख्याति मिळी हुवै, पण वांनै लोग चैरा सूं कोनी जाणै। और तौ और, वांरा नगरवासी ई नेताजी नै मात्र नेताजी रै नांव सूं ईज जाणता। चैरा सूं कम ईज लोग ओळखता। मुकाबलौ हुयौ, नेताजी रै भासण अर सौ रा नोट रौ, तौ सौ रौ नोट जीतग्यौ। टैक्सी चालक वांनै चैरा सूं ओळखतौ तौ नेताजी रै सांम्ही ईज वांरी अैड़ी-तैड़ी नीं करतौ। इत्तौ लिहाज-सरम तौ आपां रै देस में बच्योड़ौ ई है।

पण नेताजी निरास कोनी हुया। हार ई मानलै तौ वौ नेता ई कांई हुयौ? वै आपरी छवि नै निखारण रै काम में लागग्या। उणां जनता रै बीच जाणै रौ अर जनता सूं जुड़णै रौ जतन सरू कर दीनौ। लोगां सूं मिलणौ-जुलणौ, वांरा दुख-दरद में आणौ-जाणौ, लोगां री मदद करणी, सैयोग री भावना राखणी आद कामां में पूरी मुस्तैदी सूं लागग्या। पछै तौ घणा ई लोग नेताजी

नैं नांव सूं ईज नीं, चैरां सूं ई जाणण-पिछाणण लाग्या। लोग कैवण लाग्या कै नेताजी तौ सतजुग रा अवतार है। कळजुग में इस्या नेता कठै मिलै। लोगां री अै टिप्पणियां सुण'र नेताजी ई घणा राजी होवता। मनोमन वै खुद नै सतजुगी प्राणी ई समझण लाग्या। धन्न होयगा नेताजी।

रोजीना वांरौ दरबार लागतौ। लोग आवता, आपरै दुख-सुख री बातां करता, चमचा जी-हजूरी करता। समझदार सल्ला देवता। परेसानी अर समस्या लेय'र आवणिया लोगां री नेताजी परेसानी दूर करता अर समस्यावां रौ समाधान करता। नेताजी खुस हा, वांरै नांव री तूती बोलती। वांरी जै-जैकारी होवती।

पण समाज में इस्या लोगां री ई कमी कोनी ही, जिका नेताजी नै सांच रै धरातळ माथै लाय'र खड़ौ करणी चावै हा। औ काम सोरौ नीं हौ। कोई हाजर जबाब अर मसखरौ प्राणी ईज औ काम कर सकतौ हौ। अर इस्या लोगां री देस में आज ई कमी कोनी। बीरबल, तेनालीराम, गोपाळ भांड, भलांई मर-खप चुक्या है, पण पलटूराम जीवै है। वौ नेताजी नै कैयौ, ''अवसर आवण दौ, कदैई मौकौ मिल्यौ तौ म्हैं आपनै चारूं जुगां रा दरसण करावूंला अर आप कळजुगी हौ कै सतजुगी प्राणी, आपनै दिखाय देवूंला।'' बात आई-गई होयगी।

अेक दिन पलटू अेक बंद मूंडा रौ मटकौ अर रामू-स्यामू नै साथै लेय'र नेताजी रै दरबार में पूग्यौ। रामू-स्यामू दोन्यूं किसान हा। मटकौ सांम्ही मेल'र पलटू नेताजी नै बतायौ— हजूर औ मटकौ सोना री मोहरां सूं भरयोड़ौ है। रामू नै औ मटकौ आपरै नवा खेत में मिल्यौ है, जिकौ वौ स्यामू सूं खरीद्यौ है। वौ मटकौ लेय'र स्यामू कनै गयौ, पण स्यामू मटकौ कोनी लियौ। वौ कैयौ कै म्हैं तौ खेत बेच दियौ, अबै खेत री किणी चीज माथै म्हारौ हक कोनी। जणां अै दोन्यूं म्हारै कनै आया अर म्हैं इणां नै लेय'र आपरा दरबार में हाजिर हूं। आप निरणै दिरावौ कै औ मटकौ किणनै मिलणौ चाइजै। नेताजी बोल्या, ''इणमें निरणै कांई करणौ है! अै दोन्यूं ई कोनी राखणी चावै तौ मटकौ म्हारै घर में राख देवौ, पारटी रै काम में खरच कर लेस्यां।''

औ सुण'र पलटू कैयौ, ''नेताजी, आप तौ कळजुगी प्राणी ईज निकळ्या। बिना किणी हक रै मटकै रा मालिक बणणी चावौ हौ। सतजुगी अर त्रेताजुगी तौ रामू-स्यामू है। द्वापरजुगी आप म्हनै समझ सकौ हौ। म्हैं चावना राखतौ तौ मटकौ म्हारै कनै ई राख लेवतौ, आप कनै क्यूं लेय'र आवतौ।''

आ सुणतां ई नेताजी इस्या नरवस हुया, जाणै वां रै माथै सौ घड़ा पाणी पड़ग्यौ हुवै।

❖❖

गोयल भवन, बिस्टुपुर, जमशेदपुर-831001

✍ **शिवराज छंगाणी**

धंधूणी लगा भाया!

धंधूणी लगावणै सूं
बोरटी बोरिया दिरावै—
खेजड़ी खोखा खिरावै—
गाय बछड़ां नै दूध पिलावै
धंधूणी मांय
धणी चावी अर ठावी सगती
धंधूणी मांय राफड़-रोळां सूं मुगती
धंधूणी सांमी
चापलूसिया चाकर बण जावै
अकड़ू गोडाळियां हुय जावै
जिका अपणै आपनै ठाकर कैवावै
धंधूणी लगावणै सूं
नेता कान फड़फड़ावै
अफसरिया डरता
सुभ राग गावै—
इण वास्तै धंधूणी रौ अरथ
समझ बावळा!
धंधूणी लगाव
चमगादड़ भगाव
धूंधूणी लगावतौ जाव
भ्रिस्टियां नै भगावतौ जाव
आकरौ बोल, वाणी रौ कर मोल
धूणी रमा, धंधूणी लगाव।

❖❖

अणथंभियौ आकास

बडेरा कैवता हा
अणथंभियौ आकास ऊभौ है
सुवाल उपजै
कै
चारूं दिसावां
उतराद-दिखणाद
ऊगूणौ-आथूणौ
फेरूं चारूं कूंणा
इसान - वायव्य
नैऋत्य - आग्नेय
किणनै स्यारो दिरावै?
जमानै री ज्यामिति
खूंणा-खंचूंणा
कोण, तिरभुज
चतुरभुज बणावै
पण किण वास्तै?
पडूत्तर दिरावौ सा....!
अणथंभियै आकास रौ
आज रै जुग में
म्यानौ बतावौ सा....!

❖❖

नत्थूसर गेट रै मांय
बीकानेर (राजस्थान) 334004

✍ डॉ. विनोद सोमानी 'हंस'

अबखापणौ

घणा दिनां सूं
कोरा कागद माथै
कांई नीं मांड सक्यौ
मांडतौ भी कांई
संवेदना ईज नीं जलमी ईं मन में।

घणा दिनां सूं
ईं सून्याड़ जीवण में
मुळक ईज नीं वापरी
हंसतौ भी कियां
कोई उछाव ईज नीं रैयौ ईं तन में।

घणा दिनां सूं
पेट-भर नै खाणौ नीं मिल्यौ
खावतौ भी कियां
बखत ईज कोनी ईं धन में।

घणा दिनां सूं
दरकियोड़ी जमीन माथै
लीलोती दीखी ईज कोनी
ऊगती भी कियां
बरस्यौ ईज कोनी ईं बन में।

कांई औ विरोधाभास
मिटैलौ कोनी
अबखापणौ
ईं जीवण सूं हटैलौ कोनी।

❖❖

42/43, जीवन विहार कॉलोनी
आनासागर सरक्यूलर रोड
अजमेर 305004

✍ हरमन चौहान

म्हारौ गांव

म्हारौ गांव
जठै हरा-भरा रूंख हा,
साक-बाड़ी सूं लैरावता खेत हा,
पाणी सूं लबालब भर्‌योड़ौ तळाव हौ,
रूंखां-झाड़ां सूं अट्योड़ा
जंगळ हा, मगरा हा!
पसु हा, पगसी हा!
पंछियां री भोर में किल्लोळ ही!
गोधूळी बेळा में
रंभावती गायां ही,
बाछड़ा हा, मिणियावता उन्या हा!
स्याणा-बाणा
भोळा-ढाळा लोग हा।
काम करतोड़ी
गीत गावती बहुवां ही,
हंसतोड़ी, ठिठक्यां करती बेटियां ही!
बडा-बूढां री ठिठोळ्यां ही
कठैई अलगोजा रौ राग हौ
कठैई तेरह-ताळ ही
कठैई ब्यावला रा गीत हा
सगळां में हेत हौ, प्रीत ही
आखौ गांव सरगधाम हौ, जियां—
बठै देवतावां रौ वास हुवै!

जाणै किणरी निजर लागी
जाणै किणरौ लागौ स्राप?
बठै अबै नीं देवता बसै
नीं गांव रा भोळा-ढाळा लोग।
बठै अबै—
नीं जंगळ है, नीं जिनावर है
नीं हरिया-भरिया खेत है, नीं रूंख है
नीं गायां रंभावै, नीं उन्या मिणियावै है।
अेक कानी सूखौ तळाव है
दूजी कानी नागा भाकर है
कीं ई बचियोड़ा भूखा लोग है
पतौ नीं औ जोग है कै संजोग है—
पाणी रा रेला ज्यूं
म्हारा गांव नै सैर गिटग्यौ है!
अबै वठै चारूंमेर
धुंवौ है, परदूसण है
जंगळ री जगै औद्योगिक छेत्र है
खेतां मांय बस्ती है, मकान है
बिकाऊ प्लोट है
बणतोड़ा कारखाना है, होटलां है।

उपनगरी री आपाधापी है
चैल-पैल खासी है, पण—
दुखड़ौ म्हारै गांव रौ
पीड़ा म्हारा गांव री कुण नापी?
झूठा नेता, दोगला साहूकार
मक्कार अफसरिया अर ठगोरा ठेकेदारां
बडा-बडा धीजा दीना
उधारा दीना
परलोभन दीना।
जमीन खोसी, घर खोसिया।
जरा-सो मुआवजौ देय'र
गांववाळां नै अठै-बठै रैवास दीनौ
सैर रा केई-केई अजगर मिळ'र
म्हारा गांव नै गिटक लियौ है।
म्हैं हरेक सूं सवाल कियौ—
'म्हारी भारतमाता, ग्रामवासिणी
कठै है, कठै है, कठै है?'
सगळा मून, सगळा हक्का-बक्का!

❖❖

7/3690, अम्बे कॉलोनी, सेक्टर-14, गोवर्धन विलास, उदयपुर-313001 (राजस्थान)

✍ मुकुट मणिराज

छाजळौ

भरया गाडा में 'छाजळा' कौ
कांई बोझ।
या कैणावत लडाती री
छाजळा कौ लाड
ईं मीठी मनुवार कै पांण
घणा हरख सूं छांटतौ रैयौ
नाज में सूं अळियाण
झूलतौ रैयौ कंवळ्यां हाथां का
मदगाळा हींदळा पै लाडां-कोडां
चूड़ा-चूड़ियां की मीठी खणक सागै
करतौ रैयौ घूमर नरत
पण जद सूं 'रेडीमेड' नै धारयौ
घर में कुसूण्यौ पांव
छाजळौ होग्यौ बेकार
टांड पै अेक खूणै पड़्यौ
गिणै छै आखरी सांसां
आंख्यां पै पूर दिया
मकड़्या नै अणमाप जाळा
कै टाबरां नै बांधली डोर
बणाल्यौ घींसोड़ौ, गाडोल्यौ
ठरड़्यां-ठरड़्यां फरै छै
आखा गरयाळा में
बडा लोगां कही 'बारा बरसां में रेवड़ी की बी चेतै छै।'

पण हाय रे दुरभाग
जुगां सूं अळ्या नै सळ्यौ करतां
तोड़ी छाती, पण फेर बी
चेतबौ तौ दूरै
खुद अेक रेवड़ी होग्यौ बापड़ौ छाजळौ।

❖❖

'वृद्धि', विजयवीर स्टेडियम रै कनै
बालापुरा, कुन्हाड़ी, कोटा-324008 (राज.)

✍ डॉ. पुरुषोत्तम छंगाणी

तन सूरज रौ काळौ कित्तौक
मन माणस रौ काळौ कित्तौक

अपणी रंगत अर अपणी रम्मत
पच्छम जग रौ चाळौ कित्तौक

मांदौ पड़ग्यौ भायप चानणौ
तम नफरत रौ फाळौ कित्तौक

जीवण री जूनी चळगत में
नवी सोच रौ ढाळौ कित्तौक

ऊपर नीचै, नीचै ऊपर,
लख मकड़ी रौ जाळौ कित्तौक

मारग अबखौ आघी मंजळ
कुण चालैला पाळौ कित्तौक

सांपां री बस्ती में जीवै
चिड़कली रौ माळौ कित्तौक

डूंगर-डूंगर ठाकर डेरा
मिनखाचारी मेळौ कित्तौक

आतंक री 'रैयाण' जमी है
रंग कंसूबौ गाळै कित्तौक

भूख-तिरस री जबर यातना
खम्मा-खम्मा रौ रोळौ कित्तौक

अवस उघड़सी भेद कूड़ रा
सच रै होठां ताळौ कित्तौक

गंगा-जळ तौ पावन अमरत
मिळै कीच रौ नाळौ कित्तौक

ईमान-धरम रौ बद बौपारी
बोलौ, देस रुखाळौ कित्तौक

खुद सूं ई खुद पूछ बावळा
जण-गण-मन रौ व्हालौ कित्तौक

❖❖

301, कुटुम्ब अपार्टमेंट, मधुबन, उदयपुर (राजस्थान)
फोन : 0294-2429430

✍ पवन पहाड़िया

कंप्यूटर ज्यूं भाजै छै
मिनख मसीनू बाजै छै

राछ पुराणा सै पड़िया
काम लेवतां लाजै छै

आभै में बादळ कोनी
नेटवरक में गाजै छै

बणगी सगळी फेसबुकां
भर-भर बाथां साजै छै

मेमोरी अब मोल मिळै
गेला केम इळाजै छै

बटण दाब्यां सगळी जगति
परदै आय बिराजै छै

फेरूं सगळी ई फसलां
ऊभी खेतां दाझै छै

❖❖

बीमा सेवा केन्द्र, आयुर्वैदिक अस्पताळ रै कनै, पो. डेह नागौर (राज.)-341022

✍ सुमन बिस्सा

(1)

सूरज ऊगतौ दीसै अर फेरूं आंथतौ दीसै
बींच में यूं लखावै बगत जाणै भाजतौ दीसै

लुकाऊं किण तरै कमियां बखेड़ा ई बखेड़ा है
हजारूं नैण वाळौ औ जमानौ जागतौ दीसै

बचाऊं म्हारै सूरज नै तौ चंदौ फेंट में आवै
सजग है राहु-केतु तौ गिरण ई लागतौ दीसै

उमर तौ अजै बाकी है, काम ई है घणौ बाकी
मौत रौ दूत जाणै दूर सूं ई ताकतौ दीसै

कदैई जोस हौ, जीवट हौ, जीणै री उमंगां ही
नीं जाणै आज म्हारौ हौंसलौ क्यूं कांपतौ दीसै

उधारी ली कई खुशियां बस धाकौ ई धकावण नै
बही ले ब्याज अर पड़ब्याज, वो 'रौ मांगतौ दीसै

कदैई भाजतौ सरपट, घणां नै छोडतौ लारै
वौ घोड़ौ जिंदगी रौ आज जाणै हांपतौ दीसै

(2)

गरभ नाळ में पनपै है आ स्रिस्टी सारी
जैर गिलोई डळी ज्यूं क्यूं बेटी लागै खारी

सभ्य गिणीजै वांरै ई निरदय हाथां सूं
उदर मांय टूंपीजै आंगण री किलकारी

अणगिणती री छोर्‌यां नै तौ आ गिटगी है
कळप रैयी है जलम-जलम री आ दुखियारी

बंगला, बैंक, तिजोर्‌यां, लॉकर मिल छोरी नै
खतरनाक मानै है, कायनात आ सारी

तीज-तिंवार, तिलक तुलसी अर राखी बिलखै
लूलै-लंगड़ै जीवण में क्यांरी है हुसियारी

❖❖

जोधपुर (राजस्थान)

● *कीं हाइकु*

✍ डॉ. गोवर्धन शर्मा

(1)
होळी री रात
चमकै सोनथाळ,
कुण जीमैला ?
(2)
स्वारथी लड़ावै
जात, पांत, धरम रा
नामै आपणै।
(3)
कुड़सी रौ मोह,
मानवता नै भी
मिटाय देवै
(4)
आज रा नेता
मदछकिया हाथी,
अंकुस बिना।
(5)
विदेसी मोह,
आपणी संस्कृति नै
खा रियौ है।
(6)
रूप बदळै
खूब नखराळी है
रितु सुंदरी।

❖❖

'ज्ञानलोक', प्लाट 34, सेक्टर 19
गांधीनगर (गुजरात)-382019

● *लघुकथावां*

अवतार

राजेश अरोड़ा

नैनी-सीक आसना। फूटरी-सोवणी। मनमोवणी-मस्त। दिमाग री तेज, प्रतिभावान। साच-झूठ, मान-अपमान, चोखौ-भूंडौ, सगळां रौ उणनै ग्यान। सुभाव सूं विनम्र। हंसती तौ फूल झड़ता। बोलती तौ सबद-सबद पूरण व्हैतौ। आपरी बाल-सुलभ सरलता अर मोवनी मुळक सूं बा हरेक नै सम्मोहित कर लेवती। मां-बाप री इकलौती लाडेसर। पण दादी नै बा फूटी आंख नीं सुहावती। आसना रौ जद जलम हुयौ तौ दादी फूट-फूटनै रोई ही। बां तौ गरभ में ईज आसना री हत्या री घणी कोसिसां करी। आ तौ आसना री मां रै कन्या-भ्रूण हत्या रौ डट'र विरोध कियां पछै ईज आसना रौ जलम हुयौ।

अेक दिन मां, आसना नै लाड सूं पूछ्यौ, ''बेटी! थूं बडी होय'र कांई बणसी?''

आसना बोली, ''मां! म्हैं बडी होय'र जज बणसूं।''

आ सुण'र दादी हंसण लागी। पण मां, बेटी नै मैणौ मारती बोली, ''दोय जूण री रोटी मांय तौ टोटौ पड़ रैयौ है। घर रा सगळा जीव मैणत-मजूरी करां, तदै ईज परवार री पार पड़ै। आं हालातां मांय आसना भळै जज न्यारी बणसी!''

चाणचक आसना बोल पड़ी, ''दादी! कुण कैवै कै नारी जात कमजोर है। बा ऊरजावान है, सगतीमान है!'' सुण'र मां अचूंभै में पड़गी। सोचण लागी कै इसौ पडूत्तर कांई अेक मासूम टाबर रौ व्है सकै? इण सूं उणनै घणौ बळ मिळ्यौ। बै दादी री मरजी रै खिलाफ आसना नै भणण सारू इस्कूल में भरती करवाय दी। बगत बीततौ गयौ। मां-बाप पेट काट-काट'र आसना नै पढावता रैया। आसना भणती रैयी अर बधती रैयी।

आसना रै कनै मैणत, लगन, प्रतिभा, करमठता, काम रै प्रति निस्ठा अर समरपण री भावना तौ ही। उणरी मैणत रंग लाई। सगळी अबखायां लांघती आसना अेक दिन जज बणगी। आसना री अदालत में पैली-पोत कन्या-भ्रूण हत्या रौ अेक मुकदमौ आयौ। इण मुकदमा में आपरौ फैसलौ सुणावती वा बोली, ''भ्रूणहत्या मतलब जीव हत्या। अदालत औ फरमान जारी करै है कै जीव-हत्यारा मां-बाप अनाथालय सूं अेक छोरी विधिवत रूप सूं गोद लेय'र उणरै पालण-पोसण, भणाई अर ब्यांव तांई रौ खरचौ उठावै। नींतर सजा भुगतै।''

आपरी पोती रौ पैलौ-पैलौ फैसलौ सुणण सारू दादी ई अदालत में आई ही। पोती नै इत्ती ऊंचाई माथै देख'र बेटियां रै प्रति बांरौ नजरियौ बदळग्यौ। नारी जात माथै गरब-गुमेज करती थकी बा आसना सूं बोली, ''बेटी, म्हनैं माफ करदै! म्हैं नारी व्हैय'र ई नारी सूं नफरत करती रैयी। छोरा अर छोरी में फरक करती रैयी। बेटी! म्हैं अेक बात हरेक मिनख, हरेक समाज अर हरेक देस सूं कैवणी चावूंला कै गरभ में बेटियां री हत्या मत करौ, क्यूंकै अै बेटियां जलम नीं, अवतार लेवै है।

❖❖

भारतीय डाक विभाग, मु. गजसिंहपुर-335024
जिला-श्रीगंगानगर (राज.)

मौत रौ डर

डॉ. सत्यनारायण शांडिल्य 'सत्य'

अेक वार री बात है, अेक गांव में अेक बडेरी लुगाई रैवती। भर्यौ-पूरौ परिवार। बडी उमर अर ऊपर सूं बीमारी री मार। बार-बार बैदजी नै बुलाणौ पड़तौ। सुभाव ई चिड़चिड़ौ होग्यौ। बेटा-बहू कदैई संभाळता अर कदैई नीं संभाळता। पोता-पोतियां नै हेलौ पाड़ती, पण कोई नीं सुणतौ। बैदजी संभाळण आवता जणां वा आपरी सगळी बाफ काढती अर कैवती कै भायाजी, म्हनै तौ कोई इसी दवाई लाय दौ जिकौ म्हैं राम रै घरै जाऊं परी। बैदजी सुण-सुणाय'र कैय देवता कै ल्याय देसां। बार-बार आ ईज बात सुण-सुणनै बैदजी ई आखता होयग्या।

अेक दिन वै आवतां ई बोल्या कै माजी आज तौ म्हैं थांरली खास दवाई ल्यायौ हूं। लेवतां ई कल्याण होय जासी अर सगळा दुख-दरद मिट जासी। बडेरी पैली तौ कीं समझी कोनी अर बोली कै कुणसी दवाई? बैदजी कैयौ कै रामजी रै घरै जावण वाळी दवाई। सुणतां ई डोकरी बैठी होगी अर बोली कै नीं भायाजी नीं, इसी हांसी फेरूं मत करजौ। आ दवा तौ भानड़ी नै देद्यौ, बा म्हारै सूं अेक बरस बडी है। बैदजी बोल्या कै थे सदांई मांग्या करता, आज ल्यायौ तौ थे नट रैया हौ। बडेरी बोली कै कोई गांम थोड़ौ ई जाणौ है जकौ नीं जचै तौ ओटौ आयज्या। कैवण री बात और होवै। हाल तौ केई काम करणा बाकी है। पोता-पोती रौ ब्याव अर छोटकै बेटै रौ मकान म्हारै बिना कैयां होसी!

बैदजी सोच्यौ कै आ तिरसणा माड़ी चीज हुवै। मिनख भलांई कित्तौ ई दुख पावै, मन निरांत को होवै नीं, जे होज्या तौ नीं जीणै में दुख अर नीं मरणै में दुख।

❖❖

रतनलाल मोहता स्कूल रै कनै
पो. सादुलपुर, जिला-चूरू (राजस्थान)-331023

पोथी : बदळती सरमग / विधा : कहाणी / कहाणीकार : नंद भारद्वाज / संस्करण : 2009
प्रकासक : रचना प्रकासण, जयपुर / पाना : 176 / मोल : 200 रिपिया।

● *पोथी-परख*

नीरज दइया

आत्मकथा रा खुणा-खचुणा परसती कहाणियां

नंद भारद्वाज कवि-आलोचक रूप जाण्या जावै अर बां री कहाणीकार रूप ओळखाण सारू कहाणी-संग्रै 'बदळती सरगम' (2009) रौ पाठ जरूरी लखावै। बरस 1971-72 रै लगटगै आधुनिक कहाणी री सरुआती-जातरा मांय सांवर दइया, भंवरलाल 'भ्रमर' अर मोहन आलोक आद कहाणीकार साथै अेक जसजोग नांव नंद भारद्वाज रौ ई मांड सकां। उण बगत केई चावा-ठावा लेखक हिंदी सूं राजस्थानी कानी पग करिया हा, जियां— यादवेंद्र शर्मा 'चंद्र', सांवर दइया अर मणि मधुकर आद। नुंवी कहाणी री सरुआत खातर 'मरुवाणी' (रावत सारस्वत) अर 'हरावळ' (सत्यप्रकाश जोशी) आद पत्रिकावां खास मानीजै। आं पत्रिकावां मांय नुंवा-जूना केई लेखकां री कहाणियां प्रकासित हुई, बां नै ध्यान में राखता थकां नुंवी कहाणी री बात करी जाय सकै। इण जातरा मांय न्यारै-न्यारै लेखकां री न्यारी-न्यारी लेखन-गति रैयी। मोहन आलोक बरसां-बरस कवि-रूप ओळखीजता रैया, 'मोहन आलोक री कहाणियां' (संचै : नीरज दइया) रै मारफत वां री नुंवी ओळखाण लूंठै कहाणीकार रूप हुई। आ ई बात अनुवादक कन्हैयालाल भाटी सारू कैयी जाय सकै, जिका कहाणीकार लगोलग कहाणियां नीं मांड सक्या अर कहाणी-संग्रै ई बगतसर साम्हीं नीं आ सक्या, बां नै कहाणी-आलोचना बिसरावती रैयी। 'बदळती सरगम' कहाणीकार री लारला चाळीस बरसां री कमाई है। इण संग्रै रौ जस कै कहाणीकार नै राजस्थानी भासा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी रौ सूर्यमल्ल मीसण शिखर पुरस्कार (2013-14) इणी संग्रै माथै मिळ्यौ। इण संग्रै मांय बगत-बगत माथै लिखी नंद भारद्वाज री दस कहाणियां सामिल है। आं कहाणियां रै मारफत नुंवी कहाणी री बात करां।

जिका रचनाकार हिंदी अर राजस्थानी दोनूं भासावां मांय लिखै, बां रै सिरजण नै लेय'र आलोचनात्मक दीठ इकसार कोनी रैयी। आलोचना पेटै पखापखी रौ भाव देख सकां। कोई रचनाकार महान इण खातर गिणीजै कै बौ अेक सूं बेसी भासावां मांय दखल राखै अर किणी रचनाकार नै हिकारत री दीठ सूं इण खातर देख्यौ जावै कै उण री मूळ भासा किसी है, इण रौ ठाह नीं पड़ै। आलोचना नै आपरौ सुर अर सभाव रचना री ओळख करता रचना नै ध्यान मांय राखतां बदळणौ चाइजै अर आ बात हरेक रचनाकार खातर थिर रैवणी चाइजै। कोई रचनाकार कद किसी भासा नै आपरौ माध्यम बणावै, आ पूरी बात रचनात्मक दबाव अर उण री दीठ माथै छोड़ देवणी चाइजै। कोई रचनाकार जद दोनूं भासावां मांय रचना नै मौलिक-रूप मांय

देवै तद जाहिर है कै बा रचना किणी अेक भासा मांय मूळ अर दूजी मांय अनुवाद है। किणी रचना नै अेक सूं बेसी भासा मांय मूळ कैवण रै लारै किणी रचनाकार रौ कांई मायनौ हुया करै? घणी बार मूळ रचना रौ अनुवाद खुद करै तद बौ अनुवाद मूळ सरीखौ हुया करै। दूजी बात किणी रचनाकार रै सांतरै अनुवाद खातर खासियत रूप घणी बार कैयौ जावै कै अनुवाद मूळ जिसौ है। ओ अेक तकनीकी सवाल आलोचना रै पाळै कै किणी रचनाकार री रचना-दीठ माथै विचार करती बगत भासांतर री बात किण ढाळै करी जावै। भासा तौ माध्यम है अर उणनै मरजी मुजब बरतणौ चाइजै। कोई रचना किणी पण भासा मांय रचीजै, बा असल मांय भारतीय साहित्य री गिणीजैला। किणी कूंत पेटै भासा री कोई पण भींत कदैई नीं हुया करै अर नीं हुवणी चाइजै।

हिंदी कहाणी-संग्रै 'आपसदारी' (नंद भारद्वाज) मांय आधी सूं बेसी कहाणियां 'बदळती सरगम' री कहाणियां रौ अनुवाद है— आपसदारी, बदलती सरगम, उलझन में अकेले, आत्म निर्वासित, वापसी अर दूसरी औरत। इण ओळी नै इयां पण कैय सकां कै 'बदळती सरगम' री आधी सूं बेसी कहाणियां ई अनुवाद है। 'बदळती सरगम' कहाणी-संग्रै मांय इण ढाळै रौ कोई खुलासौ कहाणीकार री तरफ सूं कोनी मिलै। अठै आं कहाणियां माथै विचार करां। भासा री किणी भींत माथै बात नीं कर'र सरगम रै सुरां री बात करां।

संग्रै मांय सिरै नांव कहाणी 'बदळती सरगम' पांचवी कहाणी। आ कहाणी संग्रै मांय पैली का छेहली कहाणी ई राखीज सकती ही। किणी रचना नै किणी खास विगत मांय राखणौ महताऊ हुया करै है। किणी पण संग्रै री विगत नै महताऊ मानतां थकां, इण बात माथै विचार करणौ चाइजै कै रचनाकार विगत बणावती बगत कांई सोच्या करै। कहाणियां नै उणां रै प्रकासित हुवण रौ आधार लेय'र विगत बणायी जाय सकै। आं कहाणियां पेटै आं रै पत्र-पत्रिकावां मांय प्रकासित हुवण बाबत कोई संकेत का सूचना कोनी, पण विगत देख्यां लखावै कै कहाणियां नै बां रै रचनाकाल रौ आधार राखतां विगत बणी है। संग्रै री तरतीब (विगत) असल मांय नंद भारद्वाज री कहाणी-जातरा री ई तरतीब है।

औ संजोग है कै संग्रै री दस कहाणियां किणी न किणी जातरा सूं जुड़्योड़ी है। जातरा रा दोय ढाळा है। अेक तौ कहाणियां रा घणासाक पात्र साचाणी किणी न किणी जातरा मांय चाल रैया है, दूजौ रंग— आं कहाणियां रा नायक-नायिका अर कथावाचक खुदोखुद ई मांय-बारै किणी न किणी जातरा सूं जूझता निजर आवै। अंतस मांयली-बारली आं जातरावां रौ मोटौ संकेत औ पण लियौ जाय सकै है कै आखी मिनखाजूण ई अेक जातरा है। इण जूण-जातरा री हूंस आपरी भासिक-व्यंजना रै पाण केई रूपां मांय संग्रै री कहाणियां सूं सांम्ही आवै। जातरावां रै लेखै-जोखै सजी आं कहाणियां मांय कहाणीकार घरबीत बांचतौ लखावै। आत्मकथात्मक खुणा-खचुणा नै परस करती 'बदळती सरगम' री कहाणियां रै मारफत नंद भारद्वाज धीर-गंभीर सिरजक रूप सांम्ही आवै।

आं कहाणियां मांय जोधपुर, बीकानेर अर बाड़मेर सूं लेयर मुंबई, गुवाहाटी जिसै हलकै रा केई दाखला देख्या जाय सकै। राजस्थान रै आं हलकां रै ग्रामीण-जीवण अर आपरी

नौकरी रै सिलसिलै सूं कहाणीकार रौ जिण जागावां सूं निजू जुड़ाव रैयौ, बौ धरातल ई आं कहाणियां री जमीन है। कहाणियां बांचती बगत आपां उण जमीन सूं जुड़ जावां, जिण जमीन माथै अै कहाणियां ऊभी है। आं कहाणियां रौ मकसद किणी सैर का गांव रै दीठाव नै राखण रौ कोनी। कहाणियां मांय आया गांव-सैरां रै बदळाव री मूळ धुरी परिवार नै मानता थकां कहाणीकार जिकौ बदळतौ रूप आपां सांम्ही राखै उण मांय निगै आवै कै घणकरा रिस्तां रौ गरमास खूटतौ जाय रैयौ है। घरू अर दूजा रिस्ता ठंडा हुवता जाय रैया है। थोथ बापर रैयी है आं रिस्ता मांय। घर-परिवार मांय मां, जीसा, बैन, भाई, भोजाई अर लुगाई आद साव निजू रिस्ता बगत परवाण नुंवी दीठ सूं सोचण-समझण माथै मजबूर कर रैया है। अरथ री मार सूं बदळतै आं संबंधां रौ जटिल गणित आं कहाणियां रै मारफत कहाणीकार कठैई समझावै कोनी। बिना किणी पाटी पढायां कहाणीकार जाणै आं कहाणियां मांय आपरी मन री पाटी खोल'र आपां आगै धर देवै। आं कहाणियां मांय उघड़ता हरफ आपां रै हियै ढूकता लखावै।

'बदळती सरगम' री कहाणियां रै रचाव मांय बगत रौ घणौ आंतरौ हुयां उपरांत ई अै कहाणियां आपरै भासिक रचाव अर सुर मांय अेक ढाळै सूं सजियोड़ी है। कहाणियां रा पोत ई अेक खास सुर सधियोड़ा लखावै। इयां लागै, जाणै न्यारी न्यारी कहाणियां री कोई अेकठ रागळी है। आं कहाणियां मांय जठै रिस्ता नै अंवेरण रौ दुख-दरद है, बठै ई रिस्ता नै निभावण री दुविधा पण है। सरुआती कहाणियां गांव री अशिक्षा-अंधविश्वास, साधना रै अभाव सूं जुड़ियोड़ी है, तौ छेहली कहाणियां भणाई-लिखाई रै उपरांत ई बदळती दुनिया मांय खून रा अर मन रा रिस्ता नै लेय'र अेक आकलन है। आं कहाणियां मांय लूण-लखण अर मरजादावां री बात देखी जाय सकै। बगत रै बदळाव, आधुनिकीकरण अर सैरी-संस्कृति रंग-ढंग रै उपरांत ई संग्रै रा अमूमन सगळा पात्र जीवण-मूल्य, नैतिकता अर अपां रै जमीनी-संस्कारां माथै थिर ऊभा दीसै। सगळा आपरी मरजादावां मांय काण-कायदै सूं बंध्योड़ा रैवै। सवाल औ है कै खराखरी आं कहाणियां री दुनिया इणी ढाळै री रैयी है का कहाणीकार री आ कोसीस रैयी है कै कहाणियां रै पात्रां नै अेक सींव मांय ठेठ तांई राख्या जावै।

तूटती सींवां री बानगी आपां कहाणी 'बदळती सरगम' मांय देख सकां, जठै वाधू (वसुधा पंवार) आपरी बैन बीना रै ब्यांव रौ मारग काढै। कांई बीना माथै हुयै अनाचार रै खिलाफ वसुधा नै ऊभो नीं हुवणौ चाइजै। हुवणौ चाइजतौ हौ, पण उण पाखती जठै बा ऊभी हुवै बा जमीन कठै? जिण छोरी रौ बाप अर भाई मारग सूं उतरियोड़ा हुवै तद फगत औ अेक ई मारग बचै जिकौ कै कहाणीकार बरतै। 'बदळती सरगम' असल में समाज रै उण वरग री आवाज पूरै विरोधाभास साथै उठावै जठै सुर, संगीत अर सरगम तौ है, पण आज रै बदळतै जुग मांय लोक संस्कृति माथै जिकौ संकट दीसै उण नै देखतां सगळी बातां अकारथ हुवण लागगी है। 'अबखै मारग' री नायिका पारबती इमियां रै मारफत जिण जोत नै अंवेरण रौ मनोमन संकळप साधै उण पेटै केई अबखायां तौ आवणी ई ही। सेवट धंवर छंट जावै। आ कहाणी संस्थावां रै नांव माथै हुवती पोल नै खोलै, तौ साथै ई अेक घर मांय मां गंगाबाई अर बेटी विमला रै जीवण-मूल्यां मांय आवण वाळै आंतरै नै ई आपां सांम्ही जतन सूं राखै।

'बदळती सरगम' मांय समझौतौ है, तौ दूजै पासी नुंवै अर जूनै बगत रौ मांयलौ-बारलौ जुध पण है। अठै औ जुध केई रूपां अर रंगां मांय देख्यौ-समझ्यौ जाय सकै। 'दूजी लुगाई' कहाणी मांय गीता रौ बाप जीयाराम आपरै भाई रावतराम री बात राखतौ समझौतौ करै, तौ खुद गीता ई आपरी जूण-गाड़ी जिण नै बूढै बळद अर दूजबर नरसाराम सूं बंधा दी जावै उण सूं समझौतौ करै। कहाणी मांय लोकगीत रौ प्रयोग सांस्कृतिक रंग नै राखै तौ आ पूरी कहाणी ई संस्कारां री मानीजैला। गीता नांव री छोरी आपरै घर-घराणै अर संस्कारां री लाज राखै। संस्कार ई हुवै, जिका फगत अेक रात मांय गीता नै उण री ऊमर सूं दूणी ऊमर री गीता बणा देवै। कहाणीकार गीता रै मारफत अठै री जड़ां मांय बस्योड़ा काण-कायदां रौ जस बखाणै, तौ कहाणी 'आखती-पाखती री आवाजां' मांय हरिजन बस्ती वाळै गुलजारी रै मारफत समाज मांय छोटा समझ्या जावण वाळै वर्गां री पीड़ नै राखै। रगत सूं अस्नान करण वाळै वीरां रै देस राजस्थान मांय आपसी प्रेम अर सांयती सूं ठरियोड़ौ ठीमर सुर संग्रै 'बदळती सरगम' रै मारफत सुण सकां। कहाणियां मांय दिन-रात, गरमी-सरदी, रीत-रिवाज, काण-कायदा अर रूंखां तकात री विगतवार जरूत मुजब जाणकारी मांडता नंद भारद्वाज जाणै आं कहाणियां मांय लोक-जीवण नै सुर देवै।

'अकाळ मौत' कहाणी रौ नायक कथावाचक अेक तार—'भाभी रौ सरगवास व्हेग्यौ' मिल्यां गतमागत मांय पड़ जावै अर दोघाचींत मांय गाडी सूं आपरै गांव कवा पूगै। उणनै समाचार सूं पूरौ खुलासौ नीं हुवै कै असल मांय मौत किण री हुई है। गीता उणरी लुगाई जिकी कै पेट सूं ही उणरौ सरगवास हुयग्यौ का उणरी भौजाई रौ। कहाणीकार इण दुविधा अर दुख नै इण ढाळै रचै कै पूरी कहाणी मांय मौत री सूनवाड़ अर तणाव री कसमसाट बणी रैवै। संग्रै री घणकरी कहाणियां रा नायक कथावाचक ई है, अर वै आपरै जीयोड़ा अनुभवां नै किणी जातरा-संस्मरण का निजू-डायरी री गळाई अेकूकी बात नै परोटता थका रचै, तद अै कहाणियां किणी औपन्यासिक फलक दांई बांचणियां रै मन-मगज मांय ऊंडी उतरती जावै।

जिकौ मिनख जिकी जागा जलमै, मोटौ हुवै उण मिनख री जड़ां उणी जागा हुवै। गांव मांय जाया-जनम्या कहाणीकार नंद भारद्वाज आपरी आं कहाणियां मांय गांव री बारंबार हर करै। नौजवानी री आं कहाणियां मांय नौकरी रै सिलसिलै मांय घर-गांव छोडण री पीड़ रा दरसाव मिलै। परिवार सूं न्यारै हुवण रै दरद नै 'अळगाव' कहाणी सबद देवै, तौ 'उळझण में इकेवळा' बांचता चावा-ठावा कहाणीकार नृसिंह राजपुरोहित री अमर कहाणी 'विदाई' री ओळूं आवै। विदाई कहाणी अेक डोकरी रै गांव छोडण री महागाथा रचीजी है। आ कहाणी उणी पाठ नै दूजी ढाळै परस करै—गांव सूं अेक सी.अे. रै सैर जावण री मनगत नै केई ब्यौरा लियां कहाणीकार रचै। सांम्ही आवती उळझण नै इण कहाणी मांय जोरदार तरीकै सूं परोटी है। कहाणी री छेहली ओळियां है—''खुद म्हनै ई सगळी बातां माथै नुंवै सिरै सूं विचार करणौ हौ। वां रै मन माथै बिना कोई ठबक लगायां अर घर-परिवार रौ बिना कोई अहित करियां अैड़ौ निवेड़ौ सोधणौ हौ, जिकौ घर रौ अर म्हारी जिंदगाणी रौ, दोन्यां रौ मांण राख सकै...।'' *(पेज 98)*

कहाणीकार नंद भारद्वाज इक्कीसवीं सदी तांई पूगतां-पूगतां आपरी नौकरी रै सिलसिलै सूं राजस्थान री धरती सूं बारै गया। परदेसी धरती नै संग्रै री छेहली कहाणियां— 'वापसी' अर 'आपसदारी' आद मांय आपां देख सकां। 'वापसी' रा कथावाचक आणंद बाबू नौकरी रै सिलसिलै में अगूण-उतराद हलकै गुवाहाटी आपरै मित्र आलोक भेळै रैवै। घर मांय रैवण में बियां तौ उमा, दीपक, बापूजी अर माताजी ई है, पण कहाणीकार सगळां सूं बेसी ओळखाण सुखदा सूं करावै। आ गुवाहाटी सूं जुड़ी कहाणी असल में सुखदा री वापसी री कहाणी बण जावै। कहाणी रै सेवट मांय सुखदा रौ कैवणौ है—''आणंद बाबू, जे इत्ता बरस आछै जीवण री उडीक राख लीवी, तौ अबै ऊंतावळ मत करजौ। व्है सकै थांरै आछै भाग में भळै ई कोई रौ सीर बाकी हुवै। बाबूजी री तबियत में कीं सुधार हुयौ तौ वां नै बीकानेर चालण सारू फेरूं अेकर अरज कर देवूंला, आप ई कोसीस कर नै देख लीजौ, पण जे वा बात नीं बणी, तौ म्हैं आपरै साथ अेकली ई चालण नै त्यार रैवूंला। म्हनै लागै म्हारी आ वापसी अबै आपरै ई भाग में आवती दीसै।'' *(पेज 134)*

आं कहाणियां मांय प्रेम, मरजादा अर संयम नै अेकठ परोटण रौ हुनर देख्यौ जाय सकै। 'आपसदारी' री प्रिया अर कथावाचक अनुराग आपसी प्रेम नै कहाणी मांय जिण आपसदारी रौ नांव देवै, बौ असल मांय नुंवी पीढी रै जिम्मेदारी अर जबाबदेही मांय करीज्यै भरोसै सूं उपज्यौ अनुराग ईज है। मुंबई जिसै सैर मांय किणी फिल्मी पटकथा रै प्रेम दांई दीसतै सगळै घटनाक्रम मांय कहाणीकार पक्कै पतियारै, प्रेम अर पवित्रता नै प्रगट करणौ चावै। इणी प्रेम, पतियारै अर पवित्रता रौ दूजौ रूप कहाणी 'आतम-निरवासी' मांय देख सकां। गांव मांय बसणिया मास्टर मिथिलेशजी भला मिनख है। बै आपरै घर सूं धोखौ खायोड़ा है अर कलकत्ता रै सेठ घनश्यामदास रै अठै काम करतां उणां री बेटी कुमुद माथै उपकार कर'र सेठ रै मारफत ई गांव पूग्या है। आ दोलड़ी कहाणी है, जिण मांय कहाणी रौ कथावाचक नरेश आपरै भाई रै अंतरजातीय प्रेम-कहाणी रै मिस मिथिलेशजी री कहाणी नै मारग देवै। नुंवै जुग री जरूरत मुजब मिनख रै अंतस री दुविधा, उळूझा अर दरद रै अबखै सवालां नै कहाणीकार घणै नेठाव सूं प्रगट करै।

नंद भारद्वाज री आं कहाणियां मांय कथावाचक अर मुख्य-पात्रां रौ घरबीती रा गीत गावणा असल मांय न्यारै-न्यारै रूपां मांय मिलै। रचण नै तौ कहाणियां रची है, पण आं कहाणियां रै मिस रचीज्या बांरा खुद रा आत्मकथा-अंस है। हरेक कहाणी मांय कैवण री इकसार कला है। नेठाव है। औ कैवण रौ भाव अर नेठाव बात-परंपरा सूं जुड़तौ लखावै। आं कहाणियां मांय बीजी-बीजी गद्य विधावां घणी नजीक आय जावै। मांड'र विगतवार पूरी-पूरी कहाणी कैवण रै जतन मांय कहाणियां जाणै किणी उपन्यास रै खोळियै रचीज्या जातरा-संस्मरण बण जावै। अठै औ कैवणौ लाजमी लखावै कै 'दूजी लुगाई', 'उळझण में इकेवळा' अर 'आखती-पाखती री आवाजां' जिसी कहाणियां रै मारफत कहाणी-जातरा मांय नंद भारद्वाज अेक यादगार कहाणीकार रूप ओळखीजैला।

❖❖

सी-107, वल्लभ गार्डन, पवनपुरी, बीकानेर-334003 (राजस्थान)

पोथी : मूंघी वैश्विक कहाणियां / विधा : उल्थौ / उल्थाकार : पुष्पलता कश्यप / प्रकासक : नारवाल प्रकासण, मेन मार्केट, पिलानी 333031 / पाना : 176 / मोल : 300 रिपिया।

डॉ. आईदानसिंह भाटी

मूंघी वैश्विक कहाणियां

हिंदी अर राजस्थानी रा मानीता रचनाकार पुष्पलता कश्यप रौ औ कथावां रौ अनुवाद है। इण मांय तीस कहाणियां रा अनुवाद है, जिका सगळा विदेसी रचनाकारां री कथावां रा है। रूसी, फ्रेंच, चेक, हंगेरियन, जर्मन, इंगलिश, ईरानी, अरबी, जापानी, तुर्की, इतालवी, नार्वेजियन, अमेरिकी इत्याद भासावां री अै कथावां दुनिया रै साहित्य री धरोहर है। आं कथावां में मानखै री मनगतां, परिवेश, चरित्र अर उद्देश्य सांम्ही आवै। मैक्सिम गोर्की, लियो टॉल्सटाय, मोपांसा, ऑस्कर वाइल्ड, पर्ल अेस. बक, हरमन हेस, लेजर लास्ट, कारेल चापेक, इतालो काल्विनो, ओरहान पामुक, नूरा अलगामदी, त्वा हुसैन, हुसैन उल कबानी, फरंह नाज शरीफी, रिजा जोलई, यासुनारी कावाबाती, बजोरनस्टेन बजोरनसन, अलतोज स्टेन, जीरोम वेडमन, वाशिंगटन इरविंग, जैक कोप, पीटर स्क्रीवन, अेच.जी. वेल्स, हेक्टर ह्यू मुनरो 'साकी', जान नेरुदा इत्याद रा नांव इणमें खास है।

कहाणियां री इण किताब में 'साहित्य लेखन में अनुसिरजण रौ महत्त्व' नांव रौ पूर्वोवाक घणौ महताऊ। इणमें लेखिका अनुवाद रौ मूळ दायित्व, साहित्य रौ मूळ प्रयोजन, अनुवाद करम अेक तरै सूं परकाया-प्रवेस, शैली-शिल्प इत्याद बातां माथै आपरी राय राखी है। रसूल हमजातोव रै 'मेरा दागिस्तान' सूं मायड़ भासा री बात उठातां थका पुष्पलताजी कैवै, ''कई बार अनुवादक मूळ नै इतरौ बिगाड़ देवै कै उणरौ चेहरौ ई नीं पिछाण सकां। कैवण रौ मतलब औ कै नीं तौ विचारां अर तथ्यां सागै छेड़छाड़ की जावै, नीं 'शैली-शिल्प' मांय बेजा घालमेल।'' इण तरै अनुवाद रा सबळ पखां रा रूप पुष्पलताजी सांम्ही राखै।

आं कहाणियां में मिनखाजूण रा भांत-भांत रा भाव अर विचार रूप मिळै। गोर्की री कोलुशा में अभावां में पळतै टाबर रै संवेदनसील मन री पीड़ा सांम्ही आई है, जिकौ मिरतू रै मुंडै में जा'र ई आपरै घर नै सुख पूगावणी चावै। 'तीन सवाल' तालस्ताय री नैतिकता री कथा है जिणमें सेवा, करुणा अर श्रम री महत्ता उजागर व्ही है। मोपांसा री फ्रांसिस कथा संयोगां, मिनखपणै अर जिनावरां सूं प्रेम करणियै आदमी री कथा है, जिकौ आपरी कुतिया रै मोह में गैलौ व्है जावै। मोपासां री ईज कहाणी 'फेरूं सुबै हुयी' मरद-लुगाई रै प्रेम री मनगतां नै उजागर करै। इतालो काल्विनो री कहाणी 'अेक नादीदौ मिनख' में सांकेतिक रूप सूं समाज रै विगसाव में नैतिकता अर भ्रष्टाचार रा रूप मिळै। लेजर लास्ट री कहाणी 'वहम' में लुगायां री मनगतां रौ अफवाही चितराम है। 'संगीत कंडक्टर री कहाणी' में लेखक कारेल चापेक कैवै

कै अेक मिनख जिकौ रात-दिन संगीत री धुनां नै ओळखै, अेक मिनख-लुगाई नै रात रा झगड़तां देख हत्याकांड री कल्पना कर लेवै, जदकै वौ वांरी भासा नीं समझै। अर सुबै रै अखबार में हत्या री खबर मिळै। कार्ल चापेक री कहाणी 'चढाय देवौ इणनै सूळी माथै' में प्रेम, सेवा अर करुणा री बात करणियै मिनख नै संसारी-कारोबारी मानखौ सूळी चढावण री बातां करै। जान नेरुदा री कहाणी 'वैंपायर' में अेक चित्रकार मरतगाळ नै ओळख जावै, अर उणरा चितराम मांडै। ऑस्कर वाइल्ड री कथावां 'बेलीपौ', 'बुलबुल अर गुलाब', 'सुखी राजा' मानखै री करुणा अर स्वार्थवृत्ति रै दो रूपां नै पग-पग माथै परतख करै। 'साबुण री टिकिया' में 'साकी' मिनख री मांयली वृत्तियां नै उजागर करै कै वौ हुसियारी बरततां कींकर ठगीज जावै। 'मां' पर्ल अेस. बक री अैड़ी कथा, जिकी चीनी क्रांति रै पछै री अमानवीय-जोरामरदी अर ममतामयी मां री नासमझ विडंबनावां रौ कारुणिक चितराम है। 'आंधां में कांणौ राजा' अेक प्रतीक कथा है, जिणमें सूझण रौ अरथ ग्यान सूं है। 'कठपुतळियां कदैई बूढी नीं हुवै' में यादां अर सपनां रै बाबत पीटर स्क्रीवन पाठकां सूं बंतळ करै। 'जठै मन मिळै' कथा इतिहास अर जादुई जथारथ नै भिळा'र कथा कैवै। 'स्हैर' हरमन हेस री जियाजूण रै बदळावां री कथा है। 'जीसा' जीरोम वेडमन री बूढापै री मनगतां नै सांम्ही लावै। अलतोज स्टेन री 'नौकरी' पूंजीवाद सूं कळिज्योड़ै अेक अैड़ै मिनख री कथा है, जिकै सारू संबंधां रौ कोई अरथ नीं है। 'बापूसा' संसारू साच अर सुख-दुख री पीड़-कथा है। यासुनारी कावाबाती री कथा 'पुनरजलम' जुद्ध रै मनोग्यान नै दरसावै। 'ओळुंवां रौ छेहड़ौ' रिजा गिलाई री प्रेम री याद कथा है। हुसैन उल कबानी री कथा 'इण रमजान में आद्यात्मिक पवित्रता री कहाणी है, जिणमें आदमी मांय सूं बदळीज जावै। नूरा अलगामदी री 'अेक फ़ाख्ता है लुगाई' कहाणी नारी जात री पीड़ावां रौ दस्तावेज है। त्वा हुसैन री कहाणी 'दरद रौ रिस्तौ' लुगाई रै बहनापै री कथा है। इतालो काल्विनो री कहाणी 'पइसौ सै कीं कर सकै' में लोककथानुमा चतराई बताईजी है। सगळी कहाणियां मिनखाजूण री भावनावां अर मनगतां नै सांम्ही लावै।

अनुवाद में लेखिका मूळ-संवेदना नै परोटै। भासा-सैली में राजस्थानी रौ चोखौ प्रयोग करियौ है। तत्सम सबदां रै प्रयोगां सूं लेखिका कथावां रै संप्रेषण नै बधायौ है। राजस्थानी पाठकां सारू संभाळ है आ पोथी।

❖❖

82-बी/47, तिरुपति नगर, नांदड़ी, जोधपुर 342015

आप अपरंच नै सदस्यता शुल्क, विग्यापन अर आजीवन चंदौ नीचै लिख्योड़ै ठिकाणै माथै मनीआर्डर कर सकौ या नीचै बतायै मुजब सीधौ बैंक में जमा करा सकौ :

संपादक, अपरंच

A-360, सरस्वती नगर, बासनी, जोधपुर 342005 (राज.)

स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एंड जयपुर (रातानाडा शाखा, जोधपुर) : खाता सं. ***61218386313***

रिपिया जमा करा'र 9413961800 फोन माथै सूचना करौ।

पोथी : कीं बातां कीं यादां/ विधा : संस्मरण / लेखिका : डॉ. तारालक्ष्मण गहलोत
प्रकासक : रॉयल पब्लिकेशन, जोधपुर/ पाना : 112 / मोल : 150 रिपिया।

सत्यनारायण इंदौरिया 'सत्य'

कीं बातां कीं यादां

संस्मरण लेखन साहित्य समाज री अेक महताऊ विधा है। सगळां रै जीवण जातरा मांय संस्मरण रा बिंब-पड़बिंब बण'र दीठ मांय आवता रैवै, पण वांनै माळा रा मिणियां दायीं पिरोय'र सहेज राखणा घणी चोखी बात है। डॉ. तारालक्ष्मण गहलोत रै संस्मरणां री पोथी 'कीं बातां कीं यादां' में आपरै जीवण रा कीं खाटा-मीठा, चरपरा कै बूर रा लाडू जैड़ा संस्मरण हिरदै रै मरम नै झिकझोड़्यां बिना नीं रैय सकै। साधारण बात नै लूण-मिरच लगाय'र मरमपरसी बणाय'र परोसणौ साहित्य री टेढी खीर है नै सुवादिया सबड़कौ है। इण सबड़कै सूं तन-मन पोख पावै, सुख-सांयत अर आणंद रै डोलर हींडै हींडतौ झोटा खावै, साहित्य री गौरव गरिमा रा गीत गावै अर गुणगान करतौ जरा ई नीं अघावै। हां, तौ ल्यौ सा! अबै अै डॉ. गहलोत रै पंदरा संस्मरणां रै सुवाद री बानगी चाखौ तौ सरी।

अै संस्मरण हिरदै री संवेदना नै चेतन करै, सबद साख री मरुवाणी री खोळ भरै, काळजै नै चमन बणाय'र हरियौ-भरियौ करै, पढियां पछै नीं सरणआळा काम सरलता सूं सरै, ग्यान रौ कळस लाध जावै घरै, परापरी सूं कोनी बात परै, आ बात जाणलौ हिरदै सूं खरोखरै। इणां मांय आपणै सरुआती शिक्षा जीवण री अंवळी-संवळी अबखायां अर सबळतावां रौ सार-निचोड़ है।

इण पोथी रा संस्मरण सगळा ई अेक सूं अेक घणा उमदा अर महताऊ है, जिका पाठक रै हिरदै में आपरौ प्रभाव छोड्यां बिना नीं रैवै। आचार्य पं. बदरीप्रसादजी साकरिया सारू 'सच्चाई रै मारग माथै चालणियौ साहित्यकार' मांय वांरै व्यक्तित्व अर कृतित्व री सांगोपांग जाणकारी दीवी है कै वै कित्ता लूंठा सिरजण-धणी हा, सांतरा साहित्य-साधक हा अर सोध-साहित्य रा कितरा मरमग्य हा— आ सोचण अर मनन करण री बात है। वांरै लेखन री गरिमा नै चौतरफी दीठ सूं जोख-पजोख'र सिरजण साधना मौलिक का संपादनतणी रचनावां रौ लेखौ-जोखौ घणी ठिमायी सूं परख'र उजागर करणै रौ महताऊ प्रयास घणौ सरावण जोग है।

'कैही अणकैही अेक काव्यऋषि री' शीर्षक मांयनै राजस्थानी भासा साहित्य रा लूंठा लिखारा, 'ओळमों' रा संपादक, राजस्थानी रा भीष्म पितामह, सबदऋषि अर काव्ययोगी,

प्रज्ञापुरुस श्री किशोर कल्पनाकांत रौ जीवणवृत्त, उणां री साहित्य जातरा, सिरजण-साधना अर कळा प्रवणता रौ सटीक वरतांत उकेरीज्यौ है। इण काव्ययोगी अर प्रज्ञापुरुस री साहित्य-साधना सरावण जोग है। 'हां, म्हैं जाणूं अम्बू शर्मा नै' मांय अम्बू शर्मा रै आत्मीय भाव-विचारां रौ खुलासौ करीज्यौ है। इणमें वै लिखै, ''म्हैं उण अम्बू शर्मा सूं घणी परिचित हूं, जिकौ किणनै ई कोई साहित्यिक सांस्कृतिक उपलब्धि रौ कोई समाचार मिलता पाण अजेज उणनै बधाई अर आसीसां री बौछार सूं सराबोर करतौ मोती जैड़ा फूटरा हरफां सूं पोस्टकार्ड लिखै, समाचार नैणसी मांय छापै अर जठै सूं औ समाचार मिळै उणरौ ई आधार साथौसाथ जतावै। राजस्थानी भासा-साहित्य रौ रुखाळौ, कलम रौ सिपाई, सादगी, विनम्रता अर अपणायत रौ परयाय अेक टणकौ विद्वान, पण अेक सहज साधारण सामान्य मिनख अम्बू शर्मा सूं म्हैं परिचित हूँ। औ म्हारौ सौभाग्य है।''

'राधिका' संस्मरण मांय अमरीका रै फिलाडेल्फिया री रैवणआळी फिरंगणी 'अेंजिला' भारत में कृष्ण-भक्ति अर क्लासिकल डांस री स्टडी सारू अठै जयपुर रै गोविंद देवजी रै मिंदर में आयगी अर निरत-गुरु केशव सूं विधिवत निरत री शिक्षा लेय'र उणां री ईज हुयगी। कीं बगत पछै वीं नै जद निरत-गुरु केशव री हकीकत रौ पतौ लाग्यौ जणा दुखी होय'र पाछी अमरीका गई परी। उणरै अठै रै जीवणकाळ री घटना रौ सांगोपांग चित्रण इण मांय उकेरीज्यौ है।

'उयां नै मत कैहिजौ' मांय सीमा नांव री भोळी बालिका रौ ब्यांव टाबरपणै मांय कर दियौ जणा वीं रै जीवण मांय कांई-कांई अबखायां आई, किण-किण तरै रा फोड़ा भुगतणा पड़्या अर छेकड़ बालिका गृह मांय प्रवेस लेवतां पाण उणरै पुनरवास री कारवाई सरू हुई। बाल कल्याण समिति री मारफत उणरौ आपरै माता-पिता सूं मिलाप हुयौ अर वा घरबड़ती अर समाज में रळती हुय सकी।

'चांदणी सूं चांद तांई' रै मांय पुराणै समै री परंपरावां अर अबार रै रीत-रिवाज मांय आयै बदळाव रौ सांप्रत मांय दरसाव करीज्यौ है। पैली समाज रै लूंठै तबकै री लुगायां कीकर पड़दौ राखती? कीकर घूंघटौ राखती? अर किण तरै 'चंदोवै' चांदणी में वांनै घर सूं बारै निकळणौ पड़तौ, आं बातां रौ साचौ रूप-सरूप दिखायौ गयौ है। आज रा लोग आं बातां नै सुण घणौ अचूंबौ करै पण उण बगत आ हकीकत ही।

'घर बिना' डॉ. तारालक्ष्मण गहलोत रौ घणौ हिरदै विदारक अर मरम-परसी संस्मरण है, जिकौ पाठक नै सरू सूं लेय'र अंत लग बांध्यां राखै। वीं रै मन मांय आ आसंका बणी रैवै कै देखां बात आगै कांई घड़ै। धापूड़ी रौ धणी उणनै बळबळती लकड़ी सूं मारै, जिणसूं वा बळ जावै। उणनै लातां सूं घायल कर देवै। बेहोसी में उणनै सफाखानै मांय भरती करावणी पड़ै। पुलिस मुआयनौ करै अर मुकदमौ चालू व्है जावै। लोगां नै ठाह लाग जावै कै उणरा धणी नै आजीवन कैद री सजा होवैला, तद उणरी रखैल उणनै छोड जावै। उणरी सासू उणरी मां रा पग पकड़र माफी मांगै। धापूड़ी मां कनै रैवै, भोजायां मौसा बोलती रैवै। धापूड़ी मांयकै में रैय'र काठी धाप जावै अर आपरा बयान बदळ देवै।

इण गत संस्मरण रौ तानौ-बानौ इण गत बुणीज्यौ है कै पाठक उणनै पूरौ पढ्यां बिना अधबिच्चै छोड नीं सकै। संस्मरण रा उतार-चढाव अंत तांई जिग्यासा बणाई राखै। अंत में टांय-टांय फिस्स हुय जावै। आज रै समाज माथै आ हथोड़ै री चोट रौ काम करै।

'लुगाई रौ मोल' में लुगाई रै जीवण री दुरदसा रौ वरणन करता थकां उणनै मिनख रै पगां री पगरखी बताई है—''पगरखी रौ कांई, जद चावौ तद बदळ लेवौ, पगरखी रौ कांई माजनौ?'' दाखूड़ी निरलेप भाव सूं बोली, ''लुगाई तौ मिनख सूं आज तांई ठगीजती आई है। आ जूण ई अैड़ी है।''

इण तरै खरोखरी बात आ है कै डॉ. तारालक्ष्मण गहलोत रै संस्मरण री पोथी 'कीं बातां कीं यादां' मांयला संस्मरण हिरदै री तंत्रिकावां नै झणकारै, विचारां नै चेतना देवै अर पुरुस नै सोचण सारू मजबूर कर देवै। आंतरिक संवेदना पाठक नै दिसा-बोध देवै अर हकीकत सारू सचेस्ट करै। इण सारू लेखिका नै साधुवाद, लखदाद अर हियै तणी बधाई।

❖❖

22, सत्य सदन, विदुरजी मिंदर रै कनै
रतनगढ़ (चूरू) 331022

फार्म नं. 4, नियम-8

पत्रिका रौ नांव	:	अपरंच
प्रकासण री ठौड़	:	जोधपुर
प्रकासण री अवधि	:	तिमाही
मुद्रक	:	पारस अरोड़ा
रास्ट्रीयता	:	भारतीय
ठिकाणौ	:	A-360, सरस्वती नगर, बासनी, जोधपुर-342005 (राज.)
प्रकासक	:	पारस अरोड़ा
रास्ट्रीयता	:	भारतीय
ठिकाणौ	:	A-360, सरस्वती नगर, बासनी, जोधपुर-342005 (राज.)
संपादक	:	गौतम अरोड़ा
रास्ट्रीयता	:	भारतीय
ठिकाणौ	:	A-360, सरस्वती नगर, बासनी, जोधपुर-342005 (राज.)
उणां सेयर होल्डरां रा नांव अर ठिकाणा, जिणां कनै कुल पूंजी रा 10% सूं बत्ता सेयर है	:	कोई कोनी

म्हैं पारस अरोड़ा घोसित करूं कै ऊपरलौ विवरण म्हारी जाणकारी अर विस्वास रै मुजब सत्य अर वास्तविकता माथै आधारित है।

पारस अरोड़ा
प्रकासक

पोथी : रसूल हमजातोव अर विदेसी कवितावां / विधा : उल्थौ / उल्थाकार : डॉ. रमाकांत शर्मा / प्रकासक : रॉयल पब्लिकेशन, जोधपुर / पाना : 80 / मोल : 150 रिपिया।

रामसिंह राठौड़

रसूल हमजातोव अर विदेसी कवितावां

हिंदी रा ख्यातनांव कवि अर आलोचक डॉ. रमाकांत शर्मा रसूल हमजातोव अर दूजा विदेसी कवियां री कवितावां रौ राजस्थानी अनुवाद पुस्तक रूप में मायड़ भासा रा हेताळुवां सांमी राख्यौ है, उणसूं राजस्थानी साहित्यकारां अर पाठकां नै रूसी कवियां सूं लेय'र चीनी, अफ्रीकी, युगोस्लाव, तुर्क अर उज्बेक कवितावां तांई अलेखूं विदेसी कवियां री कवितावां री मठोठ, जूंझ अर प्रकरती रै रूपाळै रंग रा चितराम देखण नै मिलै। सबद-रूप में मंडियोड़ी अै कवितावां मिनखपणै री पिछाण, मरजाद, उणरी अबखायां सूं आथड़ती जियाजूण री साख भरै अर मुगती रौ मारग बतावै नै आपरी जलम भोम, संस्क्रति अर सभ्यता रै गुमेज सागै उणनै वैश्विक धरातळ सूं अेकाकार करण री जुगत करै।

टाळवां विदेसी कवियां री अै कवितावां पढतां थकां आपां नै लखावै कै अै कवितावां अर आंरौ उणियारौ आपांणै आसै-पासै रच्योड़ै-बस्योड़ै संसार री ईज दुख-पीड़, ऊंच-नीच सूं मुगती री बिसरयोड़ै मिनखीचारै सूं जुड़ण री जरूत बतावै। घणकरा कवियां मायड़ भोम में रैवता थकां देसी-विदेसी गुलामी, मिनख सूं मिनख रै भेद, छीजता सांस्क्रतिक मूल्यां रै खिलाफ अवाज उठाई अर जलमभोम सूं लेय'र प्राकरतिक साधनां री लूट नै रोकण तांई आपरी कलम उठाई, जिण मांय प्रतीक रूप में प्रकरती अर पंछियां सूं लेय'र नारी जात री अबखायां नै मांडण सारू आपरी कलम चलाई। मिसाल रै तौर माथै दागिस्तानी कवि रसूल हमजातोव री कविता 'सारस' आपरै देस खातर लड़णिया लड़ाकां नै सारस रै मिस बतळावै—

कदैई म्हानै लागै कै लड़ाका वै / जे पाछा नीं फिरया रगत रंगियोड़ा खेतां सूं / गाडीजिया नीं भायां री कबरां में / बदळ पलटीजिया धौळा सारसां में / वै आज भी उण थेट बोलाट सूं / उडै है अर म्हांनै हेला पाड़ै।

रसूल री ईज अेक और कविता 'वंदण' में धरा अर गिगन नै देख'र वै उमाव रै सागै कैवै—

धरा अर गिगन जद थांनै उगसावै / जीवण रै रंगरोळ री इंछा जागै / पद पगल्या थमैला / प्रगटैला कंठ सूं वंदण।

इणी तरै रसूल अेक मुक्तक में मिनखपणै रै मिटण री पीड़ अर ठगनीति रै पड़पंचां नै भूंडता थकां आपरी पीड़ा बतावै—

ठगनीति अर पड़पंचां सूं / मिनखपणै नै मेटण खातर / कद राड़ मंडी अबकाळै / अैड़ौ समै कदैई नीं आयौ / कितरौ रगत रळ्यौ मिनखां रौ / कितरौ जाळ झपट रौ कातै।

आपरी धरती, उठारौ मानखौ अर देस सारू माथौ देवणिया सूरमां नै कदैई नीं भूलता थकां कवि रसूल हमजातोव मिनखपणै नै भी कदैई नीं भूल्या अर अै वांरी कविता रा सिणगार बणिया।

चीन रा राष्ट्रनायक माओत्से तुंग री घणकरी कवितावां लोकजुद्ध री वेळा लड़बा वाळी मुगती सेना अर कमतरियां नै समरपति है। वांरी अगुवाई में लड़ी लड़ाई री बानगी वांरी कवितावां में ठौड़-ठौड़ देखण में आवै—

पूरब में पौ फाटण लागी / होवण वाळौ है परभात / हालौ, हाकौ कर नीं बेली / थां तौ झट करलौ हल्लाण।

चीन रै इण लोकजुद्ध में लुगायां री भागीदारी नै सरावता थकां वै कैवै—

आज सगळी बेटियां चीन री / होंसाळ ऊंची आस सूं / रेसम-साटण सूं नीं, प्रीत तौ / आं नै आपणी लड़वास सूं।

'सिसिर रा बादळ' कविता मांय बै प्रकृति रौ वरणाव करता थकां कैवै—

हिम ढकिया बादळ सिसिर रा / उडता ज्यूं रेसा कपास रा / पुसब सगळा झिर गया / अर जे नीं झरया वै थोड़ाक है।

'चिंगकांग शान माथै फेरूं चढाई' करता थकां वै उणरी छिब आपरी कविता मांय उतार लेवै—

अठी-उठी सोनल पंखेरू / चहक रह्या गावै है गाणा / उडै अबाबील तीर तराटै / जळ झरणा री कळकळ वाजब है।

माओ री अेक कविता 'नुंवै बरस रौ दिन' लांग मार्च रै दरम्यान मंजिल हासल करण री हूंस नै चेतावै—

संकड़ा मारग, गैरा जंगळ लीलवाळी ढाळ / आज कठाक है आपणौ हल्लाण / सीधा वठै, जठै ऊई परबत रा पगल्या।

इण तरै माओ री कवितावां मांय देसभगती, सूरमावां रै झूंझारपणै अर हल्लाण नै मंजिल तांई पूगावण री उंतावळ है, दूजी कांनी प्रकरती रै रंगां मांय रंगियोड़ी चीन री धरती रा चितराम ई देखण में आवै।

इण संग्रै मांय रूसी कवि अलेक्सांद्र त्वारदोवस्की अर अनातोली साफ्रोनोव री कवितावां रौ अनुवाद ई काव्य-संग्रै री सोभा बधावै, जिणमें सांयती अर प्रेम रौ रंग है, दूजै कांनी उजास अर मुगती री उम्मीद है, जिकी जीवण रौ हौंसलौ देवै। अठै अलेक्सांद्र कैवै—

रुत रौ आखरी / सलेटी रंग खुम्भी फूल / खुद रौ टोप टेढौ कर / अजूं बी इतरावै है।

'नुंवौ फेरौ' में कैवै—

फागण रौ दिन / स्यात जलम लेवै है / कोई नवौ फेरौ / जिकौ इण बारगी / घणा टैम तांई / टिक जावैला।

म्है चावूं / थोड़ी तलक और बैठूं तावड़ै में / किणीक रूंखड़ा रै / तपियोड़ा ठूंठ माथै / देखतौ रैवूं / आथमता सूरज री बांकी किरणां रै / पळतै उजास में / पत्तां री गैरी छियां।

अनातोली साफ्रोनोव री कविता री दो बानगी देखौ—

भाग भला है—/ सूरज सूं / मिलणौ हुयौ पंथ में / भाग भला है—/ नवा साथीड़ां सूं / बंतळ में / भाग भला है—/ धरती माथै / नवा मीत मिळण में।

उषा चमकीली किरणां सूं / जिकी आवै है / खिड़कियां सूं / वसंत रै साथै / सगळी सरुआत थारै सूं।

आ ईज बात स्पेनी कवि फेदेरीको गार्सिया लोर्का री कवितावां मांय लखावै—

म्हूं तिरसौ हूं खसबू अर हंसणै रौ / म्हूं तिरसौ हूं चांदड़लै, कमोदणी अर / झुरयाई प्रीत सूं अळगाता / गीतां रौ।

विदेसी कवितावां मांय पैलड़ा सोवियत रूस रा गणतंत्र रैया थका देस उज्बेकिस्तान, किर्गिस्तान, कजाखिस्तान अर तुर्कमेनिस्तान रा कवियां री कवितावां ई सरावण जोग है, जिणमें कवि सुयुन बाई अेरालीयेव, मुलदागालीयेव, नाजिम हिकमत अर कवयित्री जुल्फिया इत्याद सिरै नांव है। कवयित्री जुल्फिया बगत री जरूत आं सबदां में बयान करै—

रवि दीपत आस / रोटी अर सांति रा / राग भरिया गान में / जरूरत है जिणरी / जन रै सम्मान में।

गुलामी अर दुख रा दिन याद करता थकां तुर्क कवि नाजिम हिकमत कैवै—

गोरा राज करै काळां माथै / कुण हौ वौ जिण तोड़ी ही सगळी मानतावां / कुण ओळखी ही पवितरता / मजूरां रै काम री?

थनै याद करणौ इण बगत / कितरै अचंभै आळी बात है / मौत अर जीत री खबरां बिचाळै / आपरी इण काळ-कोठरी में।

किर्गिजिस्तानी कवि सुयुन बार्ड् अेरालीयेव अेक सैनिक री नियति रै सरूप रौ वरणाव करता थकां आपरी कविता में लिखै—

बंदूकां री सलामियां / विदा री / अर / ओळूं उणां री / हाय रे, / सैनिक सपनौ!

कजाख कवि मुलदागालीयेव मिनख जमारै में आय मरणै सूं डरणिया लोगां नै सीख देवै—

ताप थांरौ तेज दैला दूसरां नै / भलै थारौ कमती है जीवणौ / धुंधळीजणौ कै सड़णौ बिरथां बकवाद / बरसां तांई सड़णै सूं कदै हुयौ है फायदौ।

दूजै कांनी बै नारी जाति नै आदर देता थकां कैवै—

कवि समरपित करै गीत / नारी, बैन, मां अर घरआळी नै / क्यूंकै नारी अर धरती नित ही / हरख अर मैणत री जामण है।

राजस्थानी में अनूदित इण कविता-संग्रै मांय अफरीकी कवि नजबुलो अेस. नदेवल, जुलूब्वाय मोलेफ, मोगानेवाली अर वोल सोइंका री कवितावां जनवादी संघर्ष नै नुंवी धार दीवी नै अफरीकी जनता रै अंधारपख री साची तस्वीर दुनिया सांम्ही राखीजी।

नोबल पुरस्कार विजेता नाईजीरियाई कवि वोल सोइंका रै सबदां में—

कठै गया सगळा पुसब / म्हैं कीकर बतावूं / अठा रा बाग-बगीचा तौ / मरतोड़ा अर सूखोड़ा है।

दिखणादै अफरीका रा कवि मोगानेवाली सेरोत आपरी साची बतळावण में सीख देवै—

डरपौ मत मालक / म्हैं आपनै दीख्यौ / अर आपणां उणियारा मिळ्या / इण काळी रात मांय / जिकी म्हारै उणियारै काळी है।

इणी गत दिखणादै अफरीका रौ अेक औरूं कवि जुलुब्वाय मोलेफ लोगां नै याद दिरावै—

हेताळू भोळिया / याद कर / रात री टेम ही वा / काळै मैदान सूं म्हां / तोड़्या हा तारा / दक्खण अफ्रीका री रात।

दिखणादै अफरीका रा ईज कवि नजाबुलो अेस. नदेवल रंगभेद रै खिलाफ संघर्ष नै याद करता थकां कैवै

चांद री पड़ी पळक / अैड़ी पांखड़ियां है वै / पांणी मांय पुरखां रा उणियारा / लागै ज्यूं रंगां में कदैई नीं रळियौ रगत।

इण संग्रै में अमरीकी कवि डेविड वैगनर अर युगोस्लाव कवि गाम डबनपोर्ट आपरी न्यारी पिछाण राखै अर पढणियां नै सुकून देवै।

इण भांत लगैटगै पंदरा कवियां रौ औ कविता संग्रै राजस्थानी मांय अनूदित कर डॉ. रमाकांत शर्मा राजस्थानी साहित्य री लूंठी सेवा करी है, वा सरावण जोग है अर राजस्थानी रा पाठकां नै विदेसी कवियां सूं सामेळौ करायौ, औ जतन राजस्थानी कविता नै नुंवी दीठ अर नुंवी जमीन देवैला, अैड़ी आसा कर सकां।

जठै तांई डॉ. रमाकांत शर्मा रै अनुवाद रौ सवाल है, वै आपरै मनोरथ में सफळ रैया, आ बात अनुदित कवितावां री भासा अर भावपख देख'र कैय सकां। अनुवाद में आयोड़ा ठेठ राजस्थानी सबद चिड़कली, टिल्लोड़ी, हंसलौ, गेड़ियौ, चांदड़लौ, तिणकलौ, सईकौ, गबोड़ौ, ओळूं, बेलीड़ा, चकरीबम्म, ठीमर, अडबंब इत्याद पाठकां नै कविता सूं जुड़ियोड़ा राखै अर भभकौ, परळाटौ, घरड़ाटौ, कुरळाटौ, फंफेड़ियोड़ा, तिरतिराटै जैड़ा राजस्थानी सबदां रौ प्रयोग अैड़ौ लखावै जाणै आपां आपणी भासा रै कवि री ईज रचना पढ रैया हां। इणरै अलावा इण अनुवाद में केई नुंवा मुहावरा अर बिम्ब घड़ीज्या, औ रमाकांतजी री कलम रौ कमाल है, ज्यूं— रूपाळौ समंदर, नागी-पागी डाळ, सोनलिया किस्सा, निबळा-कंवळा, हिमउजाळ, आभउजाळी, आभारंगी डूंगरियां इत्याद। केई नुंवा सबद ई अनुवाद री सोभा बधावै, मिसाल रै तौर माथै— झळमंडळ, भुंई, तेजाळ, हल्लाण, निफळ, अलोप इत्याद।

इण अनुवाद री केई पंक्तियां आपरौ अनोखौ असर छोडै

'जगजगाळ करै सूरज....', 'सामेळौ करै हिमाऊ बायरै रौ', 'संकड़ा मारग, गैरा जंगळ', 'नुंवा गगन रा उंड आंक में', 'आभै मुंडै मारगियै'।

आपां आ उम्मीद कर सकां कै आवण आळा टैम में रमाकांतजी अर दूजा साहितकारां री कलम सूं अैड़ी अमोलक पोथियां फेर लिखीजैला अर राजस्थानी साहित में बधापौ व्हैला।

❖❖

145, मोहन नगर, अे-सेक्टर
बी.जे.अेस. कॉलोनी, जोधपुर (राजस्थान)

●रपट/समाचार : गौरीशंकर कुलचंद्र

जोधपुर में दिरीज्या देस रा युवा लेखकां नै साहित्य अकादेमी पुरस्कार

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली कानी सूं बरस 2013 सारू घोसित युवा लेखन पुरस्कार 5 फरवरी 2014 नै जोधपुर में अरपण करीज्या। जयनारायण व्यास स्मृति भवन (टाउन हॉल) में आयोजित तीन दिवसीय 'यंग राइटर्स फेस्टीवल' मांय 22 भारतीय भासावां रै युवा लेखकां नै साहित्य अकादेमी पुरस्कार दिरीज्यौ। राजस्थानी रौ युवा लेखन पुरस्कार चूरू रा कुमार अजय नै वांरै कविता-संग्रै 'संजीवणी' सारू दिरीज्यौ जदकै हिंदी सारू अर्चना भैंसारे नैं औ पुरस्कार अरपण करीज्यौ।

समारोह री सरुआत साहित्य अकादेमी रै सचिव के. श्रीनिवासन रै सुआगत भासण सूं होयी। अध्यक्षीय उद्‌बोधन में अकादेमी अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ तिवारी कैयौ कै युवा सिरजणधरमी नुवीं दीठ सूं लेखन कर रैया है। वां कनै विस्वव्यापी दीठ है, जिणसूं नवलेखन उत्तरोत्तर आभौ नापतौ थकौ नित नुवां अैनाण मांडै है। पुरस्कार वितरण समारोह रा खास पांवणा हिंदी रा प्रख्यात कवि-आलोचक अर नाटककार डॉ. नंदकिशोर आचार्य हा।

दूजै दिन राजस्थान संगीत नाटक अकादमी री दीरघा में आयोजित सम्मेलन मांय पुरस्कृत लेखक आपरा रचनात्मक अनुभव राख्या। सिंझ्या नै आयोजित 'रचना-पाठ' कार्यक्रम रौ उद्‌घाटण प्रख्यात उर्दू शायर शीन क़ाफ़ निज़ाम करयौ। बडेरचारो अकादेमी अध्यक्ष विश्वनाथ तिवारी निभायौ। इणमें उज्जल पोगाम (असमिया), फोजोडसर गोयरी (बोड़ो), संजय कुंदन (हिंदी), पी. चंद्रिका (कन्नड़), कल्पना दुधल (मराठी), कुमार अजय (राजस्थानी), आदिल रज़ा मंसूरी (उर्दू) आद रचना-पाठ करयौ।

समारोह रै छेहलै दिन 'मैं क्यों लिखता हूं' विसय माथै राजस्थानी में अरविंद आशिया पत्रवाचन करयो। 'कहानी-पाठ' सत्र रौ बडेरचारौ राजस्थानी कथाकार मालचंद तिवाड़ी करयौ, जिणमें डॉ. मदन गोपाल लढ़ा आपरी कहाणी 'च्यानण पख' रौ वाचन करयौ। 'कविता-पाठ' सत्र में ओम नागर राजस्थानी कवितावां रौ पाठ करयौ।

चंडीगढ-अमृतसर में 'सत्याग्रह' अर मुंबई में 'जमलीला' रौ मंचन

राजस्थानी रंग संस्था 'रम्मत' कानी सूं नाटक 'सत्याग्रह' रौ मंचन 24 जनवरी नै पंजाब कला भवन चंडीगढ में करीज्यौ। चंढीगढ में आयोजित टीअेफटी विंडर नेशनल थियेटर फेस्टीवल 2014 मांय 'सत्याग्रह' रौ मंचन हुयौ। इणी'ज नाटक री दूजी प्रस्तुति पंजाबी रंग संस्था मंच-रंगमंच रै सौजन्य में अमृतसर में आयोजित 11वैं राष्ट्रीय नाट्य समारोह रै त्हैत 13 मार्च नै हुयी। इण नाट्य समारोह में देस रा नामी 10 नाटकां रो मंचन हुयौ। राजस्थानी रंग निरदेसक डॉ. अर्जुनदेव चारण रै इण चावै नाटक रै मंचन मांय रंगदीठ अर रंग-प्रयोगां सूं राजस्थानी रंगमंच रा प्रतिमान देस री नुवीं रंगभूमि माथै थापित हुया। इणी भांत मुंबई में आयोजित सातवैं 'नेशनल बसंत नाट्योत्सव' मांय डॉ. चारण रौ राजस्थानी नाटक 'जमलीला'

खेलीज्यौ। राष्ट्रीय महारंग मुंबई रौ औ नाट्योत्सव 24 सूं 30 मार्च तांई मुंबई विश्वविद्यालय रै अेकेडमी ऑफ थियेटर आर्ट्स कानी सूं मनाईज्यौ। नाटक 'जमलीला' रौ मंचन 29 मार्च नै हुयौ। औ नाटक समकालीन भारतीय व्यवस्था में प्रजातंत्र मांय व्याप्त अबखायां रौ सांतरौ खाकौ रंग-दरसकां सांमी खींचतौ थकौ जागण रौ हेलौ करै।

मनोज कुमार स्वामी नै पद्मश्री कन्हैयालाल सेठिया पुरस्कार

राजस्थानी भासा री मान्यता, प्रचार-प्रसार अर संवर्द्धन सारू उल्लेखजोग काम करण सारू राजस्थानी रा ऊरमावान रचनाकार अर सूरतगढ़ टाइम्स रा संपादक मनोज कुमार स्वामी नै बरस 2014 रौ 'पद्मश्री कन्हैयालाल सेठिया पुरस्कार' घोसित करीज्यौ है। औ पुरस्कार राजस्थान अेसोसियेशन ऑफ नार्थ अमरीका-कनाडा (राना) कांनी सूं दिरीजै। श्री स्वामी अखिल भारतीय राजस्थानी भासा मान्यता संघर्स समिति रा प्रदेस मंत्री है अर लारला 22 बरसां सूं राजस्थानी भासा री मान्यता सारू आंदोलणरत है। आप पत्रकार अर संपादक रै साथै-साथै राजस्थानी रा चावा-ठावा युवा साहित्यकार पण है। राजस्थानी में आपरी 'रिचार्ज' (नाटक), 'इमदाद' अर 'काचौ सूत' (कहाणी-संग्रै) अर 'बेटी' (काव्य-संग्रै) आद पोथ्यां छप चुकी है।

डॉ. चारण री सेवानिवृत्ति रै टाणै समारोह

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर रै राजस्थानी विभाग रा अध्यक्ष डॉ. अर्जुनदेव चारण री सेवानिवृत्ति रै टाणै 30 मई 2014 नै विदाई समारोह मनाईज्यौ। समारोह रा खास पांवणा सिंडिकेट सदस्य डॉ. डी.अेस. खींची हा। बां डॉ. चारण रै राजस्थानी सेवा-कारज नै युवा-वरग सारू प्रेरणास्रोत बतायौ। समारोह मांय कुलसचिव जी.अेस. चारण, कला संकाय रा डीन प्रो. अेस.पी.व्यास, प्रो. नरेन्द्र अवस्थी, डॉ. सोहनदान चारण, डॉ. नंदलाल कल्ला, डॉ. गुलाबसिंह चौहान ई आपरा विचार राखतां थकां डॉ. अर्जुनदेव चारण री सादगी अर साहित्य-सिरजण री सरावणा करी। राजस्थानी विभाग री डॉ. मीनाक्षी बोराणा अर डॉ. धनंजय अमरावत अतिथियां रौ सुआगत करयौ। अभिनंदन-पत्र रौ वाचन राजस्थानी व्याख्याता डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित करियौ। संचालन चूरू रा सोधार्थी दुलाराम सहारण करयो।

डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित राजस्थानी विभाग रा अध्यक्ष

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर रै राजस्थानी विभाग रै नुवैं अध्यक्ष रौ दायित्व डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित संभाळ्यौ। डॉ. राजपुरोहित लारलै 12 बरसां सूं राजस्थानी विभाग में अतिथि व्याख्याता रै रूप में सेवारत हा। इण मौकै विभाग में अेक समारोह राखीज्यौ। इणमें डॉ. सुखदेव राव, डॉ. भवानीसिंह पातावत, डॉ. अशोक गहलोत, डॉ. रंजीत चौहान, गौरीशंकर कुलचंद्र, प्रशांतसिंह राठौड़, डॉ. मदन बोराणा, हाकम अली, भैरूंसिंह भाटी, कप्तान बोरावड़, इन्द्रदान चारण, सर्वेश चारण, जितेन्द्रसिंह साठीका, शंकरलाल प्रजापत, समेरसिंह शेखावत आद उपस्थित हा। डॉ. राजपुरोहित भरोसौ दिरायौ कै विभाग राजस्थानी भासा, साहित्य अर संस्कृति सारू नुवां कारज करसी, जिणसूं सोधार्थियां सारू सोध रा नुंवा मारग खुलैला।

❖❖

●*आपरा कागदां सूं*

बालमुकुंद शर्मा किशनगढ़

'अपरंच' रौ पूर्णांक 16 मिलग्यौ। खूब सुंदर अंक है। संपादकीय सूं लेय'र राजेश जोशी री लंबी हिंदी कविता 'समरगाथा' तांई सगळी सामग्री स्तरीय है। 'पंचामरत' में आप राजस्थानी रा जिका कवियां नै लेय रैया हौ, वांरै पाण आधुनिक राजस्थानी कविता री नींव थरपीजी है अर औ खासौ महताऊ काम है। काव्य-गोस्ठी अर अेकल काव्यपाठ रै कवियां नै बधाई। मदन गोपाल लढ़ा री कहाणी ई बखाणजोग। अेकर फेरूं राजेश नै समरगाथा रै सिरजण अर पारसजी रै सुंदर उल्थै सारू घणी-घणी बधाइयां।

डॉ. गोवर्धन शर्मा गांधीनगर

'अपरंच' का एक अंक भेंट मिला। देखकर मन प्रसन्न हुआ। आप पत्रिका के उच्च स्तर को निभा रहे हैं, बधाई। कहानी, कविता, लेख, लघुकथा सभी विधाएं पढ़ने को मिली- बधाई। राजस्थानी भाषा की सेवा के आपके इस प्रयास को नमन।

स्वामी खुशालनाथ 'धीर' बाड़मेर

बाड़मेर में 8 जून 2013 नै राजस्थानी भासा री मान्यता सारू व्हैय जळसै मांय आपसूं मुलाकात व्ही। आप 'अपरंच' री प्रतियां दीवी, जोरदार काम। 'अपरंच' लगोलग इणी भांत राती-माती अर सांतरी व्है, पारसजी नै बैगौ स्वास्थ्य-लाभ मिळै, जै राजस्थानी।

दीपचंद सुथार मेड़ता शहर

आदरजोग, साहित्य री सगळी विधावां नै आपरै सांतरै, सांवठै अर ओपतै कलेवर मांय समेट'र 'अपरंच' पत्रिका पाठकां नै प्रभावित कर रैयी है। आ कला, कुसल संपादक रै कौसल रौ कमाल है, बधाई देवां तौ कोरी औपचारिकता व्हैला। मूळ बात आ है कै आप मायड़ भासा रै विगसाव, प्रचार-प्रसार अर नुवां लिखारां मांय उछाव रौ संचार कर रैया हौ, हिम्मत भरयौ अर सरावणजोग काम है।

बिहारीशरण पारीक जयपुर

अनुग्रहपूर्वक भेजी अपरंच की प्रतियां मिली, संपादन भौत चोखौ हौ रैयौ है और साहित्यकारां-लिखारां को आपसे आछौ संपर्क बण्योड़ौ है। श्रेष्ठ रचनावां छाप रैया हौ, बधाई। आपनै औ सुभीतौ है कै पारसजी रूपी युनिवर्सिटी घर मांय है। खूब ग्यान प्राप्त करौ अर इणसूं भी सांतरौ काम करौ।